सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2011 ★ वैशाख, 2068

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।
भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ
महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये
वेडिंग
ज्वेलरी कलेक्शन
अॅन्टीक
ज्वेलरी कलेक्शन
डायमंड
ज्वेलरी कलेक्शन
सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न
फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
शुद्ध चांदी के बरतन
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520
सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644
Visit us at : rcbafnajewellers.com
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।
ग्राहक सेवेची पंचसुत्री
१ | प्रामाणिकता
२ | वाजिबता
३ | विविधता
४ | हजर स्टॉक
५ | सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

संति एगेहिं भिक्खूहिं,
गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थे हि य सव्वेसिं,
साहवो संजमुत्तरा॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.20

होते कई गृहस्थ श्रमण से,
बढ़कर धर्मविरतिधारी।
पर सभी गृहस्थों से बढ़कर,
होते मुनिगण संयमधारी॥

मई, 2011
वीर निर्वाण संवत्, 2537
वैशाख, 2068

वर्ष 68 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	सद्गुणों की पूजा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	जागें और जगाएं सबको	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	चलें अनन्त की ओर	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.	16
	शांति का स्रोत है असंगता	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.	26
वैज्ञानिक-लेख-	ब्रह्माण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप (2)	-डॉ. जीवराज जैन	31
शोधालेख-	साध्वी जडावजी की काव्य रचनाओं में निहित मूल्यबोध	-डॉ. इन्द्रा जैन	44
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Jaina Doctrine of Non-Violence	*-Dr. Kokila H. Shah*	48
जीवन-व्यवहार-	Why Fasting is essential	*-Shri Sajjanraj Mehta*	54
अध्यात्म -	दुःख : जीवन का सच्चा साथी	-श्री के.एस. गलुण्डिया	55
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (65)	-श्री धर्मचन्द जैन	59
	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (11)	-संकलित	62
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है (3)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	64
युवा-स्तम्भ -	युवा पीढ़ी को आचार्य हस्ती की प्रेरणा	-डॉ. दिलीप धींग	72
नारी-स्तम्भ -	दाम्पत्य जीवन की सफलता	-आभा जैन	78
स्वास्थ्य-स्तम्भ-	स्वास्थ्य और सामायिक (2)	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	82
बाल-स्तम्भ -	सम्यक्त्व का प्रभाव	-आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज	87
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (14)	-संकलित	92
विचार -	विनय और अहंकार	-श्री नितेश नागोता 'जैन'	30
	Devotion	*-Shri Harish Kavad*	68
कविता/गीत-	हस्ती की शिष्या मैनासुन्दरी	-श्री धर्मचन्द जैन	37
	सुनो कहानी गुरु हस्ती की	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	38
	दीक्षा की शुभ घड़ियाँ	-श्री धीरज डोसी	43
	संकल्प	-डॉ. रमेश मयंक	53
	मेरे आराध्य	-श्री भीकमचन्द गोलेच्छा	61
	गुरु हस्ती शतक (3)	-श्री प्रसन्नचन्द बाफना	69
	दीक्षा : मुक्ति का द्वार	-श्री मगनचन्द जैन	71
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		95
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		99
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		119

सम्पादकीय

सद्गुणों की पूजा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

देवी-देवता की पूजा, व्यक्ति की पूजा अथवा मूर्ति की पूजा करना जितना सरल है उतना सद्गुणों की पूजा करना नहीं। सद्गुणों की पूजा करना इसलिए भी कठिन है क्योंकि वे अमूर्त हैं। वे किसी व्यक्ति, भगवान्, संत या महापुरुष में रहते हैं। साधारण वेशधारी व्यक्ति में भी वे सद्गुण रह सकते हैं। इन सद्गुणों के कारण व्यक्ति भी पूज्य होता है, किन्तु उससे व्यक्ति का नहीं सद्गुणों का ही महत्त्व स्थापित होना चाहिए। भावनाशील जन-समुदाय सद्गुणों की अपेक्षा चमत्कारों एवं लौकिक हितों को अधिक महत्त्व देता है। वह किसी परम शक्ति अथवा प्रभावशाली महापुरुष से ऐसे प्रसाद की कामना करता है जो उसके जीवन में उत्पन्न समस्याओं का निराकरण कर दे तथा भौतिक रूप से खुशहाली का वरदान दे दे। ऐसे विरले ही भक्त एवं उपासक होते हैं जो पूज्यों की पूजा सद्गुणों की प्राप्ति के लिए करते हैं।

सद्गुण मनुष्य की बहुत बड़ी सम्पत्ति है, जिसे न कोई चुरा सकता है और न ही कोई नष्ट कर सकता है। उसे बढ़ाना या घटाना स्वयं के हाथ में है। सद्गुणों को घटाना जितना आसान है उतना उन्हें बढ़ाना नहीं। सद्गुणों की अभिवृद्धि के लिए ही संतों एवं महापुरुषों के सान्निध्य की सार्थकता होती है। मनुष्य में जितने सद्गुण बढ़ते हैं उतना ही उसका जीवन उन्नत बनता है। वह स्वयं के लिए एवं दूसरों के लिए सच्चे अर्थों में उपयोगी होता है।

सद्गुणों का आधान या उनकी अभिवृद्धि तभी सम्भव है जब हमारी अन्तर्दृष्टि में सद्गुणों का मूल्य स्थापित हो। दृष्टि में यदि मूल्य अभिमान-पोषण का हो, परिग्रह-अभिवृद्धि का हो, आडम्बर एवं प्रदर्शन का हो, पुद्गलों के संग्रह का हो, इन्द्रिय-जन्य सुख-भोग का हो, बिना श्रम के मिलने वाले धन का हो तो सद्गुणों का आधान नहीं हो सकता। इसके साथ ही ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह आदि दोषों में कमी करने की यदि दृष्टि नहीं बनी है तो भी सद्गुण अपने भीतर पल्लवित नहीं हो सकते। जो दूसरों को अपने से अधिक दोषी मानकर संतोष करता रहता है वह अपने दोषों का ही पोषण करता है।

हम सद्गुण किसे कहें? जो आत्म-गुण व्यक्ति को विभाव से स्वभाव की ओर ले जाने में सहायक हैं वे सभी सद्गुण हैं। जो अशान्ति से शान्ति की ओर, विषमता से समता की ओर, राग-द्वेष से वीतरागता की ओर, इन्द्रिय-जन्य सुख से प्रशम सुख की ओर अथवा अव्याबाध सुख की ओर ले जाने वाले गुण हैं वे सभी सद्गुण हैं। हमारी प्रज्ञा, हमारी सम्यग्दृष्टि, हमारा चारित्र सद्गुणों के स्वरूप हैं। हमारी दृष्टि जितनी निर्मल होगी, उतनी ही प्रज्ञा पुष्ट होगी एवं आचरण भी तदनुसार संयममय होगा। क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि धर्म के दस प्रकार के सद्गुण हैं। अहिंसा, संयम और तप सद्गुण हैं। ज्ञान, दर्शन और चारित्र सद्गुण हैं। इन सद्गुणों को किसी दूसरे पर थोपा नहीं जा सकता, केवल इनका महत्त्व बताकर व्यक्ति को प्रेरित किया जा सकता है। इनकी प्राप्ति के लिए भावों की निर्मलता आवश्यक है और ये जितने-जितने पुष्ट होंगे, भावों की निर्मलता उतनी-उतनी बढ़ती जाएगी।

भीतर में सद्गुण जितने सुदृढ़ होंगे, उतना ही आचरण निर्मल होगा। फिर बेईमानी का प्रसंग आने पर भी बेईमानी करने का मन नहीं करेगा। भ्रष्टाचार का प्रसंग आने पर भी भ्रष्टाचार नहीं हो सकेगा। लोभ और लालच का प्रसंग आने पर भी मनुष्य अपने सदाचरण से नहीं डिगेगा। विषयों के सेवन के विपुल अवसर आने पर भी उनमें नहीं फंसेगा। धर्म को दिखावे के लिए नहीं, अपितु निज विकास के लिए आवश्यक समझेगा। व्रतों को विवशता से नहीं स्वेच्छा से स्वीकार करेगा। धर्म-साधना आत्म-कल्याण के लिए है, लोक दिखावे के लिए नहीं, किन्तु आज इसमें भी सामाजिकता ने प्रवेश पा लिया है। सामाजिक व्यवहार निभाने के लिए लोग संतों की सेवा में उपस्थित होते हैं एवं यदा-कदा धर्म-आराधना कर लेते हैं। नया व्यक्ति कदाचित् इस बहाने भी सद्गुणों से आकृष्ट हो सकता है एवं जीवन को विकास के मार्ग पर ले जाने के लिए सन्नद्ध हो सकता है। किन्तु चिकने घड़े की भाँति अनेक व्यक्ति स्वयं को उपदेश प्रूफ बना कर रखते हैं। उन पर उपदेश का कोई प्रभाव नहीं होता। धर्माराधन के लिए अन्तःप्रेरणा जागनी चाहिए। उपदेश भी तभी सार्थक होते हैं। चतुर्विध संघ की स्थापना भी इसी के लिए हुई है। संघ में रहकर बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ईमानदारी, नैतिकता, प्रामाणिकता, निर्लोभता, सदाशयता आदि गुण संघ-सदस्यों के सम्पर्क से सहज ही व्यक्ति में स्थान पा सकते हैं और इस तरह शनैः शनैः जीवन का निर्माण हो सकता है।

सद्गुणों का सीधा सम्बन्ध चेतना के विकास से है। गुणस्थानों का आरोहण उसी से सम्भव होता है। धर्मक्षेत्र में जब आडम्बर, प्रदर्शन, मूर्ति, व्यक्ति

आदि की महिमा गाई जाती है एवं गुणों को गौण कर दिया जाता है तब धर्मक्षेत्र भी दूषित हो जाता है। भावों की साधना के लिए द्रव्य-क्रिया भी साधन मानी गई है। इसीलिए धर्माराधना में द्रव्य-क्रिया को महत्त्व दिया गया है। किन्तु वह भाव विशुद्धता में सहायक होनी चाहिए। औपचारिक धर्मक्रिया व्यक्ति के चारित्रिक विकास में अथवा सद्गुणों के विकास में तब तक सहायक नहीं होती जब तक उस धर्मक्रिया का महत्त्व भावों के साथ नहीं जुड़ता। इसलिए आगम में कहा है जो भी क्रिया करो, जागरूकता पूर्वक अप्रमत्त भाव से करो। हम क्रिया करते हैं, किन्तु जागरूक नहीं रहते। स्वाध्याय करते हैं और ध्यान कहीं ओर जगह रहता है। प्रवचन सुनते हैं और मन कहीं अन्यत्र भटकता है। जो भी क्रिया करें मन उसके साथ योजित होना चाहिए अथवा जागरूक होना चाहिए।

आज संस्कारों की बात की जाती है, किन्तु संस्कारों के साथ सद्गुणों का अनिवार्य सम्बन्ध है। बाहरी आचरण में मधुरता ठगों में भी देखी जाती है, किन्तु वे सद्गुण सम्पन्न नहीं होते, उनकी दृष्टि में खोट होती है। वस्तुतः माता-पिता भी बालकों को ऐसे संस्कार नहीं देना चाहते जिनसे वे संसार की दौड़ में पीछे रह जाएं। वे एक अच्छे इन्सान का निर्माण करने की अपेक्षा कमाऊ मशीन के निर्माण को अधिक महत्त्व देते हैं। वे सन्तान को संतोषी नहीं परिग्रही देखना चाहते हैं। वस्तुतः किसी का अच्छा होना स्वयं के लिए हितकर है और दूसरों के लिए उससे कोई हानि नहीं होती। साधु-संत कहते हैं- "आप लोग संयम का मार्ग क्यों नहीं चुनते ?" इसका कोई उत्तर नहीं देता है, किन्तु भीतर में सब जानते हैं कि वह मार्ग उनको अभीष्ट नहीं है अथवा वे संयम मार्ग की कठिनाइयों से डरते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो भावों की शुद्धता को अधिक महत्त्वपूर्ण कहकर साधुवेश को आवश्यक नहीं मानते। साधु वेश धारण करने का अर्थ है साधना का दृढ़ संकल्प, ममता और अहंता का त्याग, राग और द्वेष के भावों पर निगरानी, प्रमाद और कलुषता से किनारा। भावों की उच्चता वाले साधकों को देखकर कुछ के अन्तःकरण में संवेग जागता है। इसमें साधकों की साधना एवं भवियों की भावना दोनों का योगदान है।

इस संसार में न जाने कितनी घटनाएँ ऐसी घटित होती रहती हैं, जो मनुष्य को संसार से विरक्त बनाती हैं, किन्तु हम ढीठ बनकर मोह और अज्ञान के कारण उस सत्य को अपने अन्तःकरण से स्वीकार नहीं करते। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज के अनुसार- "व्यक्ति समझता है कि प्रवचन में संत व्रत-प्रत्याख्यान की अथवा धर्माराधन की जो प्रेरणा करते हैं वह किसी अन्य के लिए है, मेरे लिए नहीं। अपरिग्रह की बात हो तो वह समझता है कि यह धनिकों के लिए है मेरे पास तो वैसे

ही धन अधिक नहीं है। व्रतों की आराधना के पात्र दूसरे हैं, मुझे क्या करना है। कषाय छोड़ने की बात करें तो समझता है- मुझमें कहाँ अहंकार है, कहाँ लोभ है, कहाँ क्रोध एवं माया है; जो अधिक कषायी हैं, वे कषाय को छोड़ें। व्यक्ति अपने को सुधारना नहीं चाहता है, यह विडम्बना है।'' इस प्रकार जीवन की अच्छाई को भी व्यक्ति दूसरों के लिए उपयोगी समझकर स्वयं रीता रह जाता है। लोभ-लालच की बात होगी, निन्दा-प्रशंसा की बात होगी, मान-सम्मान की बात होगी, पद-प्रतिष्ठा की बात होगी तो उसमें वह गहरी रुचि दिखाता है। उसमें दूसरों से आगे बढ़ना चाहता है।

भगवान् की पूजा हो या देवी-देवताओं की, संतों की पूजा हो या महापुरुषों की, माता-पिता की पूजा हो या पितरों की- सबसे महत्त्वपूर्ण है सद्गुणों की पूजा। सद्गुणों की पूजा करने से सद्गुण अपने में प्रविष्ट हो सकते हैं। यह ही सद्गुणों या सद्गुणियों की पूजा का लाभ है। बाहरी भय एवं आशंकाएँ सद्गुणों के स्थान पा लेने से स्वतः निराकृत हो जाती हैं।

महापुरुषों में जो शक्ति होती है वह सद्गुणों की होती है। न उनके पास धन की शक्ति होती है और न अस्त्र-शस्त्र की, न सत्ता की शक्ति होती है और न शोषण की। वे निर्मल प्रज्ञा, दृढ़ संकल्प, हितबुद्धि और सदाचरण के माध्यम से पूज्य बन जाते हैं। तीर्थंकरों में चार अतिशय होते हैं- ज्ञानातिशय, वचनातिशय, अपायापगमातिशय और पूजातिशय। प्रज्ञा या ज्ञान में उनसे बढ़कर कोई नहीं, उनके वचन अबाधित होते हैं, समस्त दोषों से वे रहित होते हैं तथा देवों के भी वे पूज्य होते हैं। ये चारों अतिशय सद्गुणों के कारण हैं। आम लोग चमत्कारों से चमत्कृत होते हैं और अनुयायी बन जाते हैं। अपने दोषों को छोड़ना नहीं चाहते, बाह्य अभाव की पूर्ति को ही वरीयता देकर संत-महात्माओं की सेवा में उपस्थित होते हैं। सद्बुद्धि सबके लिए आवश्यक है और वह सद्गुणी संत-महात्माओं से प्राप्त हो सकती है। वासक्षेप, चरण-रज, कृपा दृष्टि से हम लौकिक कामनाओं की पूर्ति कर प्रसन्न भले ही हो लें, किन्तु हमारा असली भला तो तभी सम्भव है जब हम उनके सान्निध्य में बैठकर सद्गुणों की अभिवृद्धि का प्रसाद और दोषों को छोड़ने की शक्ति ग्रहण करें। दोषों का छूटना और सद्गुणों का आना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोष छोड़ेंगे तो गुण स्वतः आ जायेंगे और गुण ग्रहण करेंगे तो दोष निर्बल हो जायेंगे। इसलिए सद्गुणों की पूजा ही अधिक महत्त्व रखती है। बाहरी चौंतरे, पगलिए, मूर्ति आदि की पूजा मात्र से वास्तविक भला होने वाला नहीं है।

✸

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

शिक्षा प्राप्ति के आठ साधक कारण

अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलेत्ति वुच्चइ।
अहस्सिरे सया दंते, न य मम्ममुदाहरे।।
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलेत्ति वुच्चइ।।

अर्थः-

आठ गुणों से युक्त मनुज, शिक्षा का होता अधिकारी।
ना हास्यशील और दान्त सदा, ना मर्म प्रकाशे दुःखकारी।।
चारित्रहीन ना विकृतशील, अतिशय रस-लोलुप हो न कभी।
क्रोध करे ना सत्यव्रती, शिक्षाभागी नर होत तभी।।

अविनीत के चौदह लक्षण

अह चउद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छइ।।
अभिक्खणं कोही हवइ, पबंधं च पकुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धूण मज्जइ।।
अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पइ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावगं।।
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चइ।।

अर्थः-

चौदह स्थानों में वर्त्तमान मुनि, विनयहीन है कहलाता।
अपने ही दोषों के कारण, वह मुक्त नहीं है हो पाता।।
करता जो बार-बार क्रोध, या क्रोध टिका कर रखता है।
ठुकराता प्रेमी की मैत्री, श्रुत पाकर जो मद करता है।।
अपमान करे जो परत्रुटि पर, जो मित्रों पर भी क्रोध करे।
प्रिय मित्रजनों का भी जग में, एकान्त पाप का कथन करे।।
जो असम्बद्ध भाषी द्रोही, दर्पी लोभी मन-अनुगामी।
संभागरहित अप्रीतिपात्र, अविनीत न होता शुभकामी।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, ग्यारहवाँ अध्ययन, गाथा 4 से 9

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

स्वाध्याय

- देश एवं समाज के सामने दृढ़ता से खड़ा होना है, तो स्वाध्याय के संस्कार घर-घर में प्रारम्भ कीजिए। अपने बच्चों में स्वाध्याय के संस्कार डालिये। स्वाध्याय में आप भी प्रवृत्त होइए। स्वाध्याय साधु एवं श्रावक का सामान्य धर्म है। सामायिक, उपवास, यम, नियम आदि विशेष धर्म हैं, पर स्वाध्याय सामान्य धर्म है। जैसे बिना छाना पानी नहीं पीना, जाप करना आदि समाज-धर्म है। अगर साधु-साध्वी विराजते हैं, तो गुरु-दर्शन प्रतिदिन करना समाज धर्म है। इन्हें जैसे आपने समाज-धर्म मान रखा है, उसी तरह स्वाध्याय को भी समाज-धर्म का रूप दें। बच्चे-बूढ़े, युवक-युवतियाँ, बालक-बालिकाएँ, सभी नित्य-नियम के तौर पर इस स्वाध्याय को स्वीकार करें।
- आप लोग स्वाध्याय के अन्तरंग और बहिरंग इन दोनों लक्ष्यों को लेकर चलें। अन्तरंग लक्ष्य स्वाध्याय का यह है कि जीवन को दूषित करने वाले मिथ्या तत्त्वों से, आत्मा को कलुषित करने वाले सभी प्रकार के कार्यों एवं विचारों से अपने आपको दूर रखना तथा अन्तर्मन को शुद्ध चिन्तन, शुभ एवं परम कल्याणकारी कार्यों में निरत रखना। इस आन्तरिक लक्ष्य में प्रतिपल सजग रहने की आवश्यकता है। स्वाध्याय का बहिरंग लक्ष्य है समाज-निर्माण, समाज-सेवा और शासन-सेवा का कार्य। इस प्रकार स्वाध्याय के दो लक्ष्य हुए-अन्तरंग लक्ष्य और बहिरंग लक्ष्य। मोटे रूप में स्वाध्याय का तीसरा लक्ष्य बताया गया है कि समाज के हजारों बंधु पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में धर्माराधन से वंचित रहते हैं, उनके वहाँ पर्वाराधन के दिनों में स्वाध्यायी बंधुओं को भेजकर उन्हें धर्माराधन करवाना।
- हमारे गाँव तो हजारों हैं, समाज के सदस्यों की संख्या लाखों हैं, पर साधु-साध्वियों की संख्या इनी-गिनी रह गयी है। उन इने-गिनों में भी, जो समाज को अपनी ओर खींच सकें, ऐसे साधु-साध्वी अंगुलियों के पोर पर गिनने योग्य रह गये हैं। तो फिर भगवान महावीर के शासन के अस्तित्व को किस प्रकार सुदृढ़ और सशक्त रखना, यह आवश्यकता हो गई। इस आवश्यकता के बढ़ते रूप में मन को चिन्तन करने का अवसर आया कि यदि जल्दी ही इसका उपाय नहीं किया गया तो समाज का रक्षण नहीं हो सकेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

जागें और जगाएं सबको

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनाँक 23 एवं 24 अप्रेल, 2011 को सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचनों का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। उन्हें यहां संयुक्त रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।-सम्पादक

अनन्त ज्ञानी, अनन्त दर्शनी अरिहन्त भगवन्तों एवं साधना में रमण करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

शास्त्र के सन्देशों में, वीतराग वाणी के आधार से सर्व प्रथम अपने-आपको जगाने की बात कही जाती है। शास्त्र-स्वाध्याय के समय ज्ञान की बात चलती है तब भी यह कहा जाता है- पहले स्वमत का ज्ञान करें, फिर परमत का ज्ञान करें। दया की बात जब चलती है तो पहले स्व की दया एवं फिर पर-दया की बात कही जाती है। शास्त्र-वाणी में अनमोल सूत्र हैं। जब भी जागरण की बात आती है तो कहा जाता है, पहले खुद को जगाना है, फिर दूसरों की नींद उड़ाना है। दूसरों को छोड़ा नहीं जा रहा है, पर अपने को टाला नहीं जा रहा। आज अधिकतम कार्यक्रम दूसरों के लिए चल रहे हैं। अमुक जगह प्रार्थना होती है या नहीं? प्रार्थना होती है तो यह देखा जाता है कि कितने लोग आए वहाँ अपनी गणना नहीं, गणना दूसरों की है। चाहे प्रवचन हो, प्रतिक्रमण हो, सामायिक हो, साधना हो, स्वाध्याय हो या आचरण की बात हो कहाँ कितने लोग हैं यह देखा जाता है। कहते हैं तो भी दूसरों को कहा है- आप पधारो। आप सत्संग सेवा, संत-समागम में आयेंगे तो लीला-लहर हो जायेगी। आप आओ, आप करो कहने वाले अनेक मिल जायेंगे, पर मैं करूँगा, मुझे करना है कहने वाले और करने वाले कितने हैं? आपके यहाँ पाठशाला चलती है वह पाठशाला किनके लिए? आपके यहाँ शिक्षण बोर्ड है वह बोर्ड किनके लिए? आप बोर्ड का रेकार्ड उठाकर देख लीजिये आपके सदस्य कितने और अन्य कितने? जरूरत है- सबसे पहले अपने-आपको देखें। आपको सुयोग प्राप्त हुआ है उसका उपयोग पहले आप स्वयं करें, फिर दूसरों को कहें।

अभी तत्त्व चिन्तक प्रमोदमुनि जी महाराज चिन्तन के कई सूत्र रख गये। आप स्वयं की क्या तैयारी है, इस पर हर व्यक्ति को सोचना है। ऐसा संयोग पाकर मैं अपने कर्मों की निर्जरा करने में आगे बढूँ। वह चाहे ज्ञान की बात हो, चाहे दर्शन की, चाहे व्रत-नियम की बात हो, चाहे आचरण की, दूसरों के नाम लिखने के पहले अपना खुद का नाम लिखें। यह सोंचें कि मैं दूसरों के नाम तो लिख रहा हूँ कहीं मेरा नाम रह न जाय।

इस जीव ने पहली बार मानव जीवन पाया है, ऐसी बात नहीं। यह संयोग पहली बार मिला, ऐसा भी नहीं। आपको पहले भी इससे उत्तम संयोग मिले हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त (श्रद्धेय श्री हस्तीमल जी महाराज) जैसे महान् साधकों का सुयोग आपको मिला। आपको क्या, कइयों को उस महापुरुष की चरण सन्निधि मिली, लेकिन उसका आपने उपयोग किया होता तो यहाँ बैठते (पाट पर होते), सामने बैठने की जरूरत नहीं पड़ती। जो गया, चला गया। 'जागे जब ही सवेरा' यह कहावत आप-सबको ज्ञात है। क्योंकि आप सूर्यनगरी के सुज्ञजन हैं। आपके यहाँ तो प्रतिदिन सूर्य-उदय होता है, शायद अपने क्षेत्र में सूर्योदय होगा, इस बात को लेकर कइयों के मन में विचार चल रहा होगा, पर आप यदि अपने-आपको जगा लें तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र का सूर्य उदय हो सकता है। मैं यहाँ कुछ नाम लेकर कथन करूँ- जयपुर वाले जब भी विनति करते हैं तो कहते हैं- बाबजी! आपका जयपुर का चातुर्मास जयपुर का नहीं, पूरे प्रदेश का चातुर्मास होगा। क्यों? क्योंकि जयपुर राजधानी है। दिल्ली वाले आते हैं तो कहते हैं- आपका चातुर्मास दिल्ली का नहीं, पूरे राष्ट्र का चातुर्मास होगा। आप क्या कहते हैं? आप अपना चिन्तन करना। क्या! जोधपुर का चातुर्मास पूरे महानगर का नहीं? मैं अच्चम्भा कर रहा हूँ। यहाँ का एक आदमी दिल्ली में नौकरी करता है तो क्या अपने-आपको जोधपुर का नहीं समझता है? ऑल इण्डिया का कोई काम करता है तो क्या वह जोधपुर का नहीं? काम की जब भी बात आती है तो कुछ है जो कह सकते हैं कि यह तो लोकल संघ का काम है। लोकल संघ हो या ऑल इंडिया अथवा दूसरी-दूसरी संस्थाएं, यह तो व्यवस्था है। जोधपुर बड़ा नगर है। नगर ही नहीं, महानगर है। जोधपुर जैसे महानगर का चातुर्मास किसी एक क्षेत्र में होगा, हर जगह चातुर्मास की संभावना नहीं। क्षेत्र चाहे जो हो, चातुर्मास जोधपुर का है तो काम किसका? काम कौन करे? किसका किसमें नाम हों?

आप चाहे जिस क्षेत्र के हैं आप–सब में ज्ञान की, दर्शन की, चारित्र की, तप की सामर्थ्य है। सामर्थ्य होते नहीं करना माया है– 'सर्वत्र स्ववीर्य निगूहनं माया'। व्याख्यान देने वाला यदि कहे मैं व्याख्यान देता हूँ, गोचरी लाना मेरा काम नहीं। सेवा करने वाला कहे कि मुझे सेवा आती है, दूसरा काम मेरा नहीं। मैं कल कह गया, आज फिर कह रहा हूँ बड़े नगर में हर साल, हर महीने कोई न कोई चारित्र अंगीकार करने वाला निकल सकता है, पर आज क्यों नहीं हो रहा? एक कारण अभी प्रमोदमुनि जी कह गये। माँ–बाप का काम क्या? बच्चे को मौजे पहनाना, पेंट पहनाना, खिलाना–पिलाना, तैयार करके स्कूल पहुँचाना। बस, क्या यही माँ–बाप का काम रह गया है? कितने माँ–बाप हैं जो अपने बच्चों को लेकर बैठते हैं, उन्हें नमस्कार महामंत्र, सामायिक, प्रतिक्रमण सिखाते हैं? कितने लोग हैं जो अपने बच्चों को संतों की सेवा में लाते हैं? आप नारा तो लगाते हैं– गुरु हस्ती के दो फरमान– सामायिक स्वाध्याय महान्। ये नारे किसके लिए? आप अपना चिन्तन करना। मैंने तो आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) से सुना है– जो बच्चों में संस्कार देता है, संस्कारों का रक्षण करता है वह पिता है। आज क्या हो रहा है? कई माँ–बाप हैं जो बच्चों के लिए पांच–दस मिनट निकालें, इसकी उन्हें फुर्सत नहीं। बच्चों को पूछना, संभालना उन्हें संस्कार देना किनकी जिम्मेदारी है ?

आपमें उमंग है, उत्साह है। आप जिस भावना से महाराज को लेकर आए हैं उसका तदनुसार कर्त्तव्य अदा करें। आप सोंचे– मैं क्या कर सकता हूँ, कर्त्तव्य–निर्वहन में आगे बढ़ने की भावना आ जायेगी तो फिर यह कहने और सोचने की बात नहीं रहेगी कि महाराज को पाली याद आ गई, जोधपुर में ऐसी क्या कमी देखी जो जोधपुर के बजाय पाली चातुर्मास किया। भाई! आप प्राप्त अवसर का उपयोग करें, मैं ब्याज सहित कर्जा चुकाने को आ गया हूँ। मैं चार महीने के लिए ही नहीं, करीब सात महीने के लिए आ गया हूँ। आप उत्साह, उमंग, कर्त्तव्यशीलता जगाकर सही मायने में कुछ करेंगे तो आपको पछतावा नहीं रहेगा। होली नहीं आया, दीवाली नहीं आया, आगे बोलूँ......। आधी खीचड़ी, आधा घी, घोलने पी।

आप अपना पुरुषार्थ जगाइये, निष्ठा बढ़ाइये, पराक्रम फोड़िए। जिसको जितना लाभ लेना है, खुद लाभ लें तथा हमें भी ज्ञान–दर्शन–चारित्र में आगे बढ़ने

में सहयोग करें । आप स्वयं करें तथा परिवार में, अड़ौस-पड़ौस में प्रेरणा करें। आप कर्त्तव्यनिष्ठ बनकर काम करेंगे तो मेरा खयाल है सारी भरपाई हो सकती है। जरूरत है जगने की, जरूरत है करने की।

पुण्यशाली सूर्यनगरी-जोधपुर को अनेकानेक पुण्यात्माओं की, आचार्यों व संतों की सेवा-भक्ति का सौभाग्य मिला। परम्परा के मूल पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी महाराज, आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज, क्रियोद्धारक श्री रत्नचन्द्र जी महाराज से लेकर प्रतिपल स्मरणीय पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज तक अनेकानेक महापुरुषों में किसी की यह जन्म-स्थली रही, किसी की दीक्षा-स्थली, कई आचार्यों को यहाँ आचार्य पद की चादर ओढ़ाई गई, कइयों ने यहाँ साधना का उत्कर्ष समाधि-मरण प्राप्त किया। साधक आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने साधना के माध्यम से सिंहपोल जैसे क्षेत्र का उद्धार किया। उस महापुरुष का सूर्यनगरी में निरन्तर आवागमन बना रहा। ऐसी सौभाग्यशाली नगरी को आज प्रेरणा देने की बात कही जा रही है। यह ऐसा ही है जैसे माँ को मामा का परिचय कराया जा रहा है।

यहाँ के गुरुभक्तों में वे चाहे मोदी परिवार से रहे हों, लोढ़ा परिवार से रहे हों, कुम्भट परिवार से रहे हों। ऐसे कई-कई परिवार हैं, सबके नाम न तो लिए जा सकते हैं और न गिनाये जा सकते हैं, पर जोधपुर के कई श्रावकों को घर का जितना खयाल नहीं था, उससे ज्यादा संघ का खयाल था, कह दूं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। वे चाहे विजयमल जी कुम्भट हों, न्यायमूर्ति इन्दरनाथ जी मोदी हों, न्यायमूर्ति सोहननाथ जी मोदी हों, कवि दौलतरूपचन्द जी भंडारी हों, पडिमाधारी श्रावक किरतमल जी मूथा हों, उन्होंने संघ-सेवा में कैसा समर्पण रखा कहने की जरूरत नहीं। किरतमलजी मूथा जैसे एक व्यक्ति आचार्य श्री विनयचन्द जी महाराज के श्री चरणों में विनति रखकर चौमासा ले आए। हमारा गौरवशाली आदर्श रहा है, जरूरत है हम अपने-आपको देखें। यह नगर एक समय जोधाणे की ढ़ाणी था, फिर जोधपुर नगर बना और अब महानगर कहला रहा है। नगर महानगर में परिवर्तित हो गया। नगर से महानगर तो जोधपुर बन गया, लेकिन यहाँ के रहने वालों के दिल कितने बड़े हुए आप स्वयं चिन्तन करें।

जरूरत है एक-दूसरा एक-दूसरे को जोड़े। हम किसको किस काम में जोड़ सकते हैं, यह चिन्तन करें। जोधपुर में बहुत-से रत्न हैं। क्षमता भी यहाँ बहुत है।

ज्ञान की दृष्टि से कहूँ, अनुभव की दृष्टि से कहूँ, यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं में कोई कमी नहीं है। यहाँ तो एक-दो, पांच-दस नहीं, अनेकानेक श्रावक गरिमा वाले पद पर रहकर संघ को सेवाएँ देते थे, उनका संघ के प्रति समर्पण था। आज भी आप अपने गौरव को ध्यान में रखकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र -तप की आराधना करना चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। बस, जरूरत है सबसे पहले खुद के लिए सोचें। आप अपने लिए चिन्तन करें, जरूर करें, साथ-ही-साथ अपने परिवारजनों को, मौहल्ले वालों को नगर और महानगर के साथियों को भी नहीं भूलें।

हमारा चातुर्मास जोधपुर का है, किसी क्षेत्र विशेष का नहीं। जोधपुर का चातुर्मास है इसलिये आप-सबकी भावना चाहे वह ज्ञानाराधन की हो, व्रताराधन की हो, तपाराधन की हो, सेवा की हो संगठन में प्रेम बढ़ाने की हो, हर क्षेत्र में जिसकी जैसी रुचि है, जिसकी जैसी योग्यता है, आप सब मिलकर पुरुषार्थ करेंगे तो प्राप्त अवसर का पूरा लाभ उठा सकेंगे। आपने बैंगलोर का चातुर्मास देखा है। वहाँ आपने देखा होगा संघ के मुखिया साधना में बैठे हुए हैं, फिर भी काम करने वाले हर समय हर जगह मौजूद। एक-एक दिन एक-एक क्षेत्र के लोग आते वे साधना तो करते ही, सेवा का काम भी करते। परिवार के साथ आने पर एक दूसरे का परिचय होता और कोई काम करना भारी नहीं लगता। आप हर उपनगर, कॉलोनी, गली-मौहल्ले वालों से सम्पर्क कर उन्हें संघ सेवा में जोड़ने का लक्ष्य लेकर चलेंगे तो हर व्यक्ति के मन में उत्साह जगेगा। सम्पर्क नहीं करने पर लोग यह भी कहने वाले मिल जायेंगे कि काम करने की मन में बहुत भावना थी पर क्या करें, किसी ने कुछ काम दिया ही नहीं। संघ-समाज में न जाने कितने कार्यकारी लोग हैं जो काम करना चाहते हैं, पर उन्हें कोई जोड़ने वाला तो मिले। आप सबको जोड़ने का लक्ष्य लेकर चलें, धर्मसंघ में हर व्यक्ति भावनापूर्वक अपनी भागीदारी निभाने को तैयार रहेगा। सूर्यनगरी में कार्यकत्ताओं की कोई कमी नहीं है जरूरत है उन्हें ससम्मान प्रेरणा करके आगे लाने वालों की।

जोधपुर नगर से महानगर तो बन गया, आपको अपना दिल भी बड़ा बनाना है। आप दिल बड़ा बनाकर सबको साथ लेकर चलेंगे तो प्रत्येक क्षेत्र में सूर्योदय हो सकता है। आपको ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप में स्वयं को लगाना है, दूसरों को आगे लाना है। ■

प्रवचन

चलें अनन्त की ओर

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाङ्क 27 सितम्बर 2004 को महावीर भवन, अशोक नगर, शूले, बैंगलोर(कर्नाटक) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

अन्त (मृत्यु) का अन्त करके अनन्त में लीन होने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और अनन्त का पथ प्रदर्शित करने वाली वीतराग वाणी के अवलम्बन से आत्मा के अनन्त सामर्थ्य को प्रकट कर अन्त का अन्त करने के लिए संयम में पराक्रम करते हुए मुमुक्षुओं का मार्ग प्रदर्शित करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन के पश्चात्-

बन्धुओं! सीमित से जीव को तृप्ति होती ही नहीं है। सौ रुपये वाला हजार की आशा लगाये बैठा है। हजार वाले को लाख से दुःख-मुक्ति का विश्वास है। लाख वाला करोड़, करोड़ वाला अरब, अरब वाला खरब चाहता है। आप-अपने अन्तर में टटोलकर बताना- कितने पा लेने से आपको सन्तुष्टि हो सकती है? आपको असीमित-अनन्त चाहिये, पर बाहर से अनन्त पाने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं है।

लोकाकाश के प्रदेश असंख्यात हैं। निगोद योनि को छोड़कर आयुष्य भी असंख्यात काल तक का ही हो सकता है, अनन्त किसी भी दशा में हो नहीं सकता। चाहने वाला अनन्त सामग्री की चाहना करता है। अनन्त मिलता नहीं, इसलिये शांति नहीं मिलती। अतः हमें अनन्त प्राप्ति का सच्चा रहस्य समझना है। बाहर की भागदौड़ में अनन्त नहीं मिलने वाला है तो फिर क्या करना?

अनन्त मिलता कहाँ हैं? अनन्त काल तक कौन रह सकता है?

ज्ञान अनन्ता, दर्श अनन्ता, सुख भी अनन्ता, वीर्य अनन्ता
चेतन की शक्ति है जब अनन्ता,
कर ना सका क्यूँ मैं कर्मों का अन्ता?
समकित व्रत आराध, तब सिद्ध बुद्ध हो जाता मैं।

आत्मलीन बन जाता मैं, समकित व्रत आराध

तब सिद्ध बुद्ध हो जाता मैं........

आज अनन्त चतुर्दशी है। दिगम्बर समाज की संवत्सरी है। जैनेतर मान्यता में भी अनन्त चतुर्दशी का बहुत महत्त्व रहा है। हमारे यहाँ तो अन्तर के अनन्त की बात है। 'सात वार और आठ त्यौहार' वाले इस देश में इस जीव को प्रेरणा प्रदान करने वाला पर्व- भादवे का पर्युषण कुछ दिन पहले था। पर्व कब सही? कब मनाना चाहिये? जब यह जीव सही, तभी पर्व सही। जब तक जीव सही नहीं जानेगा तब तक संवत्सरी चाहे पहले वाली हो या दूसरी, सही नहीं हो सकती। जीव के भीतर में अनन्त की तीव्रतम अभिलाषा जग जाय, अनन्त को पाने की व्याकुलता जगे उसी का नाम है-संवेग।

अनन्त प्राप्त करने के पहले चैन नहीं लेना है। आप रात-दिन दौड़-भाग करते हैं। कई हैं जो गाँव छोड़कर दिसावर आ गये। यहाँ आकर कारोबार बढ़ाया, उद्योग-धंधे लगाये, फिर भी अनन्त की भूख बाकी है। आप जरा चिन्तन तो करो यह भूख कब भगेगी? चक्रवर्ती छह खण्ड का मालिक है। वह सातवां खण्ड पाना चाहता है, पर सातवां खण्ड नहीं मिलता। सातवां खण्ड मिलाने गया तो डूब गया। आठवें चक्रवर्ती संभूम ने कोशिश की। अनन्त की क्या बात करें, सातवां खण्ड भी साध न सके । तेरहवां चक्रवर्ती बनने का स्वप्न देखने वाला भी रसातल में चला गया। बाहर में सामर्थ्य सीमित है, साधन भी सीमित हैं। सीमित से किसी को भी शांति और सन्तोष मिलने वाला नहीं है। जरूरत है इस उल्टी दौड़ को खत्म करें।

यह जीव आज तक दौड़ लगाता रहा, दौड़ता-गिरता रहा, पर ईमानदारी से लक्ष्य के प्रति चलने का प्रयास नहीं किया। इसलिये अपने पर भरोसा जगाने की जरूरत है। अपने-आप पर भरोसा होगा तब खोज की शुरूआत होगी। यह जीव भाग-दौड़ करता हुआ कहाँ-कहाँ नहीं गया? जहाँ भगवान रहते हैं वहाँ पर भी यह जीव जाकर आ गया। अभी प्रार्थना की- आओ भगवन् आओ, इस अन्तरमन में आओ। यह जीव अनन्त सिद्धों के साथ रहकर आया, पर उसे उन आकाश-प्रदेश में भी सुख नहीं मिला। जड़ से पैदा 'मैं' जब तक जीवित है तब तक समस्या है-

मैं-मैं करती बकरी, कसाई छुरी पर जाती है।
मैना-मैना करती मैना किशमिश मेवा खाती है।।

जो भी मैं मैं करता है वह पछताता ही है। यह जीव सारे लोक के आकाश प्रदेशों में रहकर इस शरीर में आया है, यह जीव महाविदेह क्षेत्र में भी रहकर आया है। केवली भगवान की समुद्घात हुई उनके आत्मप्रदेश सम्पूर्ण लोक में विस्तरित हुए। भगवान के आत्म-प्रदेश मेरे भीतर में भी आए- सिद्धों के साथ तो एकेन्द्रिय पर्याय में रहकर आया, किन्तु अज्ञान में रहकर आया। अनन्तज्ञानी भले ही एक समय के लिये ही सही, मेरे भीतर पधारे, पर मैं नहीं जान पाया। इस भव में भी भगवान पधारे, पर मैं नहीं जान पाया, नहीं पहचान पाया। अनन्त बनने के लिए उस अनन्त को याद किया जा रहा है। प्रार्थना में इसीलिए कहा- आओ भगवन् आओ, इस अन्तर्मन में आओ। भगवान मेरे पास आ गये, फिर क्यों कह रहा है आओ भगवन् आओ।

एक जिज्ञासा यह भी आई- कौनसे भगवान् को बुलाया जा रहा है? भगवान मोक्ष पधार गये, मोक्ष से भगवान आने वाले नहीं हैं। भगवान आ भी गये तो कोरे के कोरे रह गये। सुना जाता है दो में से एक रहेगा। या तो राम रहेगा या काम रहेगा। इसी तरह या तो संसार रहेगा या भगवान रहेगा। भगवान कब रहेगा? जब भगवान पर ध्यान केन्द्रित होगा। आपने सुना होगा- आणु-ताणु कुछ नहीं जाणूं सेठ वचन प्रमाणूं। भगवान को चाहे जैसे याद करें उसे आप भगवान कहें, गॉड कहें, अल्लाह कहें, शिव कहें, कृष्ण कहें, कुछ भी कह सकते हैं। जिसने भी राग-द्वेष को जीत लिया, जन्म-जरा-मरण का अन्तकर लिया, वही परमात्मा है और परमात्मा को मन में बुलाया जाता है। लोग कहते हैं-

भगवान आते नहीं हैं, माता मरुदेवी जैसे बुलाते नहीं।
चन्दना जैसी दृढ़ता दिखाते चलो,
सिद्ध-अरिहन्त में मन रमाते चलो।
सर्व कर्मों के बन्धन हटाते चलो।
लोग कहते हैं भगवान आते नहीं,
पुद्गल माया मिटाते नहीं, आत्मभावों की ध्वनियाँ गुँजाते चलो।

दो में से एक ही रहेगा। जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं... प्रेम गली अति सांकरी जा में दो ना समाय......

विडम्बना है आज दिन भर मानव दूसरों की बढ़ती को देखकर दुःखी होता चला जा रहा है। इस दुःख से छुटकारे के लिए भीतर में एक को लाना होगा। सम्यक्दृष्टि वही व्यक्ति है जिसकी बुद्धि मोक्ष में लगी रहती है- 'मोक्षे धीस्तनुर्भवे' वह शरीर से भले ही संसार में रहता है, पर बुद्धि मोक्ष के चिन्तन में रहती है। वह संसार के कार्य को डरता हुआ करता है तभी संवेग का गुण प्रकट होता है। बाहर के साधनों से न सुरक्षा होती है, न शांति ही मिलती है। वैशाख शुक्ला दशमी को भगवान को केवल ज्ञान हुआ। क्या भगवान के पास साधनों की कमी थी? तीर्थंकर वर्षीदान करते हैं कुबेर की आज्ञा से जृंभक देव प्रतिदिन सोनय्या लेकर भरते रहते हैं। क्यों नहीं भगवान ने सोनय्या से धर्म की प्रभावना की? सोनय्या बरसाने वाले देव ही नहीं देवाधिपति 64 इन्द्र हाजिर थे केवल-ज्ञान कल्याणक मनाने को, इतना होते हुए भी संघ नहीं बन पाया। भौतिक सामग्री से संघ बनने वाला नहीं, चलने वाला नहीं। समवसरण का वर्णन है- बाहर में चांदी का परकोटा, फिर बीच में सोने का परकोटा, फिर रत्नों का, कितने-कितने साधन थे, सामग्री थी। जो एक भव करके मोक्ष में जाने वाले थे वे संघ नहीं बना सके। देवों के स्वामी इन्द्र संघ नहीं बना सकते, क्योंकि संघ बनता है-त्याग से। संघ बनता है-वैराग्य से। व्रत ग्रहण करने से, केवल जय-जयकारों से संघ नहीं बनता। प्रार्थना की कड़ियों में कहा गया- 'आओ भगवन् आओ।' भगवान आयेंगे या नहीं, पर यह जीव स्वयं भगवान बन सकता है। भगवान की वाणी की आराधना करके- भगवान के द्वारा स्थापित संघ में सम्मिलित होकर, 12 व्रत या 5 महाव्रत लेकर यह जीव भगवान बन सकता है।

बाहर दौड़कर इस जीव ने आज तक क्या पाया? अनन्त चतुर्दशी प्रेरणा दे रही है कि तुम ऐसा करो जिससे अनन्त काल के लिए अनन्त में जाकर लीन हो जाओ। जहाँ अनन्त ज्ञान है, अनन्त दर्शन है, अनन्त आनन्द है, अनन्त सुख है, अनन्त शांति है। यहाँ का सुख निराबाध नहीं है। अगर इस जीव ने मोह को नष्ट कर दिया तो यह जीव अनन्त बन सकता है। क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष को जीत कर अनन्त बना जा सकता है, इसीलिए भगवान को याद किया गया।

अगला प्रश्न आया-आत्मशुद्धि का। संघ का सदस्य बनने के लिये

अनिवार्य है- आत्मालोचना करें। आत्म-आलोचना करके दोष छोड़ें। दोष छोड़े बिना संघ नहीं बनता। संघ सदस्य चाहे वह एक व्रतधारी है या बारह व्रतधारी, व्रती होना ही चाहिये। व्रत के हर पाठ में आता है- "तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।" दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन को देख लें। व्रत का स्वरूप क्या है? पहले प्राणातिपात व्रत में त्रस, बादर, सूक्ष्म जीव मात्र को मन-वचन-काया से कष्ट न पहुँचाना और पूर्व में जो पहुँचाया उससे अलग होना। 'तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि' कहना सार्थक है। पाप से अलग हटकर, पश्चात्ताप करके व्रत प्रारम्भ किया जा सकता है। यह वीतराग-वाणी का मक्खन है।

आज अनन्त चतुर्दशी है, आज के दिन अनन्त के लिये दृढ़ निश्चय करना है, उसके लिये शास्त्र स्वाध्याय करना है। बाहर की दौड़ में दौड़ने वाला सीमित रह जाता है, परिग्रह का परिमाण करने वाला भी व्रती बन सकता है। एक जाने-माने उद्योगपति ने अपनी सम्पति 62 खरब में से बेटे के लिए पाँच करोड़ रखे, शेष समाज के लिए दान कर दिया। "दान करना परिग्रह रूपी पाप का थोड़ा-सा प्रायश्चित्त है।" सौ पापों को इकट्ठा करके पाँच का दान क्या अर्थ रखता है? इसका यह तात्पर्य नहीं कि दान देने के लिये परिग्रह रूपी पाप करना है। पाप का परिहार करने को दान देना आवश्यक है। दान भी अनन्त की ओर ले जाने वाला है।

अपेक्षा से ही समझना है- सुपात्रदान, अभयदान, ज्ञान दान श्रेष्ठ हैं। परन्तु दान के लिए परिग्रह नहीं करना है, परिग्रह रूपी पाप का प्रायश्चित्त है दान। सुपात्र दान से समकित प्राप्त करने वाले भी हैं, पर फिर भी हजारों-हजार गायों का दान एक संयम की बराबरी नहीं कर सकता है। श्रावक के व्रत से आप संघ में सम्मिलित हो सकते हैं। संसार के दुःख की चर्चा रोजमर्रा होती है। विजयनगर के भाई हर पूर्णिमा को गुरु चरण सेवा में आते हैं। एक बार वे कहने लगे कि ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कितनों के साथ धोखा करती हैं। चौमू में टमाटर बहुतायत से होते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने चार रुपये किलो किसानों से टमाटर लेने का वायदा कर सौ किसानों को बीज दिये जिनको बो दिया गया। बाजार में खूब टमाटर आए। टमाटर के मूल्य बहुत घट गए। लेकिन बहुराष्ट्रीय

कम्पनियों ने यह कह कर कि इसमें रस कम है, टमाटर खरीदने से मना कर दिया। अब उस टमाटर का क्या करें, ऐसी स्थिति गांव-गांव में घटित हो रही है। पंचम आरे में ऐसा हो सकता है। किसी को भी दोष देने की जरूरत नहीं, दोष है तो इस जीव का जो इस आरे में पैदा हुआ।

द्रव्य को दोष दिया है मैंने, काल को भी खूब कोसा है मैंने।
क्लिष्ट कषायों को दूर किया ना, वार अनन्ती ओघा लिया है।।
समकित व्रत आराध...

यह 'मैं' अपने अहंकार का पोषण करता है। कभी कहता है क्या करूँ वातावरण अच्छा नहीं मिला। पाँचवें आरे में क्या कोई धर्म-ध्यान कर सकता है? कभी कहता है- अच्छे संयम वाला नहीं मिला। आदमी है जो सबमें दोष निकालता है, निर्दोष कोई है तो वह खुद है। क्या यह जीव चौथे आरे में नहीं था? क्या इस जीव ने तीर्थंकर भगवन्तों के चरणों की सन्निधि नहीं पाई? कल्याण मन्दिर के पैंतीसवें, छत्तीसवें, सैतीसवें श्लोक में कहा- शायद, मैंने आपकी उपासना नहीं की, मैंने आपको देखा नहीं, मैंने आपकी वाणी सुनी नहीं, पर 38वें श्लोक में उलट दिया। प्रभो! मैंने आपकी महिमा की, मैंने आपको देखा, मैंने आपको सुना भी, पर सब ऊपर से, चित्त की एकाग्रता से आपको धारण नहीं किया, सम्यग् साधना नहीं की। साधना नहीं की उसी का परिणाम है पाँचवे आरे में जन्म। दोष ही दोष नहीं देना, बल्कि यह सोचना कि मुझे इतना जो कुछ मिल रहा है उसमें पूर्वजन्म में कृत कर्म कारण हैं। आदमी अड़ौस-पड़ौस को, सास-बहू को, व्यापारी-ग्राहक को देखकर ही न रहे। दोष के लिए वह यह देखे कि मुझे जो कुछ मिल रहा है वह पूर्वकृत कर्म से है। दृष्टिकोण सही होगा तो सोचेगा कि मुझे सब सहयोग कर रहे हैं। गजसुकुमाल ने ऐसा ही तो सोचा कि सोमिल मुझे सहायता दे रहा है। अर्जुन माली ने अणगार बनकर क्या देखा? मैंने इनके घरवालों को मारा। ये मुझे मार तो नहीं रहे। मेरे कर्मों का कर्जा चुकाने में कितने सहयोगी बन रहे हैं। अगर वह दूसरों के दोष देखता तो उसका अन्तगड में नाम नहीं आ सकता था। अनन्त बनने के लिए अन्त की परम्परा का उन्होंने अन्त किया। मैं आपको क्या सुनाऊँ, अपने-आपको सुना रहा हूँ। अनुभवी साधक ने कहा- प्राप्त विवेक के प्रकाश में अपने दोषों को देखना। दूसरा आपके समक्ष झूठ बोले तो आपको कैसा लगेगा? कोई तेज बोलकर आपसे व्यवहार करे

तो...? आपको वह ठीक नहीं लगता, आप दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करें? जरूरत है दूसरों के बजाय खुद को देखने की कोशिश की जाय। दोष-दर्शन की दृष्टि मानव में विद्यमान है, किन्तु प्रमादवश वह अपने दोष नहीं देख दूसरों में दोष देखता है और इसी के कारण पतन के गर्त में जाता है।

हमारा विषय संवेग को लेकर चल रहा है। क्रोध कब आयेगा? जब दूसरों से अपेक्षा रहेगी तो वह दूसरों के दोष देखेगा। दूसरे पर न्याय लागू करेगा- अरे, तुझे गुस्सा आता है, तू चोरी करता है, तू हिंसा करता है, तुझे ऐसा नहीं करना चाहिये। उस पर न्याय लागू करता है और खुद के दोषों को माफ कर देता है। मुझे इतना गुस्सा आया, तुरन्त मेरा ध्यान जाता है अमुक संत को गुस्सा आया, अमुक आचार्य को गुस्सा आया, फिर अपने को आया तो कोई बुरी बात नहीं। स्वयं को क्षमा और दूसरों पर न्याय यह संसार का मार्ग है। यह अनन्त बनने का मार्ग नहीं। वह दूसरों के दोष जाहिर कर स्वयं दोषों को छुपाना चाहता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में सामायिक का नम्बर बाद में है, आलोचना निन्दा, गर्हा पहले है। गर्हा से क्या प्राप्त होता है? गर्हा संयम है, आत्मभाव है, अरूपी है। कभी दस मिनट आंखें मूंदकर चिन्तन तो करें कि मेरी कल की सामायिक से आज की सामायिक में क्या अन्तर है? मैंने सामायिक में कोई गलती तो नहीं की? मेरे से कब-कब क्या-क्या गलतियाँ हुईं, इसका विचार तो करें। चौदह नियम किसलिए हैं? यह द्रव्यों की मर्यादा किसलिए है? आप चिन्तन करेंगे तो लगेगा कि विषयों के साथ जब भी कषायों पर ध्यान जाता है तो व्याकुलता जगती है। चौदह नियम भी कुछ लोगों के लिए दोष वृद्धि के कारण बन सकते हैं। जरूरत है आपने-आपको संभालने की कोशिश की जाय। लक्ष्योन्मुखी साधना, कषाय-मुक्ति की साधना, अनन्त बनने की साधना अपने को संभालने से, अपने को संवारने से, अपने को सुधारने से प्रारम्भ होगी। सांसारिक घर पर (अलवर में) जयपुर के मौनी श्रावक श्री अमरचन्द जी नाहर पधारे थे। उनसे पूछा गया- साधना के विषय में। स्लेट पर लिख दिया- तूं तेरा संभाल, छोड़ के सब जंजाल। आचार्य भगवन्त ने ठीक ही कहा-

सामायिक से जीवन सुधरे जो अपनावेला।
निज सुधार से देश जाति सुधरी हो जावेला।
करलो सामायिक रो साधन जीवन उन्नत होवेला।।

आचार्य भगवन्त का भजन आपमें से कइयों को याद है। महापुरुषों ने अपने चिन्तन में कहा-

अरे सुधारक जगत् की, मत कर चिंता यार।
तेरा मन ही जगत् है, पहले इसे सुधार।।

सुधारना है तो अपने-आपको सुधारो। तूं सुधर गया तो सब सुधर जायेंगे। निर्दोष बनने वाला ही तो आत्मा से परमात्मा बनता है। अगर तू स्वयं नहीं सुधरा और जगत् सुधारक बन गया तो मामला ठीक नहीं होगा। संसार दोषों से चलता है, दोषियों से बनता है। निर्दोषी को यहाँ रहने का स्थान नहीं। निर्दोष परमात्मा होता है। निर्दोषता के लिये सजग महात्मा होता है। निर्दोष बन जायेगा तो महात्मा परमात्मा बन सकेगा। महात्मा का दृष्टिकोण कुछ और ही होता है। 'निम्ममो निरंहकारो' की साधना में रत महात्मा दोष निष्कासन में सजग रहता है। आत्मशुद्धि के मार्ग में आगे बढ़ता रहता है। यहाँ रहता है तब तक निरन्तर साधना में रत रहकर प्राणिमात्र का हितचिन्तक होता है। उसको यहाँ ममता नहीं, वह अनन्त की ओर अग्रसर होता है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा.) सोजत में भंवरलाल जी गोटावत के बंगले विराज रहे थे। दायित्व निर्वहन करते हुए प्रेरणा देते भाव-विभोर हो जाते थे, करुणा के झरने बह जाते थे। किसी साधक की पृच्छा का समाधान करते फरमाया- सागर में एक बूंद आई तो क्या और गई तो क्या? वे महापुरुष जानते थे संसार किसी व्यक्ति से चलने वाला नहीं। अपन सुधर गये तो संसार से मुक्त हो गये। कोई भी जीव मोक्ष में गया तो अव्यवहार राशि के एक जीव को जगह मिलेगी ही। इसलिए यहाँ से टिकट कटाओ और मुक्ति में पधारो। आप संघ की सच्ची सेवा करना चाहते हैं तो जगह फटाफट खाली करो, अनन्त में चलने की तैयारी करो।

यह जिनेश्वर भगवन्तों की वाणी अनन्त की ओर ले जाने वाली है। जीव के अन्दर अनन्त शक्ति का स्रोत है।

ज्ञान-दरस मय रूप तिहारो, अस्थि मांसमय देह न थारो।
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो।। समझो।।

मैं अनन्त सुख का भण्डार हूँ। मेरा ज्ञान कोई छीन कर नहीं ले जा सकता। मेरे पर जो आवरण हैं वे मैंने खुद ने डाले हैं। मैं तेरी-मेरी में उलझा हुआ हूँ, इसीलिए यह दशा है। बैंगलोर वाले अच्छा खिलाते हैं, अच्छी खातिरी करते

हैं, अतिथि को आने का मन हो जाता है। इसी प्रकार दोषों की खातिरी होती है तभी तो आते हैं। भक्तामर के सत्ताईसवें श्लोक के अर्थ को देख लीजिये। उन दोषों को जगह-जगह सत्कार मिला, स्वागत हुआ। दोष किसने बुलाये हैं? जीव ने स्वयमेव दोष बुलाए हैं, स्वयं ने दोषों को गले लगाया है तब कर्म आ रहे हैं। कर्म अहंकारी है, बिना बुलाये नहीं आते। कार्मणवर्गणा सिद्ध भगवन्तों के वहाँ भी रहती है, पर सिद्ध भगवान बुलाते नहीं, कर्म बंध होता नहीं।

हम ईमानदारी से दोष देखना शुरु करें, निज दोष दर्शन में इतना चमत्कार है कि दोष भागने शुरु हो जाते हैं। आत्मभाव के सामने पुद्‌गलों की ताकत टिकती नहीं।

ज्ञानदीप तप तेल भर घट शोधे चहुँ ओर।
या विध बिन निकसे नहीं पैठे पूरब चोर।।

एक बार यह जीव निज विवेक के प्रकाश में आलोचना तो करे। आलोचना से शुरूआत होती है। आलोचना अर्थात् निज दोष दर्शन से सरलता आती है। सरल आत्मा की शुद्धि होती है और शुद्ध आत्मा में धर्म ठहरता है- **सोही उज्जूय भूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ**। सरलता से साधुता आती है। सरलता से सम्यक्त्व विकसता है-अमायी सम्मदिट्ठी।

'निःशल्यो व्रती' सूत्र के द्वारा तत्त्वार्थसूत्र भी माया, निदान एवं मिथ्यादर्शन शल्य निकलने पर व्रती होना कह रहा है। शल्य निकालने के लिये उत्तराध्ययन सूत्र आलोचना करने हेतु कह रहा है। आत्म-निन्दा से मोह उद्‌घाटित और गर्हा से अनन्त घाती पर्यव नष्ट होने पर अनन्त चतुष्टय प्रकट होता है। प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा के द्वारा व्रत अंगीकार करने से संघ प्रवेश होता है और संघ से अनन्त की ओर प्रयाण। यह शेरनी का दूध है जो सोने के पात्र के अलावा और किसी पात्र में ठहरने वाला नहीं है। यह आत्मा का स्वभाव है, अनन्त का खजाना है। हाँ, पात्र की शुद्धता जरूरी है। संत एक बहिन के घर भिक्षा के लिए गए। पातरा रखा। पात्र में मिट्टी लगी हुई थी। बहिन दाल-बादाम का हलुआ बहराना चाहती थी। बोली- पात्र से मिट्टी साफ कर लीजिये। पात्र की शुद्धि पहली आवश्यकता है। बस, प्रायश्चित्त के द्वारा चित्त की शुद्धि हो जाने पर व्रत प्रारम्भ होता है। व्रती से संघ बनता है। अव्रतियों का

संघ नहीं, संग हो सकता है। भगवान के चरणों में अनेक भक्त आते हैं, उन भक्तों में शक्रेन्द्र अपने साथ बहुतों को लेकर आते हैं, पर वह संघ नहीं होता। क्योंकि वे चित्त की शुद्धि करके व्रत अंगीकार करने का सामर्थ्य नहीं रखते। हम दोषों को देखकर पाप को छोड़ें। आप प्रतिदिन दिनचर्या में यह देखें कि कल की अपेक्षा आज कितने पाप छूटे? प्रायश्चित्त के द्वारा चित्त की शुद्धि हो जाने पर व्रती का जीवन प्रारम्भ होता है। व्रत प्रारम्भ से ही तीर्थ बनता है, संघ बनता है। व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करें तभी आप संघ के सदस्य कहलाने के अधिकारी हैं। अनन्त की ओर उन्मुख होने वाले महापुरुषों के मुखारविन्द से अनन्त की व्याकुलता जगाने की प्रेरणा बरस रही है। हम भी अनन्त को पाने-प्रकट करने की लालासा व जिज्ञासा जगा पाएं। इसी मंगल भावना के साथ....।

पाठक-अभिमत

श्री सुरेशचन्द्र धींग

जिनवाणी का अप्रेल 2011 का अंक कई मायनों में विशेष है। इस अंक में आपका सम्पादकीय "प्रजातंत्रीय मूल्य" मौजूदा व्यवस्था के सन्दर्भ में लिखा गया है, इसलिए विशिष्ट है। विचार वारिधि में आचार्य हस्ती ने स्वाध्याय करने के जो उपाय सुझाये हैं, सचमुच वे बहुत ही महत्त्व के हैं। स्वाध्याय की प्रक्रिया सम्यक् नहीं होने से उसका वांछित प्रभाव नहीं हो पाता है। श्री गौतममुनि जी का प्रवचन "संस्कार की धारा फिर से बहानी होगी" विद्यार्थियों के साथ ही अभिभावकों, शिक्षकों और सबके लिए मननीय है। इसी प्रकार अन्य लेखों, कविताओं व रचनाओं का चयन इस प्रकार किया गया है कि प्रत्येक आयु, वर्ग और रुचि के पाठक को अपनी पसन्द का बहुत कुछ मिल जाता है। समाचार खण्ड में भी जैन समाज के विविध समाचारों को स्थान मिलता है। यह समग्रता ही जिनवाणी को अन्य पत्रिकाओं से विशिष्ट बनाती है। इसीलिए जिनवाणी को न सिर्फ हमारे परिवार में, अपितु हजारों परिवारों में ध्यानपूर्वक पढ़ा जाता है। पढ़े हुए पर चर्चा की जाती है। जिनवाणी के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रूप में योगदान करने वाले सभी धन्यवाद के पात्र हैं। उन सबका योगदान सार्थक हो रहा है।

21 अप्रेल, 2011 *-बम्बोरा- 313706, उदयपुर (राज.)*

प्रवचन

शान्ति का स्रोत है असंगता

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज के आज्ञानुवर्ती श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. द्वारा 29 जून, 2010 को सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

धर्मजिज्ञासु बन्धुओं!

वे ग्राम-नगर-पुर-पाटन धन्य होते हैं जहाँ पर संत-मुनिराजों का विचरण होता है। आज इस जोधपुर की पावन धरा पर घोड़ों के चौक में आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का लगभग तेरह वर्ष बाद मंगलमय पदार्पण हुआ है। संघनायक के मंगलमय पदार्पण से भावुक भक्तों का मन मयूर नाच रहा है। आप जो दर्शनों को तरस रहे थे, आपकी आज भावना साकार हुई है।

संसार में बड़े-बड़े धनपति, बड़े-बड़े उद्योगपति और नेता हैं, उनके प्रति ऐसा आकर्षण नहीं होता, किन्तु संतों के लिए आकर्षण है, इसके पीछे क्या कारण है? संतों के जीवन में त्याग होता है और त्याग का ही महत्त्व होता है। आज हर व्यक्ति त्याग को जीवन में आत्मसात् नहीं कर पाया है, फिर भी मन में उसके प्रति सहज बहुमान का भाव रहता है। वह जानता है कि वह संसार के भोगों में फंसा हुआ है, वह भोगों की निन्दा सुनकर भी भोगों को छोड़ता नहीं, भोग उसे अच्छे लगते हैं। गुरु भगवन्त भोगों को त्याज्य बताते हैं, बुरा कहते हैं, फिर भी आप लोग गुरु भगवन्तों की वाणी को श्रद्धा से सुनते हैं, एवं उनके पास खिंचे चले आते हैं।

गुरु भगवन्त हमें संसार से तिरने का मार्ग बताते हैं। माता-पिता जन्म देते हैं, गुरु जीवन देते हैं। जन्म होता है मर जाने के लिए और जीवन होता है कुछ कर गुजरने के लिए। संसार से मुक्ति का जो उपाय है उसे सद्गुरु बताते हैं। संसार में अनेकानेक लोग जन्म लेते हैं और वे भोगों में मशगूल बने रहते हैं, किन्तु उनके पास शान्ति नहीं है। जीवन जीना अलग बात है, जन्म लेना अलग बात है। ज्ञानी

गुरु भगवन्त हमें जीवन जीना सिखाते हैं। वे बताते हैं कि इस संसार से पार कैसे हो सकते हैं?

जब तक जीवन में गुरु नहीं तब तक जीवन शुरु नहीं। संसार के व्यक्ति भले ही भोगों में जीवन जी रहे हैं, परन्तु उनके जीवन में शांति नहीं है। हर व्यक्ति शांति चाहता है, प्रसन्नता चाहता है, आनन्द चाहता है। संसार के पदार्थों में सुख तो भले ही प्राप्त हो सकता है, किन्तु शांति का अनुभव नहीं होता।

एक बहिन कहने लगी- महाराज साहिब! मेरे घर में दस-बारह लाख की चोरी हो गई है, इसलिये मुझे शांति नहीं है। मैं माला फेरने बैठती हूँ या सामायिक करने, मुझे घर की चोरी का ही खयाल आता है। यह अटेचमेंट का भाव है। जहाँ भी अटेचमेंट है वहाँ दुःख है।

आप संसार में कमाई करते हैं। कमाई चाहे व्यापार से हो या उद्योग-धंधे से, कमाते हैं तो मूर्च्छा बढ़ेगी या घटेगी? अठारह पापों में एक है परिग्रह और दूसरा है लोभ। प्राप्त के प्रति मूर्च्छा का नाम है परिग्रह और अप्राप्त की वांछा का नाम है लोभ।

मूर्च्छा का भाव परिग्रह है। मनुष्य के पास भले ही बहुत ज्यादा नहीं, थोड़ा-बहुत है, पर मोहासक्ति है तो वह भी परिग्रह है। गाढ़ आसक्ति है चमड़ी चली जाय, दमड़ी नहीं जाय तो यह परिग्रह का ही रूप है।

एक भिखारी था। उसके पास एक ओढ़ने की चद्दर थी, वह चोरी हो गई। उसने थाने में जाकर चद्दर, तहमद एवं तकिया चोरी हो जाने की रिपोर्ट लिखवाई। सिपाही को ढूँढने पर चद्दर मिली तो भिखारी से कहा- तुमने तीन चीजें लिखाई, पर यह तो एक चद्दर ही मिली है। भिखारी बोला- यह मेरे लिए सब कुछ है, चद्दर भी है, तहमद भी है, तकिया भी है। वह ग्यारहवां प्राण बन जाता है। यह है गाढ़ आसक्ति। जहाँ भी गाढ़ आसक्ति है वहाँ दुःख ही दुःख है। वह भिखारी दुःखी था, क्योंकि उसकी आसक्ति थी।

अप्राप्त को पाने की इच्छा लोभ कहलाती है। पास में कितना ही क्यों न हो, मन में और प्राप्त करने का भाव लोभ होता है। संसार के व्यक्ति परिग्रह में फंसे हुए हैं, लोभ से ग्रसित हैं। परिग्रह और लोभ में रहकर भी कोई शांति चाहता है तो उसे शांति मिलने वाली नहीं है। लोभ के पीछे ज्यादा-से-ज्यादा इकट्ठा करने का

भाव रहता है। वह सोचता है- मैं इकट्ठा करके सुखी बन जाऊँगा, किन्तु ऐसा होता नहीं हैं, क्योंकि पेट भर सकता है, पेटी नहीं भरती।

व्यक्ति की आवश्यकता पूरी हो सकती है, सभी आंकाक्षाएँ नहीं। किसी का चार रोटी से पेट भर जाता है, उसे कोई पांचवीं रोटी परोस दे तो.....? पांचवीं रोटी जूठी जाती है। धन के बिना संसार का व्यवहार नहीं चलता। धन साधन है और बिना साधन के व्यवहार नहीं चलता। पर, व्यक्ति आवश्यकता से अधिक इकट्ठा करेगा तो वह स्वयं के उपयोग में नहीं आ सकेगा।

आज व्यक्ति की क्या स्थिति है? यह बंगला मेरा, ये पापा-मम्मी मेरे, यह धन मेरा। ये मेरा...मेरा....कब तक? "जब राम-नाम सत्य है या अरिहन्त नाम सत्य है" बोला जाएगा, उस समय क्या साथ जायेगा? अगर व्यक्ति सत्य को, ईमानदारी को, सामने रखे तो उसे सही दृष्टिकोण मिल सकता है। व्यक्ति को यह भान नहीं कि मुझे संसार से विदा होना है। खाने के लिए बैठता है तो इस प्रकार खाता है जैसे उसे कल मिलेगा या नहीं। खाने की ही नहीं, मकान की हो या कमाने की बात, सबमें व्यक्ति की आसक्ति है। व्यक्ति आसक्ति का जीवन जीता है, फिर चाहता है उसे शांति मिले तो शांति तीन काल में नहीं मिल सकती।

जो आसक्ति छोड़ता जायेगा उसे शांति प्राप्त होती जायेगी। मोक्ष-मार्ग के लिये कहा गया है- 'संजोगा विप्पमुक्कस्स' यह जीव संयोग से जितना विमुख होगा उतना शांति की ओर बढ़ेगा। आपको जितने-जितने द्रव्य संयोग मिलते जाते हैं तो उतनी अशांति बढ़ती जाती है।

साधक संग से अपने आपको दूर रखे, अपने को दूर करता चला जाय, यही मोक्ष-मार्ग का उपाय है। मानव की अपेक्षा देवताओं के पास कई गुणा सुख है, पर उन देवों को भी शांति नहीं। मिथ्यादृष्टि देव कामनाओं और वासनाओं के भंवर से पीड़ित हैं। वे किसी देव की देवी चुरा लेते हैं, उनके चित्त में भी शांति नहीं है।

जहाँ आसक्ति है वहाँ तीन काल में शांति नहीं मिल सकती है। शांति चाहिये तो आसक्ति छोड़नी पड़ेगी। यह बात जिनेश्वर भगवन्तों ने कही है एवं गुरु भगवन्त भी कहते हैं आसक्ति त्याज्य है, आसक्ति नरक में ले जाने वाली है। भगवान और गुरु हमारे परम मित्र हैं। हम गुरु भगवन्तों की सीख धारण कर आसक्ति छोड़ेंगे तो हमें शांति प्राप्त होगी।

अमीर लोग पैसे से अमीर नहीं होते, वे दुःखों से भी अमीर हैं। उनके

भीतर में न जाने कितने कितने जख्म हैं। एक उद्योगपति के सामने कोई दूसरा उद्योगपति कारखाना डालता है तो अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। उसे तहस-नहस करने के लिए क्या-क्या नहीं किया जाता? ऐसे लोग यहाँ पर भी दुःख में जीते हैं और आगे भी दुःख ही पाते हैं।

आसक्ति दुःख का कारण है। आसक्ति है तो तीन लोक में कोई शांति नहीं पा सकता। तीन काल में भी सुखी नहीं बन सकता। आप भूत, भविष्य और वर्तमान प्रत्येक काल को देख लें, आसक्ति वाला शांति पा ही नहीं सकता। ज्ञानी कह रहे हैं- सर्व संग से असंग होकर रहने में शांति है।

आपके चित्त में शांति का वैभव लहलहा सकता है। आपने एक उक्ति सुनी होगी- "पानी में मीन प्यासी।" मछली जल में रहकर प्यासी रहे तो इस बात को सुनकर हंसी ही आयेगी।

गुरु भगवन्त मोह की निद्रा तोड़ने आए हैं। सब कुछ हमारे भीतर है, वह हमें भीतर से ही प्राप्त हो सकता है। एक पियक्कड़ था। उसे रात में शराब पीने की इच्छा हुई। रात में अंधेरा था। वह लालटेन लेकर शराब की दुकान पर पहुँच गया। शराबी की दुकान पर एक पिंजरे में तोता था। वह नशे की हालत में लालटेन वहीं छोड़कर पिंजरा जिसमें तोता रहा हुआ था, लेकर घर की ओर चला। दुकानदार ने देखा-पिंजरा नहीं है। उसे खयाल आया, हो ना हो वह शराबी पिंजरा ले गया। वह लालटेन छोड़ गया। दुकानदार ने शराबी को पकड़ा। पूछा- यह पिंजरा कहाँ ले जा रहे हो? हाँ, मैं भी देख रहा हूँ कि लालटेन उजाला नहीं कर रही है। शराब के नशे में व्यक्ति भान भूल जाता है। शराबी को भान नहीं रहता, ऐसे ही संसार के भोग खराब हैं उसे आप जानते हैं, मानते हैं, फिर भी संसार के भोग छोड़ नहीं पा रहे हैं। शराबी होश में नहीं था, तो क्या आप भी बेहोश बने हुए हैं?

यह जीव जब तक मोह के बीच में होता है वह चाहे जितनी सम्पदा प्राप्त कर ले, अरबों-खरबों मिला ले, छः खण्ड का राज्य प्राप्त कर ले, लेकिन वह शांति नहीं पा सकता। आप भाग्यशाली हैं, आपको पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन और वाणी सुनने का सुयोग मिला है, आप गुरु भगवन्त की मंगलमय वाणी सुनकर मोह को छोड़ेंगे तो शाश्वत शांति की ओर अग्रसर हो सकेंगे। ■

विनय और अहंकार में अन्तर

श्री नितेश नागोता जैन

विनय	अंहकार
सभी गुणों का मूल है।	सभी गुणों को नष्ट करने वाला है।
विकास का सुपथ है।	पतन का कुपथ है।
सभी के लिए लाभकारी है।	सभी के लिए हानिकारक है।
एक आदर्श सद्गुण है।	अशोभनीय दुर्गुण है।
कर्म-निर्जरा एवं पुण्यवानी में सहायक है।	कर्म बंधन कराने में सहायक है।
सभी के लिए आचरण योग्य है।	सदैव त्याग योग्य है।
लोक ख्याति, प्रशंसा में, प्रभाव में वृद्धि।	निंदा, अपयश, अपमान का सामना।
धर्म का मर्म व असर रूप है।	धर्म का दिखावा, अज्ञानपन है।
जिंदे की पहचान है।	मुर्दे की पहचान है, अकड़ना है।
सभी के दिलों को जीता जा सकता है।	सभी का दिल टूट सकता है।
सहयोग, मैत्रीभाव, सरल व्यवहार।	अहम्, असहयोग के भाव।
सम्यक् समझ।	मिथ्या समझ।
आग्रह रहित जीवन।	आग्रह की प्रधानता।
पल-पल शांति, आनंद की प्राप्ति।	दुःख, क्रोध, शांति का ढोंग।
हर दृष्टि से लाभकारी है।	हर दृष्टि से हानिकारक।
सहनशीलता, क्षमाभावों में विस्तार।	उतावलापन, विद्रोहक भाव।
गुणग्राही स्वभाव, प्रमोद भाव।	निंदकभाव, आलोचना, ईर्ष्या का साथी।
बुद्धि की निर्मलता में सहयोगी।	बुद्धि कठोर बनती है।
सभी के लिए आवश्यक।	जरूरी नहीं है, बेवजह की प्रवृत्ति।

ध्यान रहे-झुकता वही है, जो इंसान है। अकड़ कर खड़े रहना तो मुर्दे की पहचान है। अर्थात् जीवन की सफलता एवं आत्मिक विकास के लिए जरूरत है अहंकार को त्यागने की, विनम्रता को जीवन में अपनाने की, क्योंकि सभी गुणों का मूल विनय है। ज्ञानियों ने कहा है कि-

सोना त्यागे कड़कता, होत नगीना फिट।
विनयवान को झट मिले, मोक्ष नगर की सीट।।
विनय धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण।।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी (राज.)

वैज्ञानिक लेख

ब्रह्माण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप : पृथ्वी ग्रह और जैन विज्ञान में त्रिलोक (भाग 2)*

डॉ. जीवराज जैन

(A) वैज्ञानिक दृष्टि से पृथ्वी की सतह की प्राकृतिक संरचनाः

नारंगी की तरह गोल पृथ्वी का तीन चौथाई भाग समुद्रों से घिरा हुआ है। शेष एक चौथाई हिस्सा द्वीपों और महाद्वीपों की सतह का है। इस सतह पर प्राकृतिक नदियों, महानदियों, पहाडों और मैदानों का जाल बिछा हुआ है।

(1) महाद्वीपः–

पूर्वार्द्ध में एशिया और यूरोप नाम के दो महाद्वीप पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए हैं। ये दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। अतः एक ही पृथ्वीखण्ड बनाते हैं। इस खण्ड से सटा हुआ दक्षिण की तरफ फैला हुआ तीसरा महाद्वीप है, जिसको अफ्रीका कहते हैं। इसके ठीक विपरीत दिशा में, यानी पृथ्वी के दूसरे अर्धभाग में, उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ दूसरा पृथ्वीखण्ड है, जिसको उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका कहते हैं।

पृथ्वी जिस धुरी पर घूमती है, उसके उत्तरी और दक्षिणी छोर के आसपास के क्षेत्र को उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव कहते हैं। उत्तर का क्षेत्र पानी से घिरा हुआ है, तथा दक्षिणी क्षेत्र ठोस जमीन का है, जिस पर बर्फ जमी हुई है। इस भूखण्ड को अंटार्टिक महाद्वीप कहते हैं। इस महाद्वीप और एशिया के बीच एक बड़ा द्वीप अवस्थित है, जिसे आस्ट्रेलिया कहते हैं। (चित्र–1)

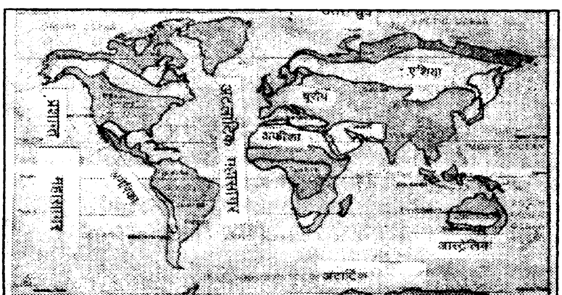

चित्र–1 विश्व का भौगोलिक मानचित्र

---

* 'जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा' शीर्षक से प्रथम भाग जिनवाणी के अक्टूबर 2010 अंक में प्रकाशित हो चुका है।

(2) महासागरः-

यूरोप और अफ्रीका के पश्चिम में फैली जलराशि को अंधमहासागर (अटलांटिक) कहते हैं। एशिया के दक्षिण में फैली जलराशि को हिन्द-महासागर कहते हैं।

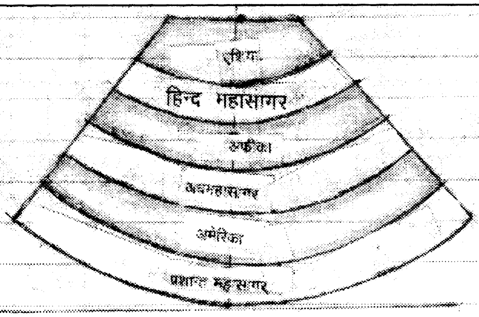

चित्र-1a विश्व का समूह रेखाचित्र

एक दृष्टि से **एशिया, यूरोप और अफ्रीका** आपस में जुड़े हुए नजर आते हैं। उसके चारों ओर जो जल राशि है, उसके दक्षिणी भाग को हिन्द-महासागर, पश्चिमी भाग को अंधमहासागर, पूर्वी भाग को प्रशान्त महासागर तथा उत्तरी जल राशि को उत्तरी-सागर कहते हैं। इसी तरह अमेरिकी पृथ्वी पिंड के पूर्व में अंध महासागर है तथा पश्चिम में प्रशान्त महासागर अवस्थित है।

अंटार्टिक महाद्वीप एक बर्फीला ध्रुवीय प्रदेश है, जिसके चारों ओर अंध, प्रशांत और हिन्द महासागर की दक्षिणी जल-राशि फैली हुई है। इस द्वीप के ऊपर हिम खण्ड (ग्लेशियर), पहाड़ और मैदान हैं। इन सब महाद्वीपों और महासागरों को सजावटी तरीके से एक समूह रेखाचित्र (चित्र 1a) द्वारा दर्शाया जा सकता है।

(3) पहाड़ और नदियाँः-

एशिया के मध्य-दक्षिण में हिमालय पर्वत है, जो पूर्व से पश्चिम में फैला हुआ है। यह पामीर की गांठ से उत्तर-पूर्व की तरफ भी निकला हुआ है। इस पर्वत से कई **नदियों के युग्म** निकलते हैं, जो महासमुद्रों में मिलते हैं।

यूरोपीय पृथ्वीखण्ड पर जो पूर्व से पश्चिम की तरफ पर्वत माला है, उसे आल्पस पर्वत कहते हैं। यूरोप और एशिया के बीच उत्तर से दक्षिण तक अराल पर्वत फैला हुआ है। अफ्रीका के मध्य पूर्व में काली मंजारो का महापर्वत है।

अमेरिकी महाद्वीप पर उत्तर से दक्षिण तक, उसके पश्चिमी किनारे पर एण्डीज का **महापर्वत** है।

उपर्युक्त महापर्वतों से जो मुख्य **महानदियाँ** निकलती हैं, वे नीचे की तालिका में बताई गई हैं।

क्र.सं.	नदी युग्म	कहाँ पर बहती हैं	कहाँ पर गिरती हैं
1.	गंगा-सिंधु	हिमालय, शिवालिक/भारत	हिन्द महासागर
2.	दजला-फरात	पश्चिम एशिया	हिन्द महासागर
3.	इरावदी-मिकांग	दक्षिणी-पूर्वी एशिया	हिन्द महासागर
4.	यांग्त्से-सिकियांग	पूर्वी एशिया	प्रशान्त महासागर
5.	ह्वांग्हो	पूर्वी एशिया	प्रशान्त महासागर
6.	ऑब-येनिशि	उत्तरी एशिया	उत्तरी सागर
7.	लीना-वोल्गा	पश्चिम/उत्तरी एशिया	उत्तरी सागर
8.	कृष्णा-गोदावरी	भारत	बंगाल की खाड़ी (हिन्द महासागर)
9.	नर्मदा-ताप्ती	भारत	बंगाल की खाड़ी (हिन्द महासागर)

एशिया के बाहर महानदियाँ

क्र.सं.	नदी युग्म	कहाँ पर बहती हैं?	कहाँ पर गिरती हैं?
	यूरोप		
1.	वोल्गा यूराल	पूर्वी यूरोप	केस्पियन सागर
2.	एल्बे-राइन	उत्तरी यूरोप	उत्तरी सागर
3.	डेन्यूब-प्रूट/नेपर	पूर्व-दक्षिणी यूरोप	काला सागर
4.	टीबरोन-पो	मध्य-यूरोप	मेडिटेरियन/अंध महासागर
5.	साइन-तेजो	उत्तर-पश्चिम	अंध महासागर
	दक्षिण अमेरिका		
1.	अमेजोन-तोकांटिंस	उत्तर में एण्डीज से	अटलांटिक महासागर
2.	पराना-यूरेग्वे	मध्य से पूर्व की ओर	अटलांटिक महासागर
3.	कोलाराड़ो-नेग्रो	दक्षिण-पूर्व	अटलांटिक महासागर
4.	ओरिनोको	उत्तर में	अटलांटिक महासागर
	उत्तरी अमेरिका		
1.	मिसीसिपी-मिसूरी	मध्य से पूर्व की ओर	अटलांटिक महासागर
2.	मेकेन्जी-यूकोन	(एण्डीज से)	अटलांटिक महासागर

अफ्रीका

1.	झेझ्रे–नाइजर	उत्तर–पश्चिम	अंध महासागर
2.	क्वांझा–ओरेंज	दक्षिण–पश्चिम	अंध महासागर
3.	लिंपापा–झांबेजी	दक्षिण–पूर्व	हिन्द महासागर
4.	नील (श्वेत–नील)	उत्तर–पूर्व	भूमध्य/अंधसागर

(B) मानव सभ्यताएँ:–

प्राचीन काल में नदियों के किनारे और उनके मैदानी क्षेत्रों में कई मानव सभ्यताओं का विकास हुआ। चूँकि मानव सभ्यताओं में **कृषि** ही प्रमुख **समृद्धि का स्रोत** रहा है, अतः इसके लिए नदी सभ्यताएँ ही विकसित हो पाई। इनका मुख्य आधार निम्नलिखित था–

1. मजबूत राजाओं/शासकों के आ जाने पर उन सभ्यताओं के विकास में तेजी आ जाती थी।
2. जब किसी शासक ने दूसरों को अपने अधीन किया, तब उनसे अपने वैभव/दौलत में इजाफा किया।
3. जिन शासकों ने अपने राज्यों में कला, विद्या, सदाचार और संस्कृति को सम्मान दिया, यानी धर्म के साथ लोगों में सर्जनात्मकता को बढ़ावा दिया और जो मद–मदिरा में डूबने से बचे रहे उनके शासनकाल में सभ्यता का विकास हुआ।
4. यह सब विकास उन्हीं मैदानों में हुआ, जहाँ कृषि योग्य जमीन, वातावरण और प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध रहा तथा जहाँ प्राकृतिक आपदाएँ कम आती थीं।

विश्व की मुख्य प्राचीन सभ्यताएँ

क्र.सं.	प्राचीन सभ्यता	वरदान	वर्ष पूर्व
1.	मोहनजोदड़ो व हडप्पा	सिंधु नदी का	5000
2.	आर्य सभ्यता	गंगा सिंधु नदियाँ	3000
	द्रविड़ सभ्यता	गंगा सिंधु नदियाँ	4000
3.	चीनी सभ्यता	ह्वांग–हो व यांगत्से–सीकियांग नदियाँ	4500
4.	मिश्र (फाराओ) आदि	नील महानदी	5000
5.	बेबीलोन व सुमेर सभ्यता	दजला–फरात नदियाँ	5000

6.	रोमन सभ्यता	इटेली की नदियाँ और तीन तरफ का समुद्र तट	2500
7.	ग्रीक सभ्यता	चारों ओर का समुद्र तट और शासकों की महत्त्वाकांक्षा तथा दर्शनिकों का सम्मान	2700

(C) जैन विज्ञान के अनुसार ब्रह्माण्ड:–

जैन दर्शन के अनुसार यह लोक जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल– इन छह द्रव्यों से व्याप्त है। आकाश द्रव्य के जितने क्षेत्र में उक्त छहों द्रव्य पाये जाते हैं, उसे लोक कहते हैं। उसके बाहर के आकाश को अलोक कहते हैं।

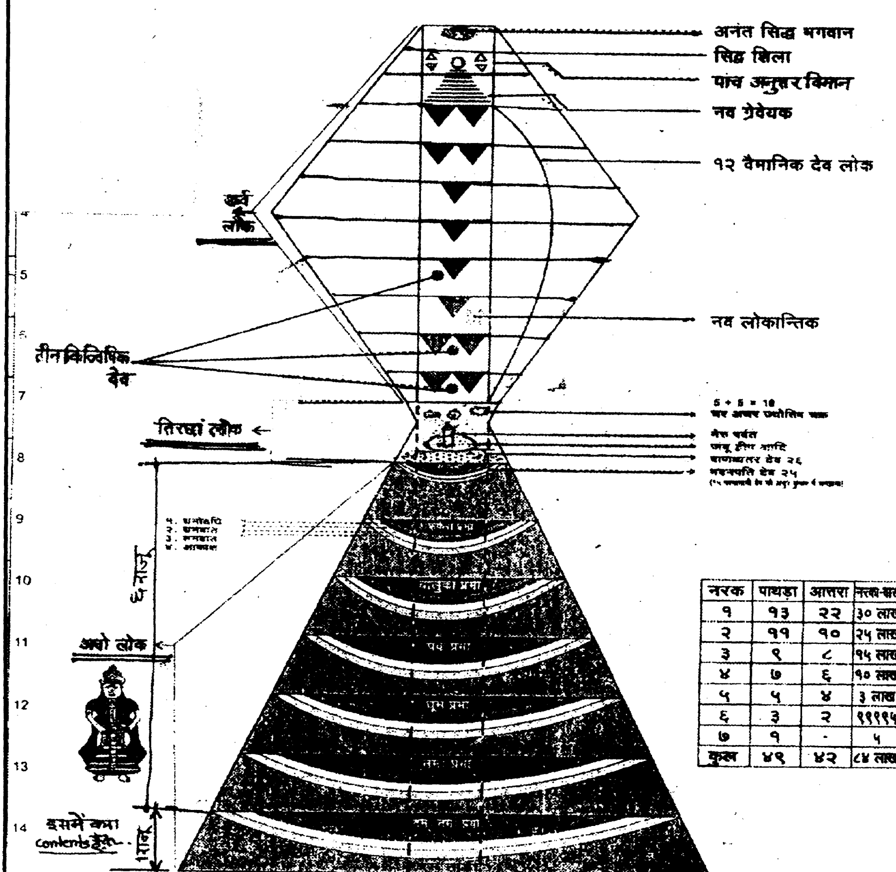

नरक	पाथड़ा	आंतरा	नरक-वास
१	१३	२२	३० लाख
२	११	१०	२५ लाख
३	९	८	१५ लाख
४	७	६	१० लाख
५	५	४	३ लाख
६	३	२	९९९९५
७	१	-	५
कुल	४९	४२	८४ लाख

चित्र–2 अलंकार शैली में ब्रह्माण्ड का मानचित्र

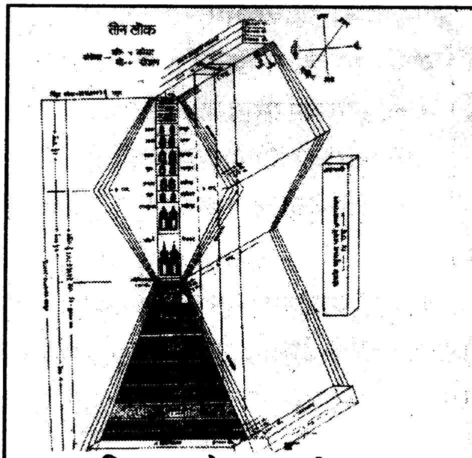

चित्र–3 लोक का परिमाण

यानी जिस आकार से धर्म और अधर्म द्रव्य लोकाकाश में स्थित है, उसी आकार से 'लोक' स्थित है।

यह सुप्रतिष्ठक आकार यानी 'त्रिशराव सम्पुटाकार' है। एक शिकोरा उल्टा, उस पर एक सिकोरा सीधा, फिर उस पर एक उल्टा रखने से जो आकार बनता है, उसे सुप्रतिष्ठक कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह दोनों पैर फैलाकर, कमर पर हाथ रखे पुरुष के आकार के समान है। (चित्र–2,3)

लोक के तीन भेद हैं:–

1. **अधोलोक:** लोक के निचले हिस्से को अधोलोक कहते हैं। इसकी ऊँचाई सात राजू है। इसमें नारकी और भवनपति देवों का निवास है।(चित्र 4)
2. **मध्यलोक:** लोक का मध्यभाग है। इसमें मनुष्य और तिर्यंचों का आवास है। व्यंतर और ज्योतिषी देवों का आवास भी मध्य लोक में होता है। यह असंख्यात द्वीपों और समुद्रों से परिवेष्टित है। मध्यलोक की ऊँचाई **1 लाख 40 योजन** है।
3. **ऊर्ध्वलोक:** मध्यलोक से लोकान्त तक। इसमें वैमानिक देवों का वास स्थान है। मुक्त जीव ऊर्ध्वलोक के शिखर पर विराजमान हैं। ऊर्ध्वलोक की ऊँचाई 7 राजू है। मध्यलोक की ऊँचाई इसी में शामिल है। अधोलोक का घनफल 196 R^3,

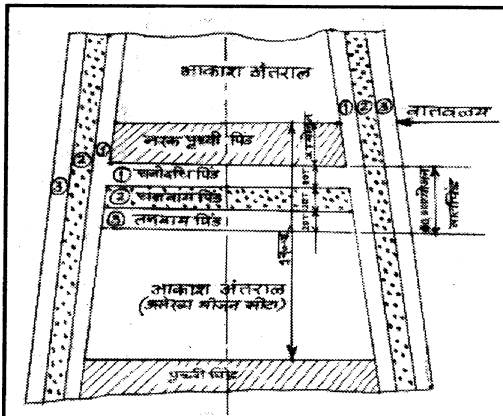

चित्र–4 अधोलोक (ऊपरी भाग)

ऊर्ध्वलोक का 147 घनरज्जू है। समग्र लोक 343 R^3 है। चित्रः(3)

(श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा के गणितीय विवेचन में कुछ फर्क है।)

1 रज्जू के नाप में भी कुछ भिन्नता है।

महेन्द्रमुनिजी ने 1 रज्जू को=$(10^{10})^{196}$ माइल बताया है। जब कि अन्य विधि से गणना करने पर 1 रज्जू 40,000 प्रकाश-वर्ष की ही दूरी को इंगित करता है।

(D) वातवलयः

यह संपूर्ण लोक, ऊपर-नीचे चारों तरफ 3 प्रकार के वात वलयों/वायुमंडलों से वेष्टित है। यथा-घनोदधि, घनवाय और तनुवाय। लोक के तल में इनकी मोटाई 20-20 हजार योजन है। बाकी पार्श्व भागों में 7 योजन से लगाकर लोक शिखर पर कुछ कोस तक रह जाती है। (चित्र-3, 4)

हस्ती की शिष्या मैंनासुन्दरी प्यारी

(तर्जः- इक दिन बिक जायेगा)

श्री धर्मचन्द जैन

मोहिनी के नन्दन हैं, मोती के लाल,
ऐसे गुरु हीरा ने, किया है कमाल।
हस्ती के पाट को दिपाते हैं ये आज,
व्यसनों के त्याग की, देते प्रेरणा साथ।।
जय -जय गुरु की जय-जय....।
हस्ती की शिष्या मैनासुन्दरी प्यारी,
जन-जन को लागे बोली इनकी प्यारी।
रत्न चन्द्र विनीता जी, सब ही हैं गुणवान्
इन सब के चरणों में, मैं करता हूँ प्रणाम।।
जय-जय गुरु की जय-जय....।
पैंसठवाँ दीक्षा दिवस, हम सब आज मनायें,
स्वस्थ रहें, सुखी रहें, यही भावना भायें।
तेजस्वी वाणी से, संघ-बढ़े दिन-रात,
जोधाणा नगरी को, लाभ मिले अपार।।
जय-जय गुरु की जय-जय....।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

आचार्य पदारोहण दिवस

सुनो कहानी गुरु हस्ती की

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. के द्वारा आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-शताब्दी पूर्णाहुति पर पीपाड़ में प्रवचन में उच्चारित तथा श्री त्रिलोकचन्द जी जैन द्वारा संकलित यह रचना उनके आचार्य पदारोहण दिवस अक्षयतृतीया पर 36 कड़ियों में प्रकाशित है।-**सम्पादक**

सुनो कहानी गुरु हस्ती की, सन्तों में जो सन्त महान्।
धन्य हुआ जिनशासन जिनसे, खिल गये रत्नसंघ के प्राण ।।
सुनो कहानी......... ।

पुण्यधरा पीपाड़ शहर में, एक शताब्दी के पहले,
जन्म लिया था एक रत्न ने, बोहरा कुल की छाँव तले,
जन्म के पहले महामारी में, दुखद तात का था अवसान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 1 ||

पौष मास की खिली चाँदनी, चवदस की वो रात उजास,
संवत् उन्नीसौ सड़सठ में, जन्मे हस्ती बनकर आश,
माँ रूपा ने हस्ती स्वप्न से, दिया उसे हस्ती अभिधान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 2 ||

आये जब वे इस जगती में, तात नहीं थे साथ में,
संयम के पथ निकल पड़े वे, माँ रूपा के साथ में,
अनित्य की भावना से भावित हो, जगा उनका अन्तरज्ञान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 3 ||

शोभागुरु ने जौहरी बनकर, हस्ती की हस्ती परखी,
तीने पद की सभी योग्यता, बाल मुनि में थी झलकी,
वय पन्द्रह में मनोनीत कर, रचा जगत में कीर्तिमान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 4 ||

बीस वर्ष की लघुवय में, तुमने इतिहास बनाया था,
गौरव मिला तीसरे पद को, सकल संघ हरषाया था,
विगत आठ सौ वर्षों में भी, मिला नहीं ऐसा आख्यान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 5 ।।

गणि संपदा अष्ट सुशोभित, अखण्ड शील का दिव्य प्रभाव,
अद्भुत तेरी आत्म साधना, पाया तुमने आत्म स्वभाव,
वैराग्य भरा हर बोल था तेरा, कथनी करनी एक समान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 6 ।।

साधु जीवन में गणिवर ने, किया न कोई कभी प्रमाद,
जो भी जाते उनको मिलता, जिनवाणी का श्रेष्ठ प्रसाद,
कृपा दृष्टि उनकी पाकर के, हुआ अनेकों का उत्थान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 7 ।।

प्रेरक उनके कृत्य सभी थे, प्रेरक उनके वचन प्रमाण,
बिखराये उन रत्न कणों को, लेकर कतिपय करूँ बखान,
संयम से सुरभित जीवन का, अन्तरमन से हो रसपान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 8 ।।

पूज्य जवाहर के आगे तो, गणिवर हस्ती बालक थे,
फिर भी ज्ञान-क्रिया के मानो, अति उत्तम वे पालक थे,
इसीलिए उनसे मांगलिक ले, दिया जवाहर ने सम्मान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 9 ।।

नब्बे के सम्मेलन में जब, पहुँचे संत बड़े विद्वान,
पूज्य श्री थे छोटे फिर भी, प्रतिभा का पाया सम्मान,
एक ही स्वर में सारे बोले, छोटे हैं पर है मतिमान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 10 ।।

अतिशय का था जादू ऐसा, सिवांची का कलह मिटा,
हर दिल में उपकार की सौरभ, खिली प्रेम की दिव्य छटा,
चरण पूज लूँ पास जो होते, ऐसा तुमने दिया निदान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 11 ।।

मार रहे थे विषधर को जब, उर में थी करुणा जागी,
हाथ में लेकर वन में छोड़ा, देह राग के ओ त्यागी,
प्राणी मात्र से मैत्री भाव था, उत्तम समकित की पहचान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 12 ॥

अनंतपुरा में पशुवध सुनकर, तड़प उठा तेरा अन्तर,
दया धर्म के साधक ने फिर, बोध दिया उनको सुन्दर,
बलिप्रथा को बन्द कराया, दिया अभय का उत्तमदान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 13 ॥

भारत-पाक में युद्ध हुआ जब, बरस रहे बम के गोले,
चातुर्मास था बालोतरा में, किंचित भय से ना डोले,
निर्भय बने वहाँ के वासी, खतरे में भी थी मुस्कान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 14 ॥

पावन कर उत्तर भारत को, फिर दक्षिण में चरण धरे,
मध्यक्षेत्र और महाराष्ट्र में, जिनवचनों के भाव भरे,
विचरण किया निरन्तर तूने, चमकाने शासन की शान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 15 ॥

जैन धर्म का दिया है तुमने, एक बड़ा मौलिक इतिहास,
विस्मृत कड़ियों के जुड़ने से, मिला सभी को नया प्रकाश,
नीर-क्षीर की हंस दृष्टि से, प्रामाणिक है ग्रन्थ महान्।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 16 ॥

जब तक उजली संयम चादर, मैं सबका हूँ सब मेरे,
दाग यदि कोई लग जाये, रहोगे तुम भी ना मेरे,
तेरा-मेरा भेद नहीं था, शुद्ध संयम की थी पहचान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 17 ॥

अपने नाम की जीते जी कोई, नहीं बनाई थी संस्था,
खुद की महिमा पूजा में भी, कभी न थी उनकी ममता,
अनासक्त ऐसे साधक को, दुर्लभ है कोई उपमान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ॥ 18 ॥

प्रकाश भया अन्तर में मेरे, मैं हूँ उस नगरी का भूप,
कितने ही ऐसे भजनों में, झलका तेरा दिव्य स्वरूप,
आत्म-बोध से भरे गीत हैं, साधक करते हैं नितपान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 19 ||

विद्वत गोष्ठी, धार्मिक शाला और कई शिक्षण संस्थान,
मूर्त रूप देने इन सबको, दिया निरन्तर श्रम का दान,
कई लोक उपकार किये थे, करके जन-जन का कल्याण।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 20 ||

अमर मुनि के संग देखकर, किया एक ने वहाँ बखान,
एक और है ज्ञान सरोवर, दूजी क्रिया की है खान,
प्रवचन सुनके भूल सुधारी, हस्ती ज्ञान-क्रिया प्रतिमान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 21 ||

अद्भुत घटी अनेकों बाते, दिव्य साधना का अनुदान,
हुए अनेकों उपकृत तुमसे, मिटे सभी उनके व्यवधान,
पूर्वाभास हुआ करता था, क्योंकि निर्मल था मतिज्ञान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 22 ||

संग्रह कर रहा गुरु जीवन वृत्त, बोले गुरुवर सुन गौतम,
यदि हो ऐसा आगम मंथन, बन जाए पंडित उत्तम,
निस्पृहता में झलकी प्रेरणा, आश्रय जिनका था वरदान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 23 ||

सामायिक स्वाध्याय के मानो, आज भी हो तुम दूजे नाम,
प्रेरक बन स्वाध्याय संघ के, तुमने किया अनोखा काम,
जीवन उन्नत करने के हित, तेरे ये अनुपम अवदान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 24 ||

ऊँचा था वैराग्य तुम्हारा, आत्म साधना थी गम्भीर,
निस्पृहता आदर्श तुम्हारी , मानो तुम उसकी तस्वीर,
झुके न भौतिक युग के आगे, तुम थे संयम में चट्टान।
धन्य हुआ जिनशासन....... || 25 ||

श्रद्धा से दर्शन पाने को, सदा उमड़ता जन सैलाब,
जंगल में भी मंगल होता, देख असल मोती की आब,
जंगम तीर्थ बने विचरे थे, करते जन-जन का उत्थान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 26 ।।

श्रमण चेतना के प्रहरी थे, जीवन वृत्त था एक मिसाल,
आत्म गुणों का वैभव पाकर, मिलने वाले हुए निहाल,
ऋजुता की साकार मूर्ति थे, चेहरे पर रहती मुस्कान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 27 ।।

संघ प्रेम और शुद्ध संयम की तुमने दी थी अंतिम सीख,
संघ समर्पण की वे बातें, कितनी लगती है मार्मिक,
संघ सदा जयवन्त रहेगा जीवन का तेरा प्रणिधान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 28 ।।

नंदीसूत्र का पाठ किये बिन, रात्रि शयन नहीं करते,
दिनचर्या आदर्श तुम्हारी, नित नियम में दृढ़ रहते,
अल्पाहारी, पाद विहारी, मौन ध्यान उनके सोपान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 29 ।।

रत्नसंघ की ये फुलवारी, महक रही बनकर आशा,
पट्टधर हीरा मान की जोड़ी, शुद्ध संयम की परिभाषा,
महानता को नमन हजारों, उपकारों से सुरभित उद्यान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 30 ।।

शोभा शिष्य, संघ का सेवक, अंतिम पत्र में बतलाते,
प्रभुता में भी ऐसी लघुता, तुम जैसे ही रखपाते,
जब तक तेरा संघ रहेगा, याद रहेंगे हर अवदान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 31 ।।

अस्सी की जब उम्र हुई तो, तन में निर्बलता आई,
मृत्यु का आभास हुआ तब, आत्म-लीनता गहराई,
बंधन तज संथारा धारा, जिनशासन का श्रेष्ठ विधान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 32 ।।

तन में व्याधि थी तेरी पर, मन में पूर्ण समाधि थी,
भेदज्ञान से उपशम करली, कर्मों की जो आँधी थी,
देह अलग है, आत्म-अलग है, उसकी तुमने दी पहचान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 33 ।।

विक्रम संवत् अड़तालीस में, प्रथम वैशाखी का था मास,
सुदी अष्टमी सांझ में आखिर, ले ली तुमने अंतिम सांस,
ज्योति देकर जन-जन को, देह छोड़ कर किया प्रयाण।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 34 ।।

आगम और इतिहास में अब तक, संथारे का जिक्र पढ़ा,
तुमने वो संथारा धारा, एक नया इतिहास गढ़ा,
पूर्ण अकिंचन आत्म भाव में,किया जगत से था प्रस्थान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 35 ।।

सदा रहोगे दिल में जीवित, याद रहेगा हर उपकार,
यशगाथा और उपदेशों में, पायेंगे तुमको साकार,
साधक-साध्य का भेद मिटे, मुनि गौतम को देना वरदान।
धन्य हुआ जिनशासन....... ।। 36 ।।

दीक्षा की शुभ घड़ियाँ

श्री धीरज डोसी

दीक्षा की शुभ घड़ियाँ, जोधाणे में आई हैं।
सबने अपने मुख से, जय गुरुवर की गाई है।
मन में वैराग्य आया, संसार असार जाना,
तज कुटुम्ब कबीला सब, पहना है उज्जवल गहना
अमृतमयी वाणी से, जन-जन को सुधारेगी।
संयम अपना करके, समता को धारेगी,
महावीर का संदेश, घर-घर में फैलायेगी
रत्नवंश की साधिका बन, नाम अनमोल पायेगी।
आचार्य श्री की शिक्षाओं से जीवन चमकाना है।
शासन प्रभाविका जी से कान्ता जी ने शास्त्रों का ज्ञान लिया
माता-पिता के मन में भी दृढ़ता आयी है।,
रत्नवंश परिवार के मन मन्दिर में, खुशियाँ छाई हैं।

-कार्यालय सहायक, स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

साध्वी जड़ाव जी की काव्य रचनाओं में निहित मूल्य-बोध

डॉ. इन्द्रा जैन

कवयित्री साध्वी जड़ाव जी का जन्म वि.स. 1918 में हुआ था। आप सेठों की रीयां (मारवाड़) में ब्याही गई थी। बाल्यकाल में ही पति का देहान्त हो जाने से आपका मन संसार से विरक्त हो गया। वि.स. 1942 में क्रियोद्धारक संत रत्नचन्द्र जी म.सा. की परम्परा में साध्वीरत्ना रंभाजी के पास आपने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। कठोर साधना की ओर उन्मुख हो आप जीवन के लक्ष्य आत्म-कल्याण में प्रवृत्त हो गई। नेत्र ज्योति क्षीण हो जाने के कारण जीवन के अंतिम 22 वर्ष आप जयपुर में स्थिरवास रहीं।

महासती जड़ाव जी की रचनाओं का संग्रह महिला मंडल जयपुर के द्वारा 'स्तवनावली' नाम से प्रकाशित हुआ था। इनकी रचनाओं में युगीन प्रमुख संत एवं सतियों के गुण कीर्तन के साथ ही मानवीय मूल्यों की प्रबल प्रतिष्ठा की गई है। आपकी कविताएँ भावपूर्ण तथा जीवन्त हैं। पाठक एवं श्रोता के हृदय को छूने वाली हैं।

भौतिकता की चकाचौंध में मानव अपने नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों को प्रायः भूल चुका है। साध्वी जड़ावजी ने मानव को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान कराते हुए समझाया है कि आत्मिक शक्ति द्वारा वह समस्त बाधाओं को पार कर सकता है-

ज्ञान का घोड़ा, चित्त की चाबुक, विनय लगाम लगाई।
तप तरवार, भाव का भाला, खिमा ढाल बनाई।।

ज्ञान का घोड़ा, चित्त की चाबुक, विनय की लगाम, तप की तलवार, भाव का भाला एवं क्षमा की ढाल बनाकर समस्त बाधाओं को जीता जा सकता है। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय कर्म-बन्ध के प्रबल कारण हैं। ये ही आत्मा को संसार में अनेक बार भव-भ्रमण करवाते हैं। जिस प्रकार मलिन वस्त्र भी साबुन-पानी से विधिपूर्वक धोने पर स्वच्छ हो जाता

है, उसी प्रकार आत्मा भी कषायों के त्याग द्वारा निर्जरा कर शुद्ध बुद्ध और मुक्त हो सकती है। जड़ाव जी ने अपनी रचनाओं में मानव को इन कषायों को छोड़ने की प्रेरणा देते हुए लिखा है-

क्रोध, मान चाण्डाल सरीखो, भाख्यो केवल नाणी।
आगे पाछौ कोइय न सोचतो, तोड़े प्रीत पुराणी।।

अहंकार जीवन की समस्त साधना को नष्ट कर सकता है। जड़ावजी ने अभिमान एवं त्याग को अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया है-

मान करो मत मानवी, जीती गयो न कोय।
रावण सरीखो राजवी, बैठो लंका खोय।।

तथा

ठकुराई में जिल रयो, मद छकीयो मगरूर।
जड़ाव कहे सुण जीवड़ा, सिव सुख होसी दूर।।

मान करके कोई विजय को प्राप्त नहीं हुआ, रावण ने भी अभिमान के कारण लंका को खो दिया। ठकुराई में या मद में जीने वाले से शिवसुख दूर हो जाता है।

माया आत्मिक शांति की शत्रु है। कपटी व्यक्ति सभी का विश्वास खो देता है और जीवन में प्रतिक्षण उद्विग्न रहता है। जडाव जी ने लिखा है-

मान थकी माया बुरी, छाने लाय लगाय।
गुण सगला भसमी हुवे, चौड़े दीखे नाय।।

मान से भी माया बुरी है, यह चुपचाप ऐसी लाय लगाती है कि सारे गुण भस्मीभूत हो जाते हैं।

इसी प्रकार लोभी व्यक्ति न स्वयं वस्तु का उपभोग करता है और न दूसरों को करने देता है। लोभी का सम्पूर्ण जीवन केवल संचय में लग जाता है। लोभ के वशीभूत व्यक्ति लोक मर्यादा को भी भूल जाते हैं। जड़ावजी ने लिखा है-

लोभथी लाज जाय, लोभथी मरजाद जाय,
लोभथी कुजस थाय, जुवो खेले हारसी।
धंधाइ में धाय, सारो दिन करे हाय-हाय,
मोड़ी-मोड़ी रोटी खाय, रात्यूं पढ़े फारसी।।

सजन सूं नेह तोड़े, हरामी सूं हाथ जोड़े,
फौजन के आगे दौड़े, मरसी के मारसी।
जग माय धन जेह, माया प्रनाक खेह,
कहत जड़ाव ते ही, तिरसी के तारसी।।

लोभ के कारण लज्जा एवं मर्यादा तो चली ही जाती है। कुयश भी होता है तथा जुआ खेलने पर पराजय होती है। धंधे में दौड़ता रहता है, भोजन भी समय पर नहीं करता, रात में भी हिसाब-किताब करता रहता है, सज्जन के प्रति प्रेम नहीं रखता तथा दुष्टों के सामने हाथ जोड़ता रहता है।

विनय को ज्ञान और धर्म दोनों का मूल कहा है। विनय के बिना न सद्ज्ञान ग्रहण किया जा सकता है और न सद्धर्म। जड़ाव जी ने विनय की महिमा बताते हुए कहा है-

ग्यानी छोड़ गरब, गुरु ने सीस नमावे,
विधि सूं लेवे ग्यान गुरु सूं गुर बण जावे।
देस प्रदेशा जाय जठेई आदर पावे,
भरी सभा में बैठे, सबको मन रीजावे।।

सत्य को जड़ाव जी ने मोक्ष का मार्ग बताया है, उन्होंने लिखा है-

बोलो-बोलो रे सजन सतवाणी, राखो दूजी अगवाणी रे।
समकीत की सांची सेनाणी, मुगतपुरी की निसाणी रे।।

अहिंसा जैन धर्म का प्रमुख सिद्धान्त है। किसी भी जीव को मन, वचन एवं कर्म से कष्ट नहीं देना भी अहिंसा की श्रेणी में आता है। पानी की एक बूंद में भी असंख्य जीव होते हैं। जैन साधक आवश्यकता से अधिक पानी के उपभोग का भी त्याग करता है। पानी की महत्ता समझाते हुए जड़ाव जी ने लिखा है-

मत ढोलो रे नीर जनम बिगड़े,
नीर सूं वीर जगत सब जीवे।
नहींतर दुनिया अरड़े।।

पानी को व्यर्थ मत ढोलो। इससे मानव जन्म बिगड़ता है, पानी से ही सब जीव जीते हैं, नहीं तो दुनिया में संकट आता है।

होली खेलने पर कितने पानी का व्यर्थ उपयोग होता है। जड़ावजी ने

आध्यात्मिक होली का रूपक बांधकर प्रतिबोध दिया है कि साधक को होली किस प्रकार मनानी चाहिये।

सुमत गुपत की करो पिचकारी, संवरसील भरो पाणी।
मन मिरदंग सुरत सारंगी, मधुर-मधुर गावो जिनवाणी।
नेत्र धर्म का दोए मंजीरा, सरदा डोर करो प्राणी।
ग्यान गुलाल अबीर ध्यान का, आठ करम करो धूल धाणी।
सास्तर ज्ञान की रणभेरी, चरचा चंग बजावो ग्यानी,
ऐसो फाग खेलो भव प्राणी, सुखे-सुखे जावो निरवाणी।

इस प्रकार होली निर्वाण का मार्ग भी बन सकती है, ऐसी सत्कल्पना जड़ाव जी जैसी साधिका ही कर सकती है।

इसी प्रकार उन्होंने राखी, दीपावली आदि त्यौहारों पर भी आध्यात्मिक रूपक द्वारा मानव को प्रतिबोध दिये हैं।

मानव जीवन अनमोल होने के साथ ही क्षणभंगुर है, अतः जड़ावजी ने इसका महत्त्व समझाते हुए कहा है-

अल्प दिना की है जिन्दगानी, क्या ने करम रस बांधो रे।

यह जीवन अल्प दिनों का है, क्यों कर्म बांधते हो?

84 लाख योनियों में भटकने पर मानव जन्म मिला है। इसलिये हे प्राणी! तुम इसका सदुपयोग कर आत्म-कल्याण रूप लक्ष्य की ओर प्रवृत्ति कर ले। इस प्रकार जड़ावजी ने अनेक प्रकार से मानव को प्रतिबोधित किया है।

-6-ए, महावीर कॉलोनी, अशोक नगर, मैनरोड़, उदयपुर (राज.)

अभिमत

श्री संतोष बी गुप्ता

प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'जिनवाणी' देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सु साहित्य पुस्तकालय' में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है। इस सुप्रयास के लिये सम्पादक मंडल बधाई व साधुवाद का पात्र है।

-विशेष कार्यकारी अधिकारी, महाराष्ट्र शासन,
14 अप्रेल, 2011 *सक्करसाथ, अमरावती-444601 (विदर्भ)*

English-Section

JAINA DOCTRINE OF NON-VIOLENCE

(Re-interpreted as Thinking Process Model)

Dr. Kokila H. Shah

Jainism forms an integral part of India's rich cultural heritage. Humankind today stands at a decisive point. The world is passing through one of its worst crises in history. Apparently, technological civilization and miracles of Information Technology and other scientific innovations that we witness in modern times provide material comforts. However, the world is in the fear of destructive forces. One of the challenges of 21st century is science without conscience will ruin the world. Jainism can make its own distinct appeal with its unique doctrine. Jain tradition is cautious about living a sustainable life style with positive and lasting impact. We can attempt to integrate Jain values in competitive world characterized by materialism and greed.

The entire globe is under the fear of terrorism and insecurity. In this scenario, it is legitimate to ask the question what is the future of Jaina Studies.

There is a need to go back to our tradition. We can interpret or reinterpret Jaina concepts for their practical applicability in concrete situation.

The Jaina way is to live life qualitatively. Jain values can act, as coordinator. Peace becomes a reality if each individual is at peace with himself. Transformation of individual is necessary. Perhaps we may be able to create technocrats, entrepreneurs, managers, business persons and political leaders who would improve qualities of life. The focus should be on self-purification, a self-management.

An attempt is made in the present paper to provide Thinking process Model or Meditative Model for non-violent way of life style. I have endeavored to reconstruct

some of the defining tenets of Jainism without changing their original meaning.

In today's world of consumerism, hedonism and terrorism we need to assert spiritual dimension of life. It may be that terrorists do not have anything to do with religion or creed. However, a pertinent question is what makes a person to adopt that particular path? What creates such a dangerous violent mind? If we ponder over these questions we realize that legislation will help little in changing the attitude of mind.

In the Jain scriptures, there is stress on Religion. At the very outset, it must be said that Religion is essential for living and for the progress of society.

The basic question is what is Religion? In this connection Umaswati's Prasamaratiprakarana-[1] 'Treatise on the joys of peace' is significant where he says in the very beginning that Religion preached by Omniscient, if practiced there is experience of happiness born of tranquility. In Ratnakarandakasrāvakācāra it is said "Religion holds living beings in happiness and lifts them up from the world of misery"[2]. In sarvārthasiddhi it is defined as "Nature of all things"[3]. According to some Acharyas "Religion is threefold path of Right Faith, Right Knowledge and Right Conduct and ten fold mental states and protection of living beings that is non-violence etc."[4] The Quintessence of Lord Mahavira's teachings is that Religion sustains the world "Non-violence, self restraint & penance are constitutes of Religion."[5]

Obviously Religion is not merely performing rituals, but it is manifested in man's conduct in society.

"The religion is to be practised in tenfold ways"[6]. The root of religion lies in compassion. Without Forgiveness compassion is not possible.

These ten essential virtues of Jaina Religion are-

1. Forgiveness. It is based on concept of kindness in our dealing with others if we practise the virtue we can turn

our enemy into friend.

2. Humility- Modesty as against vanity, it is opposite to pride.
3. Honesty- It implies straightforwardness. One has to be fair and honest in all one's dealings with one's fellow beings.
4. Truth
5. Purity in thought
6. Austerity.
7. Renunciation
8. Self Control : It implies conquest of passion.
9. Contentment : Giving up attachment to possession.
10. Celibacy or chastity

It is the context of these doctrines that relevance of Jaina way of life is to be understood.

Practice of such Religion leads to moral upliftment. One can desist from all evil deeds following this religion.

The basic premise is transformation of individual through transformation in thought. It would be interesting to observe importance of mental disposition for behavioural modification. The paper is an attempt in this direction. The key concept is emancipation is here and now for those who conquer passions. The way to it is through distinctively. Jain practices and precepts. I propose to examine some of the available Jain concepts namely non-violence, non absolutism, non-kasayas or freedom from passions, Meditation, Samayika or practice of equanimity, Four Bhavanas etc. for attitudual change and behavioral modification.

The ethical principles of Jainism prescribe a code of conduct for house holder which requires an individual to be an ideal person with non-violence as the foundation of his life. All other vows are designed to strengthen the vow of non-violence. The concept of Non-violence in all its aspects with its varied implications needs to be explored. In

Acārāngsutra it is said "Ahimsā is pure and eternal Dharma"[7] Non violence is the main principle of religion. It is to be noted that it is also principle of life. "It is essential characteristic of wise persons that they do not harm any living being"[8]. Apparently Non-Violence is abstention from violence which is injury to sentient beings but what does it imply? Violence does not depend on external act of killing alone. It relates to the internal aspects of committing injury. Tattvārthsutra the classic Jain text has defined violence as follows "Violence is injury to one's vatilaties out of negligence"[9]. Negligence in short means the passionate ideas of attachment & aversion. Entertaining such ideas is Violence.[10] In this context, it would be interesting to examine Amritcandra's treatment of nonviolence. Jainism considers that thought is the root of action. Thus we commit violence in thought before we commit it in action. According to celebrated spiritualist Kundakunda "Not withstanding the killing or non-killing of a being, a negligent person assuredly commits violence"[11]. It is clear that any passionate activity of mind is the root cause of violence in action. It follows that one should first give up violence in thought then only observance .of non-violence is possible. Hence the importance of thinking process model is clear. Violence means not only violence in practice of physical act of injury but also violent thought activity. However there are some philosophers who attach importance to action. Samantabhadra for instance. Now Amritacandra has explicitly shown the importance of the intention of the agent in his book Purusārthasiddhyupāya.[12] We may further expound the view asserted by Amritcandra. It means if violence in thought is renounced then only one is said to follow the vow of nonviolence. When a person follows right conduct by observing vows etc. & is not moved by passion there does not occur violence even in the act of killing. But if he acts carelessly, being moved by passions then it is an act of

violence whether it is an act of actual killing or not.

The implication is what is needed is good disposition. It is indicative of many things many good practices like entertaining feeling of friendliness to all etc. and also freedom from passions, freedom from vices, seven vyasanas like taking wine, flesh etc. as they affect our thinking. One has to be alert and vigilant. Then one practices non-violence in genuine sense of the term Non-violence is the positive kindness to all creature or compassion. Non-violence is the practical religion because it is for the removal of suffering of all. In this context, we may recall the story narrated in 26th chapter of Uttaradhyayana Sutra. The classic example of compassion is that of Aristanemi who later became the 22nd Tirthankara when he heard the cries of birds and beasts and came to know that they will be killed for his marriage party, he declined to marry. In practice, what we need to do is to be kind to each other, learn the values of kindness over killing. For this kind of attitude one has to eliminate one's evil thought processes which promote violence. The result is experience of tranquility. Mind should be oriented towards thought at kindness. To protect living beings who are fearful of death is supreme amongst all charities (Abhayadāna).

1. Umaswati, Prasamarati-Prakarana.
2. Samantabhadra Ratnakarandaka Srāvakācāra, Verse 2.
3. Pujya Pada Sarvarthasiddhi, 9-2-409. 11
4. Kundakunda Barasanuvekkha, 476
5. Dasvaikalikasutra, 1.1
6. Umaswati's Prasamarati Prakaaran, verse 167
7. Acārāngasutra, 1041
8. Ibid 1.4.10
9. Tattvarthasutra 7.13
10. Amritcandra Purusarthasiddhyupaya-44
11. Kundakunda, Pravachansara, 3.17
12. Amritacandra-purusarthasiddhyupaya- 42-43 **(Continue)**

-B-14, kakad Niketan,Derasar Lane,
GHATKOPAR(E),Mumbai-400077 (Mah.)

चिन्तन सरिता

संकल्प

डॉ. रमेश 'मंयक'

संकल्प–
मनोभावना की भूमि पर
अंकुरित होने वाला बीज मंत्र
चेतना के परिष्कार का तंत्र
स्व अनुशासन का एक यंत्र
जो साँचे में ढालता है
चिन्तन की प्रक्रिया को,
जीवन की पद्धति को,
व्यवहार की वृत्ति को,
संकल्प–
शक्ति बनकर अर्थवान होता है
इच्छा, प्रेरणा, प्रतिज्ञा के लिए
शुभ-अशुभ भावना के लिए
हम-संकल्प से जाग्रत हो पाएं
विधि सम्मत को अपनाएँ
निषेध परक को त्याज्य मानें
सेवा-भावना को आदर सहित स्वीकारें
तो स्वतः हिंसा, निंदा की कामनाएँ
समाप्त होती चली जाएँगी।
संकल्प से होता–
स्वाध्याय, शील, अपरिग्रह का संचार
निर्माण, मंथन, चेतना का विस्तार
और रुक जाता मानव शक्ति का ह्रास
तब नहीं होना पड़ता- निराश
कुंठा, घुटन, संत्रास पास नहीं फटकते,
संकल्प– जीवनोन्नयन का पायदान,
मन-वचन-कर्म में दृढ़ता-शुद्धता की पहचान।

बी-8, मीरानगर, चित्तौडगढ़-312001 (राज.)

जीवन-व्यवहार

Why is Fasting essential?

Sh. Sajjan Raj Mehta

Monks, nuns and laity fast as penance and to control desires. Jains believe fasting purifies the body and the mind, reminding one of Mahavir's emphasis on renunciation and asceticism. Mahavir spent months fasting and in contemplation. It is not sufficient simply to stop eating when fasting, the person must also stop wanting to eat. Control over one's mind is a major goal. If one continues to desire food, the fast is fruitless.

The body experiences weakness by fasting and hunger but that weakness is not caused by the absence of food but because the unclean stuff is cast off. After the body is purified strength returns to the body. It acquires freshness and agility. In this, there is no wonder. After the foreign, unwanted substances are removed from the body, health naturally appears in it.

During the period of Upavas/fasting when the consumption of food has been stopped, the remaining part of the food gets burnt and assimilated. Hence, during Upavas (fasting period) the fats soon decreases; and like fats the strength of the liver, the spleen and muscless also get reduced but the brain never grows weak, so we get sound sleep. The thoughts become wholesome and pure. In the beginning, the foul stuff found in the body may appear on the tongue; may come out in form of spittle; may cause giddiness etc., but gradually, everything gets all right.

Upavas is useful in getting rid of such diseases as fever, smallpox. measles, asthma, blood pressure, eczema etc. By means of Upavas the children of a doctor in America by name, Edward David, were saved from the dreadful disease of Diphtheria. In his book, The Non-breakfast Plan and Fasting Cure, the doctor has written that during illness, it is far better to fast than to take food or medicines because by that means, health can be soon recovered. **(Collected)**

-President, Jain Yuva Sangathan, Bangalore (Karntaka)

अध्यात्म

दुःख : जीवन का सच्चा साथी

श्री के.एस. गलुण्डिया

सुख की आकांक्षा केवल मृग तृष्णा–

मनुष्य में सुख की कामना इतनी तीव्र होती है कि वह बचपन से लेकर बुढ़ापे तक सारा जीवन इसी लालसा में जीवन के रेगिस्तान में प्यासे हिरन की तरह दौड़ता रहता है और प्यासा ही इस संसार से विदा हो जाता है। यह नहीं है कि जीवन में सुख नहीं है। वैसे देखा जाए तो प्रकृति ने हर प्राणी को जीवन यापन के लिए वायु, जल, भोजन, प्रकाश एवं अन्य आवश्यक साधन उपलब्ध करवाये हैं। मनुष्य ने नये–नये आविष्कार करके कई अन्य सुविधायें भी हासिल की हैं। दिन रात नई खोज हो रही है एवं ऐश आराम के, रोगों के उपचार के व सुख के नये उपाय व उपकरण मानव जाति को उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। ये सब कुछ होते हुए भी दुःख का रोना क्यों? यह चिंतन का विषय है।

शायद हमारी सोच में ही कोई कमी है। मनुष्य अपनों के दुःख से दुखी व दूसरों के सुख से भी दुःखी होता है। सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि सुख क्या है और दुःख क्या है। एक ही घटना अथवा परिस्थिति एक के लिए सुख का अनुभव करवाती है तो दूसरे को दुःख का। उदाहरण के लिए यदि दो जनों में कोई प्रतिस्पर्धा खेल के मैदान में अथवा रणभूमि में हो तो विजयी पक्ष के लोग खुशी से झूमेंगे व हारने वाले पक्ष के लोग दुःखी होंगे। क्रिकेट के मैदान में यह प्रायः देखने को मिलता है। अपने की मृत्यु पर सभी शोक मनाते हैं, लेकिन दुश्मन की मृत्यु पर हर्ष मनाया जाता है। हार अथवा मृत्यु की घटना एक ही है, फिर यह कैसी विडम्बना है कि यह एक को सुख पहुँचाती है और दूसरे को दुःख पहुँचाती है। यह अपना राग और द्वेष है जो हमारी सोच को सुख या दुःख में परिवर्तित कर देता है।

सुख और दुःख दोनों ही तीव्र अनुभूति हैं, एक क्षण में मनोभाव में परिवर्तन होने पर सुख दुःख में और दुःख सुख में परिवर्तित हो जाता है। एक सैनिक अफसर के युद्ध में मारे जाने की सूचना पाकर सारा परिवार रुदन कर रहा था, चारों तरफ मातम और चीत्कार का वातावरण था। उसी समय फिर सूचना आई कि मृत्यु उसी

नाम के अन्य अफसर की हुई है एवं उनका लाडला जीवित है। पहले तो किसी को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब उसका स्वयं का फोन आया तो अनायास ही सारा वातावरण बदल गया व रुदन असीम सुख में परिवर्तित हो गया। हम प्रिय और अप्रिय घटनाओं, परिस्थितियों व वस्तुओं से ही सुख व दुःख की अनुभूति करते हैं। हम संसार की घटनाओं को अपने राग व द्वेष के रंगीन चश्मे से देखना पंसद करते हैं।

हम ही अपने सुख-दुःख के कर्ता और विकर्ता हैं

भगवान महावीर का उद्घोष कितना सारगर्भित है:-

"अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पटिठय सुपट्ठिओ।।

हम स्वयं ही अपने को सुख अथवा दुःख देते हैं। जब हम सुप्रवृत होते हैं तो हम अपने मित्र हैं, इसी प्रकार जब हम बुरे कार्य करते हैं तो हम अपने शत्रु बन जाते हैं।

भगवान महावीर की वाणी हमें सही दिशा निर्देश देती है कि पुरुष तुम ही अपने मित्र हो, बाहर संसार में उसे क्या खोजते हो?

"पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि?

दुःख जीवन का सच्चा साथी

सुख के क्षण हम भूल जाते हैं लेकिन दुःख के क्षण हमेशा याद रहते हैं। दुःख के क्षणों में जो अनुभूति की तीव्रता है वह सुख के क्षणों में नहीं है। एक अंग्रेजी कवि ने सही कहा है-

"Our sweetest songs are those that tell us saddest thoughts"

दुःख के क्षण में जो एहसास होता है, उन पर ही हमारे मधुर गीत गाये जाते हैं। यह मधुरता एक कड़वी दवा के समान है जो हमें जीवन के सत्य का, सही राह का, सही सोच का आभास करवाती है।

किसी ने सही कहा है:-

"खुशी देना जमाने को,
मुझे हर दम रुदन देना,
अन्य को देना गुलशन,

मुझे वीरान वन देना,
जमाने के सभी पुण्य
जमाने को मुबारक हो,
मैं देखूँ अपने पाप को,
मुझे ऐसे नयन देना।"

सुख के क्षण हमको गुमराह कर देते हैं, पथ भ्रष्ट कर देते हैं, क्योंकि सुख की कामना कभी पूरी नहीं होती है। तीन लोक का सुख भी मनुष्य की कामना, लालसा, लोलुपता की पूर्ति नहीं कर सकता, यह वह भूख है जो कभी भी तृप्त नहीं होती है, ज्यों-ज्यों इसे खुराक मिलती है त्यों-त्यों यह अधिकाधिक प्राप्त करने को उत्तेजित होती है।

हर दुःख में सुख छिपा है

इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिल जायेंगे, जहाँ लोगों ने अपनी अपंगता के बावजूद हार नहीं मानते हुए दृढ़ निश्चय, सकारात्मक सोच और एकाग्रता से प्रयास कर न केवल उनको अपनी ताकत में परिवर्तित किया बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किये। जिस बालक के पाँवों में विकलांगता के कारण डॉक्टरों ने कहा कि वो जीवन में कभी दौड़ नहीं पायेगा, उसने दृढ़ निश्चय व अभ्यास से आगे जाकर इटली ओलम्पिक की दौड़ में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। हेलन कीलर जो बचपन से अंधी, गूंगी व बहरी थी उसने पी-एच्.डी. की डिग्री प्राप्त की और साहित्यिक रचनाएँ की। सूरदास जी ने अपने अंधत्व को आध्यात्मिक प्रकाश में परिवर्तित कर दिया। कालिदास व तुलसीदास ने अपनी पीड़ा व दुःख से नई दिशा, ऊर्जा व प्रेरणा प्राप्त कर महान् रचनाएँ कीं। अपनी कमजोरियों को अपनी ताकत में बदलने की क्षमता हर व्यक्ति में है, मात्र उसको उजागर करने की आवश्यकता है। हर दुःख में सुख छिपा है, केवल समय और दृष्टि का अंतर है।

सही दिशा एवं सोच की आवश्यकता

जीवन गुलाब के फूल की तरह होना चाहिये। गुलाब का फूल काँटों में खिलता है, लेकिन काँटे उसको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा पाते, बल्कि उसकी ढाल बन जाते हैं और वह महकता रहता है। जिनमें जिजीविषा व हौसला

होता है वे कठिनाइयों व बाधाओं के बावजूद जीवन की ऊँचाइयों को प्राप्त करते हैं। हर दुःख उनके लिए नई चुनौती लेकर आता है और वे उनसे प्रेरणा लेकर उन्हें अपनी ताकत में बदलने की क्षमता रखते हैं। जीवन की वास्तविकता यह है कि जो चीज आसानी से मिल जाती है मनुष्य उसका मूल्य नहीं समझता है लेकिन जिसके लिए संघर्ष करना पड़ता है, बाधाओं को पार करना पड़ता है वही उसे मूल्यवान लगती है, सुख देती है। केवल मात्र सोच का अंतर है। किसी शायर ने ठीक ही कहा है:-

''चला जाता हूँ हँसता खेलता मौज ए हवादिश में,
अगर आसानिया हो जिंदगी दुश्वार हो जाए।।''

जो सीढ़ियाँ नीचे जाती हैं वही ऊपर भी जाती हैं

जो मार्ग हमारे जीवन में दुःख प्रदान करता है, दिशा और सोच बदलने पर वही सुख का आभास भी करवाता है। जहाँ पुरुषार्थ है, प्यास है और प्रयास है वही जीवन का असली आनन्द है। यह बात मायने नहीं रखती है कि जीवन में कितनी सफलता अथवा असफलता मिलती है। जीवन की दौड़ में कितनी कठिनाइयों व बाधाओं को पार करके लक्ष्य को प्राप्त किया, यह ही जीवन की सार्थकता व सुख का आभास करवाता है।

किसी ने सही कहा है:**"Failures are the pillars of success and crosses are the ladders which lead to heaven"**

असफलता ही सफलता के स्तम्भ हैं एवं शूलियां ही स्वर्ग की सीढ़िया हैं। तात्पर्य यह है कि जीवन में कभी हताशा और निराशा नहीं आनी चाहिये और न ही अपनी कमजोरियों पर आँसू बहाने चाहिये। हमारे में अनन्त शक्ति का भंडार है, केवल उसे जागृत करने की आवश्यकता है, फिर चमत्कार ही चमत्कार होते हैं।

दुःख को यदि हम अपना साथी बनालें तथा अपनी सही सोच, मनोबल व विश्वास को बनाये रखें तो सुख की घड़िया दूर नहीं है। एक शायर ने कहा है:-

''बुझ जाए शमा तो जल सकती है,
कश्ति हद-ए-तूँफा से निकल सकती है।
हिम्मत न हार इरादा न बदल,
किस्मत किसी भी वक्त बदल सकती है।।''

-53, लेन नं. 2, गोपालवाड़ी, जयपुर (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 65)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(बकुश व प्रतिसेवना कुशील)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- बकुश और प्रतिसेवना कुशील में ज्ञान व श्रुत कितना होता है?

समाधान- बकुश और प्रतिसेवना कुशील साधु में कम से कम दो ज्ञान-मति व श्रुत ज्ञान होते हैं तथा अधिक से अधिक तीन ज्ञान-मति, श्रुत व अवधि ज्ञान होते हैं।

श्रुत की अपेक्षा कथन करें तो बकुश और प्रतिसेवना कुशील इन दोनों को कम से कम आठ प्रवचन माता (पाँच समिति-तीन गुप्ति) का तथा अधिक से अधिक दस पूर्व तक का ज्ञान होता है।

जिज्ञासा- बकुश व प्रतिसेवना कुशील में कौनसा लिंग होता है?

समाधान- लिंग के दो भेद होते हैं- द्रव्यलिंग और भावलिंग। सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र भावलिंग है। यह भावलिंग केवलि-प्ररूपित धर्म का पालन करने वालों में ही होता है अतः इसे स्वलिंग भी कहा जा सकता है। द्रव्यलिंग के दो भेद है- स्वलिंग और अन्यलिंग। हाथ में रजोहरण, मुख पर मुखवस्त्रिका, सफेद वस्त्र-धारण इत्यादि द्रव्य से स्वलिंग कहलाते हैं। अन्यलिंग के दो भेद हैं- कुतीर्थिक लिंग और गृहस्थलिंग।

बकुश व प्रतिसेवना कुशील में भावलिंग के साथ ही द्रव्यलिंग के तीनों भेद-स्वलिंग, कुतीर्थिक लिंग तथा गृहस्थ लिंग में से कोई भी लिंग हो सकता है, क्योंकि चारित्र का परिणाम किसी एक ही द्रव्यलिंग की अपेक्षा नहीं रखता।

जिज्ञासा- बकुश और प्रतिसेवना कुशील मरकर किस गति में जाते हैं?

समाधान- बकुश और प्रतिसेवना कुशील मरकर वैमानिक देवलोकों में उत्पन्न होते हैं। वैमानिकों में भी जघन्य पहले देवलोक में तथा

उत्कृष्ट बारहवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं। यह कथन ऐसे साधुओं की अपेक्षा समझना चाहिए, जिन्होंने बकुश और प्रतिसेवना कुशील के अतिचारों-दोषों का शुद्धीकरण कर लिया है।

यदि बकुश व प्रतिसेवना कुशील आराधक न बनें, विराधक ही रह जायें, आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्त आदि द्वारा शुद्धीकरण नहीं कर पायें तो वे भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी आदि देवों में तथा नरक, तिर्यञ्च, मनुष्यादि गतियों में भी उत्पन्न हो सकते हैं।

जिज्ञासा- बकुश और प्रतिसेवना कुशील मरकर कितनी स्थिति वाले देवों में उत्पन्न होते हैं?

समाधान- बकुश और प्रतिसेवना कुशील आराधक होकर यदि काल करते हैं तो कम से कम पृथक्त्व पल्योपम अर्थात् दो पल्योपम की स्थिति में पहले देवलोक में उत्पन्न होते हैं तथा अधिक से अधिक बाईस सागरोपम की स्थिति में बारहवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

जिज्ञासा- बकुश और प्रतिसेवना कुशील के संयम स्थान किनकी अपेक्षा से कितने कम-अधिक होते हैं?

समाधान- संयम स्थानों की संख्या असंख्यात है। पुलाक और कषाय कुशील के सर्वजघन्य संयम स्थान सबसे नीचे होते हैं। सबसे नीचे होने पर भी वे गिनती में असंख्यात होते हैं। सबसे नीचे के स्थान से वे दोनों साथ-साथ असंख्य संयम स्थानों तक जाते हैं, क्योंकि वहाँ तक उन दोनों के समान अध्यवसाय होते हैं। उसके बाद पुलाक हीन परिणाम वाला होने से आगे के संयम स्थानों में नहीं जा पाता, किन्तु वहाँ रुक जाता है। इसके पश्चात् कषाय कुशील अकेला ही असंख्य स्थानों तक जाता है। वहाँ से उस कषाय कुशील के साथ बकुश और प्रतिसेवना कुशील ये दोनों भी असंख्य संयम स्थानों तक जाते हैं, फिर बकुश रुक जाता है। इसके आगे प्रतिसेवना व कषाय कुशील ये दोनों असंख्य संयम

स्थानों तक जाते हैं, वहाँ जाकर प्रतिसेवना कुशील रूक जाता है फिर कषाय कुशील उससे आगे असंख्य संयम स्थानों तक जाता है। उसके पश्चात् निर्ग्रन्थ और स्नातक ये दोनों उससे आगे एक संयम स्थान में जाते हैं।

'बकुश' पुलाक से विशुद्धतर परिणाम वाला होता है तथा बकुश से प्रतिसेवना कुशील विशुद्धतर परिणाम वाला होता है, इसी विशुद्धि के करण संयम स्थानों में भी असंख्य गुणी हानि-वृद्धि हो जाती है।

जिज्ञासा- बकुश और प्रतिसेवना कुशील में लेश्याएँ कौनसी होती हैं?

समाधान- बकुश व प्रतिसेवना कुशील में छठा-सातवाँ गुणस्थान होता है, अतः ये दोनों सलेशी होते हैं। सलेशी में भी इनमें तेजो, पद्म और शुक्ल ये तीन प्रशस्त लेश्याएँ ही होती हैं। अर्थात् एक बार में इन तीनों में से कोई एक लेश्या रहती है। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

मेरे आराध्य

श्री भीकमचन्द गोलेछा

दर्शन किये हीरा गुरु के, तब से मेरे भाग्य जगे,
अवगुण मेरे दूर हुए और, सद्गुण मुझमें जगने लगे।
पाँच महाव्रतधारी आप हो, कमियाँ मेरी दूर करो,
ज्ञान मुझे दो इतना कि अज्ञान मुझसे दूर भगे।।
कषाय से जल रहा हूँ मैं, शीतल छाया दो समता की,
वैराग्य भाव जगाओ मुझमें, चल रही आँधी ममता की,
तारक-दीप हीरा हो तुम, संसार रूपी इस सागर में,
तिर जाऊँ भरो ऐसी शक्ति, मेरे जीवन के गागर में,
हीरा नाम है आपका तो, आप मेरे सौभाग्य बनें।
आसीन होकर मेरे हृदय में, मेरे परम आराध्य बनें।
प्रभु यह है मेरी प्रार्थना आप करो स्वीकार।

2, कोडियार नगर, शोभावतों की ढाणी, जोधपुर (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (11)

प्रश्न 5. शरीर के स्पर्श से क्या छहों काया के जीवों की विराधना होती है?

उत्तर : पृथ्वी, अप् एवं अग्नि की शरीर के स्पर्श से विराधना होना नियत है। वनस्पतिकाय एवं त्रसकाय की विराधना में भजना (विकल्प) है तथा वायुकाय की स्पर्श से विराधना नहीं होती है।

पृथ्वीकाय की विराधना– दशवैकालिकसूत्र अध्ययन 8 गाथा 5 में बताया है कि सचित्त पृथ्वी पर बैठने आदि से पृथ्वीकायिक जीवों की विराधना होती है, और कम्बल आदि बिछाये बिना अचित्त पृथ्वी पर बैठने से शरीर की ऊष्मा से उसके निम्न भाग में रहे जीवों की विराधना होती है। शरीर भी धूल से लिप्त हो जाता है। निशीथसूत्र के 12 वें उद्देशक से भी स्पष्ट हो जाता है कि सचित्त रज, मिट्टी, नमक, खार, काली, लाल मिट्टी आदि से हाथ भरे हों या कोई पात्र आदि भरे हों, तो उनसे भिक्षा ग्रहण करने से या उनका संघट्टा होने से पृथ्वीकाय की विराधना होती है। मार्ग में काली, लाल, पीली, मुरड़, रेत आदि सचित्त मिट्टी, पत्थरों के नये टुकड़े, पत्थर के कोयले आदि से युक्त मार्ग हो या ये पदार्थ मार्ग में बिखरे हुए हों तो इन पर चलने से पृथ्वीकाय की विराधना होती है। नदी–तालाब आदि के किनारे या खड्डों में पानी के सूखने पर जो मिट्टी पपड़ी बन जाती है, वह सचित्त हो जाती है। इस पर चलने, बैठने एवं परठने से भी पृथ्वीकाय की विराधना होती है।

अप्काय की विराधना– दशवैकालिकसूत्र अध्ययन 4 में बताया है कि उदक, ओस, महिका, करक, हरतनुक, शुद्धोदक, उदकार्द्र आदि जल प्रकार के बिन्दुओं से आर्द्र शरीर या वस्त्र आदि को स्पर्श करने से, झटकने से, फटकारने से, सुखाने से, तपाने से, दबाने से एवं निचोड़ने से अप्काय जीवों की विराधना होती है। भूमि पर ओस, धुअर, वर्षा का पानी मार्ग में पड़ा हो उसके स्पर्श से या फेंके जाते हुए पानी के स्पर्श से अप्काय की विराधना होती है।

तेजस्काय की विराधना– दशवैकालिकसूत्र अध्ययन 4 में निरूपित है

कि अग्नि प्रदीप्त करना, सुलगाना अथवा सजातीय या अन्य पदार्थों से परस्पर घर्षण करना आदि क्रियाएँ करने से या बिजली बुझाने से तेजस्काय की विराधना होती है। गोचरी में अग्नि का संघट्टा होता है। परस्पर स्पर्श करती हुई वस्तु से अग्नि पर रखी हुई भिक्षा देने के निमित्त दाता द्वारा अग्नि का समारंभ करने से भी तेजस्काय की विराधना होती है।

वायुकाय की विराधना– दशवैकालिकसूत्र अध्ययन 4 में बताया है कि वस्त्र का पल्ला हिलने से जो वायु उत्पन्न होती है वह वायु जब स्वतंत्र वायु से टकराती है तो वह वायु उसके लिए शस्त्र है। चतुर्थ, षष्ठ एवं अष्टम अध्ययन से ऐसा लगता है कि वायु स्वकाय, परकाय एवं उभयकाय शस्त्र है। निशीथ सूत्र में भी शरीर के स्पर्श से वायुकाय की विराधना होती है, ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है। बाह्य उपकरणों की सहायता से हवा निकलती है,उसी से वायुकाय की विराधना संभव है, शरीर से नहीं।

वनस्पति काय की विराधना– दशवैकालिकसूत्र, अध्ययन 4 में बताया है कि बीज, बद्धमूल वनस्पति, जात वनस्पति, स्तंभीभूत वनस्पति आदि वनस्पति पर चलने, बैठने, सोने आदि से वनस्पतिकाय की विराधना होती है। दशवैकालिकसूत्र (5/1/86) में बताया है कि अगर साधु के आहार में बीज, गुठली आदि निकले तो उन्हें अशस्य सचित्त परिणत समझ कर न खाये, यतनापूर्वक परठ दे। यहाँ पर भी वनस्पति काय की विराधना होगी। गमनागमन, हरी घास, फल, पत्ते, बीज आदि पर पैर आने से वनस्पतिकाय की विराधना संभावित है।

त्रसकाय की विराधना– वैसे तो त्रसकाय के जीव आँखों से दिखाई देते हैं। इनकी विराधना, साधु-साध्वी अपनी आहार-विहार चर्या के समय अप्रमत्त अवस्था में नहीं करते। किंतु द्वीन्द्रिय आदि त्रस जीवों की शरीर के अंगोपांग से, उपकरण आदि के लेने, रखने, बैठने, चलने, फिरने, सोने, आहारादि की क्रियाओं में असावधानी से, अविवेक से या प्रतिलेखन-प्रमार्जन न करने से त्रसकाय की विराधना होने की संभावना है। अतः शरीर के स्पर्श से वायुकाय के अतिरिक्त पाँचकाय की विराधना संभावित है।

(क्रमशः)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (3)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा एवं द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-**सम्पादक**

महाराज साहब,

आपका पत्र अत्यंत गंभीरता से पढ़ा।

मैं स्वीकार करता हूँ कि आपने गत पत्र में जो बात लिखी है,

मेरा जीवन, स्वभाव और विचार उससे

सर्वथा विपरीत ही हैं।

मैं स्पष्टवक्ता हूँ।

मन में जो आता है वह सामने वाले को कहे बिना नहीं रहता।

मैं बहादुर वक्ता हूँ।

सत्य को प्रकट करने के मामले में मैं किसी से नहीं डरता।

संभव है मेरी ऐसी जीवन शैली ने ही

बड़े भैया के साथ मेरे संबंधों में रुक्षता पैदा कर दी हो।

मेरे ऐसे स्वभाव ने ही मेरे हृदय की

संवेदनशीलता को नष्ट कर दिया हो।

मेरे ऐसे विचारों ने ही मुझे

प्रेममय हृदय के स्वामी बनने से रोक दिया हो।

परंतु, मैं आपसे ही पूछता हूँ,

क्या मेरी यह मान्यता सही नहीं है?

"जो हृदय में वही होठों पर" क्या यह जीवन शैली ठीक नहीं है?

स्पष्टवक्ता और बहादुरवक्ता बनना क्या यह अपराध है?

यश,

रोगी की हालत 'ऑपरेशन' कराने जैसी है।

डॉक्टर वह 'ऑपरेशन' करने में दक्ष है।

रोगी स्वयं 'ऑपरेशन' के लिए सहमत है, परंतु
इसका अर्थ यह तो नहीं कि
रोगी को मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रसन्न किए बिना,
ऑपरेशन टेबल पर लेटाकर 'क्लोरोफोर्म' दिए बिना,
डॉक्टर उसका 'ऑपरेशन' शुरु ही कर दे।
नहीं। ऑपरेशन शुरु करने से पहले और ऑपरेशन हो जाने के बाद
डॉक्टर को अनेक प्रकार की प्रक्रियाएँ करनी ही पड़ती हैं,
अनेक प्रकार की सावधानियाँ बरतनी ही पड़ती हैं।
मैं तुमसे यही कहना चाहता हूँ-
सच्ची बात भी यदि अच्छी तरह से नहीं की जाती तो
वह अपना प्रभाव खो बैठती है।
सुयोग्य व्यक्ति के समक्ष भी की जानेवाली सच्ची प्रस्तुति में
यदि मधुरता का अभाव है तो वह प्रस्तुति अर्थहीन बन जाती है।
तुम्हें क्या बताऊँ?
चाहे तुम सामने वाले व्यक्ति को उपहार में सोने का सिक्का देना चाहते हो
परंतु यदि वह गर्म होगा तो क्या तुम मानते हो कि
वह व्यक्ति उसे स्वीकारने के लिए तैयार हो जाएगा?
याद रखना, यदि झूठी बात को भी अच्छी तरह प्रस्तुत करने की कला
दुर्जन आत्मसात् कर लेता है तो
सच्ची बात अच्छी तरह प्रस्तुत करने की कला
सज्जन क्यों आत्मसात् नहीं कर पाता?
अलबत्ता, 'शीघ्र आवेश' में आने के तुम्हारे स्वभाव को मैं जानता हूँ और
''मेरी प्रत्येक मान्यता सही ही है'' इस भ्रम ने तुम्हारे
मन पर अधिकार जमा लिया है, यह भी मेरे ध्यान में है।
और इसलिए हरेक मामले में
तुम 'सच्चे' ही होंगे यह मानने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ।
फिर भी मान लो कि किसी एक बात में तुम सच्चे हो,
पर सामने वाले व्यक्ति से जब तुम उस 'सत्य' को
स्वीकार कराना चाहो तब तुम्हें कौनसी सावधानियाँ बरतनी चाहिए
इस विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें इस पत्रव्यवहार के जरिये

मैं तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ।
तुम्हें यही कहूँगा कि
वृक्ष को हरा-भरा रखने में पानी का
महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, उसी तरह संबंधों को सुमधुर बनाये रखने में प्रेम का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।
सूर्य का प्रचंड ताप कल-कल बहती नदी को सुखा देता है, उसी तरह प्रेमयुक्त संबंधों को रुक्ष बनाने का काम तर्कयुक्त बुद्धि का ताप करता है।
सावधान हो जाओ।

महाराज साहब,
संबंधों में आत्मीयता बनाए रखना तो मुझे भी पसंद है,
परंतु, मेरा प्रश्न यह है कि क्या इस आत्मीयता को बनाए रखने के लिएं
यदि सत्य का बलिदान देना पड़े तो उसके लिए भी तैयार हो जाना चाहिए?
उसके लिए दंभ को स्वीकार करना पड़े तो भी तैयार हो जाना चाहिए?
अंतःकरण की आवाज की उपेक्षा करने के लिए भी सहमत हो जाना चाहिए?

यश,
अनेक व्यक्तियों के जीवन में पैदा हुए संघर्षों को
मैंने अत्यंत करीब से देखा है।
मेरे साधुजीवन की मर्यादा में रहकर मैंने कुछ संघर्षों के समाधान भी दिए हैं।
कहीं कोई व्यक्ति कुछ ही पलों में समाधान हेतु सहमत हो गया
और कहीं कोई व्यक्ति समझाने के लाख प्रयासों के बाद भी
समाधान हेतु इनकार कर बैठा।
इन सभी अनुभवों के निचोड़ के रूप में
मैं तुम्हें एक बात स्पष्ट रूप से कहना चाहूँगा कि
सत्य के नाम पर जहाँ भी संघर्ष होते हैं, वहाँ
प्रायः केन्द्र में 'सत्य' नहीं होता। हाँ, "माना हुआ सत्य" अवश्य होता है।
दंभ को ललकारने की बात जहाँ भी होती है, वहाँ प्रायः केन्द्र में
"दंभ का विरोध" नहीं होता, "व्यक्तिविरोध" अवश्य होता है।
अंतःकरण अथवा अंतरात्मा की आवाज को प्रधानता देने की बात
जहाँ भी होती है वहाँ न अंतःकरण की आवाज होती है न अंतरात्मा की,

वहाँ प्रायः अहंकार की ही आवाज होती है।
मैं तुमसे ही पूछता हूँ
आज तक बड़े भैया के साथ जिन मामलों में
तुम्हारी कहा-सुनी हुई है उन सभी के केन्द्र में क्या सत्य ही था?
निर्दंभता ही थी?
अंतःकरण की आवाज ही थी?
इन प्रश्नों के उत्तर देने में जल्दबाजी करने की बजाय मैं चाहता हूँ कि
तुम शांत बनकर इस विषय पर गंभीरतापूर्वक आत्मनिरीक्षण करो।
तुम्हें स्पष्टरूप से ध्यान में आ जाएगा कि
पैदा हुए संघर्षों में तुम भी कम जिम्मेदार नहीं थे।
अलबत्ता, मन को समाधि से युक्त रखने के लिए,
संबंधों में मधुरता बनाए रखने के लिए,
चित्त को प्रसन्न रखने के लिए,
समस्त जीवों के प्रति मैत्रीभाव को जीवंत रखने के लिए,
सद्गति-परमगति को निकट लाने के लिए,
चार महत्त्वपूर्ण सोपान हैं
उनकी बात तुम अच्छी तरह समझ लो।
मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि उनको समझ लेने के बाद
तुम कहीं भी संघर्ष में निमित्त नहीं बन सकोगे,
तुम्हारा मन आवेशग्रस्त नहीं बन सकेगा,
शत्रुता का भाव तुम्हारे मन पर अधिकार नहीं जमा सकेगा।
तुम्हें यही कहूँगा कि
कुछ समय के लिए भूतकाल को भूल जाओ।
न्याय-अन्याय की बातों को एक कोने में रख दो।
"सत्य को जीवंत रखना ही चाहिए।" तुम्हारे
इस आग्रह को स्मृति में से निकाल दो।
चार सोपानों की बात तुम जैसे-जैसे समझते जाओगे
वैसे-वैसे तुम्हें स्वयं ही पता चलेगा कि
तुम कहाँ गलत थे?
तुम कहाँ जल्दबाजी कर बैठे थे?

तुम कहाँ आवेश के शिकार बन गये थे?

सही होने पर भी तुम कहाँ गलत मान्यताओं में उलझ गये थे?

याद रखना,

"दूध से तंदुरुस्ती" यह तुम्हारा सत्य हो सकता है।

"चावल से तंदुरुस्ती" यह सामने वाले का सत्य हो सकता है।

"रोटी से तंदुरुस्ती" यह मेरा सत्य हो सकता है।

परंतु,

"प्राणवायु से तंदुरुस्ती" यह तो सभी का सत्य है।

क्या तुम्हें लगता है कि सभी के सत्य को लेकर मतभेद हो सकता है? (क्रमशः)

DEVOTION

Sh. Harish Kavad

Devotion is the thread that joins the ātmā with paramātmā. Devotion towards Guru is the state of total surrender under him. A devoted person reflects the voice of GURU. Surrendering yourself unconditionally towards your Guru would certainly brighten and lighten your soul to achieve its ultimate goal- 'MOKSHA'.

Jainism is the other word of truth and non-violence, to achieve the ultimate destination of our soul we only have to have total devotion towards the Guru because he will lead us from the path of darkness to the magical world of enlightenment . Devotion itself means divinity, hence, to approach on that path means sowing the seeds of salvation. Devotion towards the Guru elevates the state of your mind towards your soul. The time we take to know our own soul sometimes takes in-numerable births but with devotion realization begins in an instant. Devotion has innumerable benefits, for example 1. Evaluation, 2. Guidance, 3. Realization, 4. Destination of our Soul. Become a true dvotee and you are not far from the parmātmā. Thus devote and support the cause of your precious soul.

-Guru Hasti Thanga Maaligai,

3, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056 (T.N.)

कविता

गुरु हस्ती शतक (3)

श्री प्रसन्नचन्द बाफना

सघं समर्पित शासनसेवी गुरुभक्त श्रावकरत्न श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना ने अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में युगमनीषी अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज पर 108 पद्यों की रचना की है। उन्होंने इस काव्य रचना में 'नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ को आधार बनाया है, जिसकी पृष्ठ संख्या साथ में अलग से दी जा रही है।

पृ.सं.

इकतीस चौमासा माधोपुर आना, पोरवाल समाज को खूब जगाना। 180
धर्म को व्यवहार में अपनाना, उपकार आपके बहु विध नाना। ।77। 181
ब्यावर चौमासा बाड़मेर पधारे, आहोर गोदन में भण्डार संभारे। 184/
जोधपुर माणकमुनि संथारा धारे, पाथेय देने किया उग्र विहारे। ।78। 185
जयपुर में हुआ तप महोत्सव, इचरजकंवर के एक सौ पैंसठ। 182/
जोधा-नगरी दीक्षा महोत्सव, महेन्द्र बन गये मुनिवर श्रेष्ठ।।79। 184
बालोतरा अजमेर का चौमासा, शेषकाल बड़लू का वासा। 187/
पूज्य नानालालजी पधारे खासा, मैत्री सम्बन्धों को दिया तरासा।।80। 189
अब आप पालांसनी पधारे, आबड़ कुल की भावना वधारे। 190
माघ शुक्ला दसमी जयकारे, गौतम बन गये शिष्य दुलारे।।81। 190
स्वागत अभिनन्दन और जलसा, निर्ग्रन्थ संस्कृति में लगता फलसा। 197
विद्वत् परिषद का गठन विशेषा, अहिल्या नगरी इन्दौर का चौमासा।।82। 198
धुलिया लासलगांव खानदेशा, छत्तीस का यह जलगांव चौमासा। 200/
महाराष्ट्र में स्वाध्याय सुवासा, विद्यापीठ से जग गई नई आशा।।83। 208
कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश को फरसा, अल्प-आहार कभी उपवासा। 211/
सैंतीस का हुआ मद्रास चौमासा, चिर प्रतीक्षित फल रही आशा।84। 218
अड़तीस रायचूर का चौमासा, जयकारों से गूंजा आकाशा। 226
चातुर्मास सफलता का रासा, व्रत तप आराधन हुआ खासा।।85। 227
चार वर्ष में दो चातुर्मास पाना, जलगांव का है भाग्य सराहना। 231

स्वाध्यायशालाओं की थापना, तप संवर की विशेष आराधना।।86। 231
इन्दौर, उज्जैन अब राजस्थान, रामगंज अनन्तपुरा का स्थान।232/
देवी बोली मत करो हिंसा नादान, सुनो इन्द्र पूज्य का फरमान ।।87। 236
दो हजार चालीस जयपुर चौमासा, मुनि बने प्रमोद संघ की आशा।239/
किशनगढ़, अजमेर, मेड़ता फरसा, बड़लू को अवसर फिर खासा।।88।242/
आचार्य पद्मसागरजी दरसन आये, गुणिषु प्रमोदं मन को भाये। 246
पूज्य-पाद के श्रीचरणों में हरसाये, साधना का मार्गदर्शन पाये।।89। 246
दो हजार इकतालीस का वासा, पट्टनगर रत्नसंघ चौमासा। 247
हिंसा का उपाय नहीं प्रतिहिंसा, परस्पर सद्भाव का संदेशा।।90। 250
स्वस्मिन् स्थितः स्वस्थः फरमाया, संथारा का समय नहीं आया। 250
संथारा स्थल का संकेत बताया, संघ की चिन्ता गई विसराया।।91। 250
चार दो का बड़लू चौमासा, पीपाड़ हो गया अगला वासा।255/
जोधपुर में जिनवाणी वर्षा, सुधारवाद अधःपतन का रासा।।92। 264
चार चार अजमेर की धरती, किशनगढ़ हुई पार्श्व जयन्ती।264/
गुरु हस्ती की जन्म जयन्ती, शीलव्रत धारा बाईस दम्पती।।93। 267
जयपुर से माधोपुर पधारे, चार पांच का चौमासा स्वीकारे। 269
कोसाना में हुई जय जय कारे, गुरुवर पधारे तारण हारे।।94। 275
अहिंसा अपरिग्रह अंगभूत बताया, पीपाड़ होकर जोधाणा आया।276/
उपनगरों में बनी उत्सव-छाया, अन्तिम चौमासा पाली लुभाया।।95।279/
कोने-कोने से दर्शनार्थी आया, अस्सी एक वां जन्मदिवस मनाया। 284
होली चौमासा सोजत सुखदाया, संत-सतियों को निमाज बुलाया।।96। 86/
निमाज नगर में उत्सव बधाई, घर बैठे ही गंगा आई। 290
उपचार की अब करो विदाई, समय सामने दिखता भाई।।97। 289
निमाज में संत-सतियों का तांता, रच रहा यहां नव इतिहासा।304/
हर भक्त बार-बार यहाँ आता, अतृप्त रहती नयनों की भाषा।।98।302/
संघ का मान सदा तुम रखना, रत्न पूज्य के बोल निभाना। 293
अन्त भोलावण संतों को नाना, शान्ति मिले मुझे ऐसा करना।।99। 293
संध्याकाल जीवन का डेरा, परोक्ष प्रत्यक्ष भूल कवेरा। 291
क्षमायाचना संयम सवेरा, आत्म शुद्धि भाव है मेरा।।100। 291

खाली हाथ नहीं जाना है, मनोरथ सफल बनाना है। 291
प्रायश्चित्त तेला करना है, आगे ही आगे बढ़ जाना है। ।101। 296
कृष्णा दशमी तेला धारा, पारणक में संलेखना संथारा। 297
बैशाख पुष्य अष्टमी रविवारा, शुक्ल पक्ष सीझा संथारा।।102। 307
धर्म पंथ की दीवारें हटती, मुस्लिम-समाज ने की अनुभूति। 307
संथारा तक करी थी भक्ति, निमाज बन गया अहिंसा जगति।103। 307
सिंधु में स्वयं को बिन्दु मानना, संघ सेवक निज पहचान बताना। 311
शोभा शिष्य लिख गुरु को बखाना, प्रभुता में लघुता शीश नमाना।104। 311
इक्यासी वर्ष जीवन का चरखा, इकोतर वर्ष संयम की बरखा। 283
इकसठ वर्ष आचार्य पद महखा, आराधक मरण स्वर्णिम लेखा।।105। 284
जीवन पर्यन्त निर्दोष संयम पाला, ध्यान-मौन, स्वाध्याय था आला।
आगम-साहित्य सेवा की माला, जैन इतिहास का किया उजाला।।106।
व्यसन मुक्ति और प्रामाणिकता, जीवन निर्माण शिक्षा की महत्ता।
सामायिक से ही जीवन महकता,स्वाध्याय बिना मन सूना लगता।।107।
आज भी आप हैं प्रेरणा-पुँज, स्वर्गगमन का नहीं है रंज।
अमर आपका जीवन्त कुँज, सामायिक-स्वाध्याय की हो रही गूँज।।108।

हस्ती शतक जो पाठ पढ़े, सब दुःख संकट दूर टले।
सुख सम्पत सौभाग्य बढ़े, मन वांछित सब काम फले।।

-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 1, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.)

मुक्तक

दीक्षा : मुक्ति का द्वार

श्री मगनचन्द जैन

(1)

'दीक्षा ' मुक्ति का प्रवेश द्वार है, जीवन-निर्माण का श्रेष्ठ मार्ग है।
गुरु-चरणों में होता है दीक्षित जो, वह होता भव-सागर से पार है।।

(2)

राग से विराग की ओर बढ़ना वैराग्य भाव है,
घर-बार छोड़ सत्संग करना दीक्षा का चाव है।
भव्य जीव की पुण्यवानी होती है जब,
तभी जगता उसके अन्तर का स्वभाव है।।

-से.नि. अध्यापक, ग्राम-फाजिलाबाद (हिण्डौन), करौली (राज.)

युवा-स्तम्भ

युवापीढ़ी को आचार्य हस्ती की प्रेरणा

डॉ. दिलीप धींग

जीवन के स्वर्णिम कालखण्ड का नाम है- युवावस्था। भरपूर ऊर्जा और गतिशीलता की इस अवस्था में व्यक्ति तरह-तरह के सपने देखता है और उन्हें साकार करने के लिए दिन-रात एक करता है। इस समायावधि में धनार्जन, परिवार का पोषण, सामाजिक दायित्व और धार्मिक कर्तव्यों के बीच सामंजस्य बिठाना होता है। लेकिन आधुनिक शिक्षा और नूतन वातावरण में पले-पुसे युवाओं के समक्ष जैसे धनार्जन और बीवी-बच्चों तक सीमित परिवार से आगे के कर्तव्य गौण ही नज़र आते हैं। जीवन की जोशीली रफ्तार में वे प्रायः अपने होश को भुला बैठते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें माता-पिता, बड़े-बुजुर्गों, अनुभवियों और गुरुजनों के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। समाज और देश के निर्माण में युवाओं की अपरिहार्य भूमिका और महत्ता को समझते हुए समय-समय पर सन्तों और महापुरुषों ने भी युवापीढ़ी को हितकारी शिक्षाएँ दी हैं।

दस वर्ष की बालवय में मुनि-जीवन अंगीकार करने वाले और यौवन की दहलीज़ पर मात्र उन्नीस वर्ष की उम्र में संघ-नायक के पद पर आरूढ़ होने वाले आचार्य हस्ती की प्रभावकता और प्रभावशीलता का एक कारण उनकी बाल्यावस्था में साधना का अरुणोदय होना था। जिनाज्ञा के अनुरूप वे क्षण-क्षण का महत्त्व समझते थे और अप्रमत्त होकर अपने सभी प्रकार के कर्त्तव्यों को निष्ठा से पूरा करते थे। वे समाज और समाज की युवापीढ़ी के जीवन का अवलोकन करते और उनका समयोचित मार्गदर्शन करते थे। उनके मार्गदर्शन में स्वाध्याय और सामायिक के अलावा सदाचार, व्यसनमुक्ति, अनुशासन, सादगी, शिष्टाचार, विनय, सेवा, कर्तव्य-परायणता, कुरीति-त्याग आदि ऐसे जीवन-निर्माणकारी विषयों का समावेश रहता था, जो जीवन के मध्याह्न को हरा-भरा, खुशहाल और निहाल कर देने वाला होता था। आचार्य हस्ती एक अप्रमत्त साधक और ज्योतिर्धर सन्त थे, इसलिए उनकी प्रेरणाओं का असर होता था। फलस्वरूप बड़ी संख्या में युवा उनसे

अनुप्रेरित होकर अपने जीवन को नये रंग ओर नई रोशनी से सजाते थे। युवापीढ़ी को आचार्य हस्ती की कुछ प्रेरणाओं की यहाँ चर्चा की जा रही है।

सामायिक

आचार्य हस्ती हर वर्ग और पीढ़ी के लिए सामायिक आवश्यक मानते थे। युवा जीवन में व्यस्तताएँ काफी होती हैं। उन व्यस्तताओं में भी समय निकालकर नियमपूर्वक सामायिक करने वाला कई प्रकार के तनावों और व्यग्रताओं से बचा रहता है। आचार्यश्री जहाँ भी जाते, युवा भाई-बहिनों को सामायिक की प्रेरणा देते। अनेक युवा, जो कहते थे कि उन्हें पलभर की फुर्सत नहीं है, सामायिक करने लग गये और बाद में अपना अनुभव बताते कि सामायिक उनकी दिनचर्या का अहम् हिस्सा है। इसके बावजूद जो युवा नित्य सामायिक का नियम नहीं ग्रहण कर पाते थे, उन्हें साप्ताहिक अथवा माह में निर्धारित संख्या में सामायिक की प्रेरणा करते थे। जो वैसा भी नहीं कर पाते थे, आचार्यश्री उन्हें नवकार महामंत्र के जप-ध्यान का नियम करवाते थे। आचार्यश्री व्यक्ति की क्षमता, व्यवसाय आदि का ध्यान रखते और आत्म-साधना में क्रम से आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे। जैसे बूंद-बूंद से घड़ा भरता है और थोड़ी-थोड़ी बचत से काफी पैसा बचाया जा सकता है वैसे ही नियमित थोड़ी-थोड़ी साधना से भी जीवन को सजाया-सँवारा जा सकता है।

स्वाध्याय

आचार्य हस्ती ने जनजीवन में व्याप्त अज्ञान और उससे उपजी समस्याओं को देखा। तदनुरूप सामायिक के साथ ही उन्होंने स्वाध्याय पर भी जोर दिया। युवापीढ़ी में संस्कार निर्माण के सशक्त माध्यम के रूप में उन्होंने स्वाध्याय को स्थापित किया। युवा वर्ग में बाजारू साहित्य के प्रति आकर्षण को खतरनाक बताते हुए आचार्य हस्ती प्रेरणा देते हैं- "कामोत्तेजक, जासूसी और फूहड़ उपन्यास नहीं पढ़ने चाहिये। इस तरह के निकम्मे उपन्यास पढ़ने से दिमाग पर उल्टा असर होता है। समय और शक्ति का भी अपव्यय होता है। गन्दा साहित्य पढ़ने से श्रद्धा और विनय पैदा नहीं होते हैं। इसकी बजाय यदि आध्यात्मिक ग्रंथ, सत्साहित्य और महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ेंगे तो उनसे केवल मुनाफा ही मुनाफा होगा।"[1] इस प्रकार आचार्यश्री की सत्प्रेरणा से युवाओं में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ी। वे न केवल

धार्मिक ज्ञान के जानकार हुए, अपितु बड़ी संख्या में युवक-युवतियाँ प्रतिवर्ष पर्युषण में स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने जाने लगे। व्यावहारिक जीवन में अपने-अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ तरुण स्वाध्यायियों की सेवाओं से धर्म और संस्कृति के चहुँमुखी विकास की राह प्रशस्त हुई।

श्रुतसेवा

शास्त्र और शास्त्रज्ञान की उपेक्षा से आचार्य हस्ती के मन में व्यथा रहती थी। वे चाहते थे कि युवावस्था से ही श्रुतज्ञान की आराधना की जानी चाहिये। शिक्षित युवावर्ग में धार्मिक साहित्य के प्रति कम रुचि को देखकर एक बार उन्होंने व्यथा प्रकट करते हुए कहा था- ''हमारे पूर्वाचार्यों, सन्तों और पूर्वजों ने हमारे धर्मशास्त्रों के संरक्षण में कितना परिश्रम किया। पर आज हमारे शिक्षित नवयुवकों को भाई-बहिनों को उन धर्मशास्त्रों-धर्मग्रंथों को उठाकर देखने की भी फुर्सत नहीं है, धर्मशास्त्रों को पढ़ने में रुचि नहीं है।''[2] श्रुतज्ञान के संरक्षण-संवर्धन, अध्ययन-अध्यापन और प्रचार-प्रसार के लिए आचार्य हस्ती ने काफी कार्य किया। स्वाध्यायी के साथ ही विद्वानों के निर्माण के लिए उनके प्रयासों को उल्लेखनीय सफलता मिली। आचार्यश्री ने स्वाध्यायियों और विद्वानों को 'शास्त्रधारी सैनिक' सम्बोधन देकर समाज में उनका विशिष्ट महत्त्व स्थापित किया और उन पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी भी डाली। युवा संगठनों को श्रुतसेवा की दिशा में कार्य करना चाहिये अथवा इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को सहयोग करना चाहिये। आचार्य हस्ती के शब्दों में- ''युवक संघ की सामूहिक आवाज होनी चाहिये कि हम धर्म-ध्वज को कभी नीचा नहीं होने देंगे तथा नित स्वाध्याय करके ज्ञान की ज्योति जलाएँगे। ऐसा संकल्प लेने वाले अनेक साधक हो गये हैं, जिनके श्रुतज्ञान के बल से शासन को बल मिला।''[3]

व्यसनमुक्ति

किसी भी समाज के यौवन को जब व्यसन जकड़ लेते हैं, तो वह समाज दरिद्रता, अव्यवस्था और अवनति के गर्त में चला जाता है। हर युग में जैनाचार्य मानवमात्र को सप्त व्यसनों (मांसाहार, मद्यपान, परस्त्री/परपुरुष गमन, वेश्यागमन, शिकार, चोरी और जुआ) से दूर रहने की प्रेरणाएँ देते रहे हैं। आचार्य हस्ती ने भी अपने जीवन में व्यसनमुक्ति आन्दोलन को अभियान

के रूप में आगे बढ़ाया। युवाओं को प्रेरित करने के लिए उन्होंने सप्त व्यसनों के त्याग पर काव्य-रचना भी की। वे कहते हैं- ''व्यसन का अर्थ ही विपत्ति है। जिससे धनहानि हो एवं जीवन दुःखमय हो वैसी कोई कुटेव नहीं रखनी चाहिये।''[4] शिक्षित लोगों में भी व्यसन देखकर आचार्यश्री कहते थे कि जिस प्रकार अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया जाता है, उसी प्रकार सत्यवादी, निर्व्यसनी और अनुशासित विद्यार्थियों का भी सम्मान होना चाहिये।[5] अनेक विशेष अवसरों पर आचार्यश्री सामूहिक नियम करवाते थे, उनमें व्यसनमुक्ति का समावेश रहता था। उल्लिखित सात व्यसनों के अलावा बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तम्बाकू, भांग आदि बुरी आदतों को भी आचार्यश्री छुड़वाते थे। वस्तुतः व्यसनमुक्ति व्यक्ति-निर्माण, समाज-जागरण और राष्ट्र-उन्नति का सशक्त माध्यम है। जैन समाज की सम्पन्नता और शान्तिप्रियता का एक कारण इस समाज का व्यसनमुक्त होना है। ''व्यक्ति जागे, समाज जागे; व्यसनमुक्त रहेगा आगे।''

फैशनमुक्ति

आधुनिक समाज में व्यसन की तरह फैशन भी युवक-युवतियों को दिग्भ्रमित कर रहा है। फैशन के तीन कारण दिखाई पड़ते हैं- फैलता बाजारवाद, बढ़ता उपभोक्तावाद और नवधनाढ्य वर्ग के नखरे। एक ओर कुछ नवयुवतियाँ अपनी निर्धनता में पूरे वस्त्र नहीं पहन पाती हैं, दूसरी ओर कुछ नवयुवतियाँ आधे-अधूरे वस्त्र पहनकर अपने धन और यौवन का अभद्र प्रदर्शन करती हैं। नौजवान भी फैशन की गिरफ्त में अपने जीवन की दुर्लभ उम्र को भुलावे में खत्म कर रहे हैं। वक्त और व्यक्ति पर सादगी और सदाचार का स्थायी प्रभाव होता है। आचार्य हस्ती कहते हैं- ''अधिकांश नवयुवक अपने आपको विशिष्ट स्थिति का अथवा बड़े घर का सदस्य सिद्ध करने की भावना से भोगोपभोग, प्रसाधन, फैशन आदि की सामग्री पर फिजूल खर्च करते हैं। उनकी देखादेखी साधारण घरों के युवक भी फैशन पर अपनी हैसियत से अधिक व्यय करने लगे हैं, जो किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है।''[6] इस प्रकार फैशन से संसाधनों का अपव्यय और अनुचित सामाजिक स्पर्धा पैदा होती है। फैशनमुक्ति को उसके व्यापक अर्थों में ले जाकर आचार्यश्री युवकों को चमड़े व हिंसक वस्तुओं के त्याग की प्रेरणा

करते थे तथा सड़कों पर नाचने की मनाही भी करते थे। इसी प्रकार वे युवाओं को आतिशबाजी नहीं करने और होली नहीं खेलने की प्रेरणाएँ भी देते थे।

अच्छी संगति

जीवन को सजाने-संवारने के लिए अच्छी संगति बहुत आवश्यक है। विद्यालय और महाविद्यालय में ऐसे विद्यार्थियों की सोहबत करनी चाहिये जो शिष्ट, संस्कारित, सदाचारी और निर्व्यसनी हों। सदाचार को संगति से जोड़ते हुए आचार्य हस्ती कहते हैं- ''सदाचार जीवन को उन्नत बनाता है। बुरे कार्यों का त्याग और जीवन में अच्छे कार्यों का ग्रहण करना ही सदाचार है। यह सदाचार हमारी अच्छी-बुरी संगति पर निर्भर है। जीवन में हम जैसी संगति करेंगे, वैसा ही हमारा आचार-विचार होगा।''[7] बढ़ती कामुकता को इंगित करते हुए आचार्य हस्ती उसके दो कारण बताते हैं। दुराचारी लोगों की कुसंगति और खानपान सम्बन्धी असंयम।[8] असल में युवाओं में चारित्रिक अवनति और गलत खानपान का एक कारण बुरी संगति है। आचार्यश्री कहते हैं- कुसंग में पड़ा तन-बल, ज्ञान और आत्मगुण सभी का नाश करता है।[9] जिस प्रकार अच्छे संगी-साथियों की संगति से जीवन में अच्छाइयों का विकास होता है, उसी प्रकार सन्तों और सज्जन व्यक्तियों की संगति से भी जीवन का सौभाग्य बढ़ता है। बड़ों का सम्मान, सेवा, विनय, विवेक और श्रद्धा जैसे सद्गुण जीवन में प्रतिष्ठित होते हैं। जीवन की सद्गति और दुर्गति संगति पर निर्भर है।

सेवा में सहभागिता

युवा-शक्ति के सहयोग के बगैर किसी भी समाज और संस्कृति का विकास संभव नहीं है। आचार्य हस्ती युवाओं की रुचि और योग्यता के अनुसार उन्हें समाज-सेवा, मानव-सेवा, जीवदया, लेखन, काव्य-रचना, अहिंसा-प्रचार आदि की पवित्र प्रेरणाएँ देते थे। पद्मभूषण देवेन्द्रराज मेहता ने अपनी युवावय में ही भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति की स्थापना कर दी थी, जिसके पीछे आचार्य हस्ती की प्रेरणा रही। इस समिति के माध्यम से अब तक देश-विदेश में लाखों लोग लाभान्वित हो चुके हैं। आचार्य हस्ती कहते हैं- ''समय के अनुसार समाज-निर्माण का काम करने

में ज्यादा सक्षम तरुण व किशोर हैं, और इस कार्य का अधिक उत्तरदायित्व भी इन पर ही है। संख्या में नौजवान अधिक होते हैं, इसलिए उनका दायित्व अधिक है।''[10] समाज के कार्यों में धन का नहीं, कार्यकर्ताओं का अभाव नज़र आता है। आचार्यश्री युवाओं को सेवाभावना से कार्य करने के लिए अनुप्रेरित करते थे तथा समाज में कार्य करने वालों के मान-मूल्यांकन की प्रेरणा भी देते थे। धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भी वे युवा पीढ़ी को प्रेरित करते थे। वे कहते हैं-''विदेशी प्रचारकों और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को देखते हैं तब विचार होता है कि वे लोग देश, धर्म व समाज के लिए घरबार का मोह छोड़कर जीवन अर्पण कर देते हैं, फिर क्या कारण है कि वीतराग संस्कृति में वैसे कार्यकर्ता आगे नहीं आते। तरुण पीढ़ी इस पर विचार करे, इस कार्य में आगे बढ़े, समाज में ऐसे कार्यकर्ता सुलभ हों, यही शुभेच्छा है।''[11] आचार्य हस्ती के अन्तिम वर्षावास पाली में अक्टूबर 1990 में ''युवापीढ़ी और अहिंसा'' विषय पर विद्वत् संगोष्ठी हुई थी, उसमें उन्होंने अहिंसा की महिमा को युवापीढ़ी से लेकर विद्वत् वर्ग तक प्रसारित किया।

आज समाज के हर क्षेत्र में युवाओं की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता है। युवाओं को धर्म और समाज में सेवा के लिए समय नियोजित करना चाहिये। बड़े-बुजुर्गों का भी यह कर्तव्य है कि जिस प्रकार वे अपने व्यवसाय की विरासत अपने युवा पुत्र को सौंपते हैं, उसी प्रकार धर्म और समाज में भी युवाओं को आगे बढ़ने के लिए उन्हें प्रेरित करें। उत्साही और समझदार युवाओं को पद, मंच, कार्य आदि देने में उदारता बरतनी चाहिये। आचार्य हस्ती की तरुणों को यही प्रेरणा थी कि वे अपनी व्यावहारिक शिक्षा के साथ ज्ञान-ध्यान भी सीखें, पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन के साथ धार्मिक और सामाजिक जीवन की महत्ता भी समझें और उसके लिए समय नियोजित करें। इससे जीवन में समग्रता आएगी तथा चारित्रिक उज्ज्वलता बढ़ेगी।

सन्दर्भ:-

1. नमो पुरिवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 476 2. वही, पृष्ठ 444
3. वही, पृष्ठ 435 4. वही, पृष्ठ 434 5. वही, पृष्ठ 256
6. वही, पृष्ठ 427 7. वही, पृष्ठ 455 8. वही, पृष्ठ 429
9. वही, पृष्ठ 318 10. वही, पृष्ठ 435 11. वही, पृष्ठ 368

-61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004(तमिलनाडु)

नारी-स्तम्भ

दाम्पत्य-जीवन की सफलता

श्रीमती आभा जैन

भारतीय संस्कृति में संबंधों की पवित्रता अनादिकाल से रही है, जिसमें पति-पत्नी, भाई-बहिन, सास-बहू आदि महत्त्वपूर्ण हैं। इन संबंधों की पवित्रता एक-दूसरे के प्रति परस्पर प्रेम, सद्भाव एवं आत्मीयता के आधार पर टिकी है। इन्हीं संबंधों में एक संबंध पति एवं पत्नी का रहा है। यह सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ होता है। इसी कारण संस्कृत में दोनों के लिए एक ही शब्द 'दम्पती' का प्रयोग किया गया है। वास्तव में पति-पत्नी का जीवन एक-दूसरे से प्रभावित होता है। जिस नारी का पति सुखदायी नहीं होता अर्थात् नारी के दुःख-निवारण में अनुकूल सहयोगी नहीं होता, उसका जीवन भारभूत हो जाता है। भोजन, वस्त्र, आमोद-प्रमोद के समस्त साधन विद्यमान होने पर भी वे दुःख रूप बन जाते हैं। इसी तरह पति का सुख पत्नी पर निर्भर है। पति कितना भी सम्पन्न, प्रभावशाली क्यों न हो, परन्तु घर में नारी कलह पैदा करने वाली, रात-दिन नई-नई परेशानियां खड़े करने वाली हो, जिससे क्षण मात्र भी शान्ति का अनुभव न हो तो पति का जीवन दुःखमय हो जाता है। इसके विपरीत बड़ी से बड़ी समस्या अपने पर या अन्य कोई प्रतिकूल परिस्थिति पैदा होने पर पत्नी पति को सांत्वना देती है, धैर्य बंधाती है, सम्बल देती है, स्नेहपूर्ण विश्वास पैदा करती है तो पति के लिए घोर से घोर विपत्ति या बड़े से बड़ा संकट भी तुच्छ प्रतीत होने लगता है। पति-पत्नियों का सहज कर्तव्य हो जाता है कि वे एक-दूसरे के साथ सहयोग करें, एक दूसरे के प्रति प्रामाणिक होकर रहें, एक-दूसरे पर आत्मीयता रखें। पति का कर्तव्य है कि वह पत्नी को धर्म की ओर आगे बढ़ाये, पत्नी का दायित्व है कि वह अपने पति को धर्म की ओर प्रेरित करे।

पति-पत्नी अपने जीवन में धर्म को धारण कर लें तो काफी समस्याओं का सहज ही समाधान हो जाता है। पत्नी चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है और वह चाहे तो घर को नरक के समान भी बना सकती है। हमारे ऋषि-मुनियों ने परिवार को स्वर्गीय सुख प्रदान करने के कुछ ऐसे उपाय बताएं हैं, जिन्हें अपने जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। पति के सामने जब कोई विकट समस्या आ जाए उस समय पत्नी का कर्तव्य है कि वह बहुत अच्छे ढंग से सच्चे मित्र की तरह

आवश्यक परामर्श दे। पति सेवा का कार्य होने पर समर्पण का परिचय दे। सेवा के प्रसंग पर करोड़पति बाप की लड़की होने का गर्व नहीं करे। इसी तरह पति के भोजन के समय माता की तरह अत्यन्त वात्सल्यभाव पूर्वक भोजन कराए। भोजन के साथ घर का कलह नहीं परोसे, उस समय तो हृदय की सद्भावना का अमृत घोल कर स्नेहपूर्वक भोजन कराए। आदर्श नारी अपने पति को भोजन स्वयं परोसे एवं उनकी प्रकृति एवं स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते हुए भोजन की विधि सम्पन्न कराए। आदर्श नारी का एक मौलिक गुण है कि जब पति बाहर से थका हुआ आता है उस समय पत्नी विनम्र व्यवहार के साथ सुमधुर भाषा में उनका स्वागत करे, ताकि उनकी थकावट एवं घबराहट तुरन्त दूर हो जाए एवं पति प्रसन्नचित्त हो जाए।

सन्नारी का नैसर्गिक गुण है कि वह स्वयं धर्म का पालन करे एवं घर में ऐसा वातावरण निर्मित करे, जिससे परिवार संस्कारित बने। स्वयं के आचरण का जो प्रभाव होता है वह स्थायी होता है। संस्कारित नारी क्षमाशील होती है। परिवार में सभी सदस्य भिन्न-भिन्न प्रकृति के होते हैं। उन सभी में क्षमा के इस मौलिक गुण से परिवार में शान्ति का संचार करके वह माहौल को स्वर्गीय आनंद से सराबोर कर सकती है। पति के साथ परिवार का दायित्व भी नारी पर ही निर्भर करता है। पत्नी के दायित्व के साथ पति का भी कर्तव्य होता है कि जिस पिता ने अपने कलेजे के टुकड़े को निकाल कर सारी जिंदगी के लिए समर्पित किया है उसका अपमान न करे। उसके सुख-दुःख का सहभागी बनना, उसकी भावना का खयाल रखना भी पति का कर्तव्य है। पत्नी को कभी व्यंग्य नहीं करे कि 'तुम्हारे बाप ने मुझे क्या दिया?' इस प्रकार की अभिव्यक्ति करना नासमझी है, जिससे सम्बन्धों में दरार उत्पन्न हो सकती है। डॉ. जेम्स कहते हैं-

''पति-पत्नी का संबंध स्नेह, समर्पण व त्याग का सम्बन्ध है। प्रेम और विश्वास की नींव पर टिका यह सम्बन्ध समर्पण और सहयोग से आजीवन दृढ़ रहता है। कभी प्यार की सरस फुहारें पड़ती हैं तो कभी धूलभरी आंधियाँ चलती हैं। कभी शीतल पवन बहती है तो कभी राह कंटीली झाड़ियों से अवरुद्ध हो जाती है, किंतु बुरे वक्त को सहन कर हर हाल में मुस्करा कर जीना ही जीवन है। वास्तव में शादी के बाद का पहला साल गीले सीमेंट से बने फर्श की तरह होता है। जिस पर पड़े निशान इतने गहरे होते हैं कि मुश्किल से मिट पाते हैं।''

आज के आधुनिक युग में जीवन बहुत ही भाग-दौड़ वाला हो गया है। प्रातः काल से ही जीवन की गाड़ी शुरु हो जाती है, जो देर रात तक अविराम गति से

चलती रहती है। जिस परिवार में पति-पत्नी दोनों ही नौकरी धंधे वाले होते हैं वहाँ स्थिति बहुत ही विचित्र होती है। जब शाम को दोनों मिलते हैं, थके हालात में कुछ देर चर्चा हुई या नहीं हुई, कुछ देर सुस्ताए, कुछ देर टी.वी. के आगे बैठे फिर नींद की बाँहों में। इस प्रकार की दिनचर्या में किसी को इतना अवकाश नहीं कि कुछ देर बैठे, विचार-विमर्श करे, बच्चों की दिनचर्या, खेलकूद, पढ़ाई व अन्य गतिविधियों के बारे में गंभीरता से विचार किया जाए। उनके नाश्ते व उनकी रुचि के अनुकूल भोजन आदि पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है।

भौतिकता की चकाचौंध में सामाजिक, पारिवारिक दायित्वों का भली प्रकार निर्वाह नहीं हो पाता है। इस प्रकार की व्यस्तता ने दाम्पत्य जीवन में भी दरार उत्पन्न कर दी है। पुरुष अपनी महिला सहकर्मी व महिलाएँ भी अपने पुरुष मित्रों व पति के मित्रों से संबंध बनाने में पीछे नहीं रहतीं। धीरे-धीरे यह मधुर संबंध जीवन में जहर घोल देते हैं व अच्छे-अच्छे परिवार भटक कर उजड़ जाते हैं। भटकाव भी इस कदर होता है कि अपने आत्मीय की हत्या करने में भी संकोच नहीं होता। आजकल इस प्रकार की घटनाओं में भारी इजाफा हुआ है। अंत में बहुत देर हो जाती है, परिवारों का अंत हो जाता है व छोटे-छोटे बच्चे अनाथ हो जाते हैं। अतएव पति-पत्नी को अपने जीवन की पगडंडी से कभी उतरना या फिसलना नहीं चाहिए, अन्यथा छोटी-सी भूल भविष्य को घनघोर अंधेरे में धकेल देगी।

हम कई मामलों में देखते, सुनते व पढ़ते हैं कि थोड़ी-सी गलती, जल्दबाजी एवं अहं की वजह से कई परिवार टूटे हैं। उनको बाद में पश्चात्ताप के अलावा कुछ भी नहीं मिला है। अतः प्रत्येक दंपती को बहुत ही सूझबूझ से अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। कहीं भी कुछ टूटन की आशंका आने लगे तो अपने को संभाले व सुखद भविष्य के लिए कुछ त्यागने को तत्पर रहे। त्याग की भावना ही आपके सफल दाम्पत्य जीवन की महती आवश्यकता है।

सुखी दाम्पत्य जीवन हेतु ध्यान रखने योग्य बातें-

- पति या पत्नी स्वयं को किसी भी बात के लिए सर्वोच्च न माने। न अपनी बात मनवाने के लिए किसी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाए। जीवन में समझौतावादी नजरिया रखे। एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना रखे।
- घरेलू कार्य के लिए केवल महिलाएँ ही जिम्मेदार नहीं हैं। नवजात शिशु है, तो महिला को पति उसके कार्य में सहयोग करे। यहाँ सहयोग का तात्पर्य यह

नहीं कि आप घरेलू कार्य करें वरन् अपना काम स्वयं करें। हर कार्य के लिए पत्नी पर निर्भर नहीं करें।

- पति-पत्नी अपने विवाह पूर्व के संबंधों की जानकारी एक-दूसरे को न दें। चाहे आपके मध्य असीम प्रेम क्यों न हो। कभी-कभी ऐसी बातें भावना में बहकर की जाती हैं जो कदाचित् आपके सुखी दाम्पत्य जीवन के भविष्य को अंधकार में धकेल सकती है।
- पत्नी अपने पति के परिवारजनों से बहुत ही विनम्रता व आदरपूर्वक रहे। घर के सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करे। ऐसा न हो कि सिर्फ पति व बच्चों के प्रति ही पूर्ण समर्पित रहे।
- पति-पत्नी दोनों अपने कार्यालय में महिला व पुरुष सहकर्मी से मर्यादित व संयमित भाषा में ही बातचीत करें। ज्यादा हँसी-मजाक संदेह को जन्म देते हैं, अतः सतर्क रहें।
- किसी भी पक्ष को अपने जीवनसाथी की आलोचना किसी अन्य व्यक्ति से नहीं करना चाहिए, अन्यथा दूसरे व्यक्ति उसका अनुचित लाभ उठा सकते हैं। जो भी बात हो उसका निराकरण परस्पर विचार-विमर्श से ही करें।
- पति-पत्नी किसी अन्य से किसी प्रकार का कोई संबंध स्थापित न करें। आजकल दाम्पत्य जीवन में दरार आने के कारणों में इस बात की अहम भूमिका है।

दाम्पत्य जीवन को सुन्दर बनाने के कुछ बिन्दु-

1. समय को बर्बाद मत करो। कुछ-कुछ रचनात्मक कार्य करते रहो।
2. हमेशा सकारात्मक सोचो।
3. एक दूसरे को सत्कार्य हेतु एवं धर्माराधना हेतु प्रोत्साहित करते रहो।
4. एक दूसरे की बात पर ध्यान दो।
5. बिना शर्त की माफी व स्नेह दो।
6. हमेशा प्रसन्नचित्त रहो।
7. किसी अन्य के सामने एक दूसरे को नीचा नहीं दिखायें, न ही आलोचना करें।

सुखी दाम्पत्य जीवन का यही है आधार।
विश्वास, समर्पण, सहनशीलता, सहानुभूति, समझौता व प्यार॥

-44, बन्दा मार्ग, भवानी मण्डी (राज.)

स्वास्थ्य विज्ञान

स्वास्थ्य और सामायिक (2)

डॉ. चंचलमल चोरडिया

(मार्च अंक से आगे)

विकार रोग का सूचक है

स्वास्थ्य का अर्थ है- विकार मुक्त अवस्था। रोग का तात्पर्य है- विकारयुक्त अवस्था। जितने ज्यादा विकार उतने ज्यादा रोग। जितने विकार कम उतना ही अच्छा स्वास्थ्य। विकार का मतलब है अनुपयोगी, अनावश्यक, व्यर्थ के विजातीय तत्त्व। जब ये विकार स्वरूप विजातीय तत्त्व शरीर में होते हैं तो शरीर रोगी बन जाता है। परन्तु जब ये विकार मन, भावों और आत्मा में होते हैं तो क्रमशः मन, भाव और आत्मा विकारी अथवा अस्वस्थ कहलाते हैं। विकारी अवस्था का मतलब है विभाव दशा अथवा विपरीत स्थिति। जितने-जितने विकार उतनी-उतनी विभाव दशा।

रोग का प्रारम्भ आत्म-विकारों से

शरीर, मन और आत्मा का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है तथा सभी एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। मन, वचन और काया आत्मा की अभिव्यक्ति के तीन सशक्त माध्यम हैं। मन दूषित होने से वाणी और काया बिगड़ जाती है अर्थात् स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। यादि शरीर बिगड़ा हुआ हो तो मनोवृत्तियाँ दूषित हो जाती हैं। अतः शरीर, मन और वाणी का सन्तुलन ही वास्तविक स्वास्थ्य होता है।

आत्मिक ऊर्जा की उपेक्षा अनुचित

स्वास्थ्य के प्रति हमारा अज्ञान अथवा अधूरा ज्ञान रोगों का मूल कारण है। रोग की चार अवस्थाएँ होती हैं- शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आत्मिक। जिस अवस्था का रोग हो, जब तक उसके अनुरूप उपचार नहीं किया जाता है तब तक रोग से मुक्ति सम्भव नहीं। आज प्रायः मानसिक और आत्मिक रोगों को तो हम रोग मानते ही नहीं, क्योंकि मन और आत्मा की शक्ति का हमें न

तो सम्पूर्ण ज्ञान ही है और न हम उसको जानने एवं समझने का अपेक्षित प्रयास ही करते हैं। इसके विपरीत आत्मबल और मनोबल की क्षमताओं से अपरिचित होने के कारण उनका अवमूल्यन कर दुरुपयोग करते हम संकोच नहीं करते। शरीर से मन और मन से भावना की शक्ति बहुत ज्यादा होती है और भावना से आत्मा की शक्ति अनन्त गुणा ज्यादा होती है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें चलने-फिरने में भी अत्यधिक कष्ट होता है, परन्तु सामने मृत्यु का प्रसंग या भय जैसी परिस्थिति उत्पन्न होने पर वे दौड़ने लग जाते हैं? शारीरिक वेदना से तड़पने वाले, मृत्यु की शय्या पर अन्तिम श्वास गिनने वालों से जब लम्बे समय पश्चात् उनका कोई स्नेही परिजन मिलता है, तो क्षण मात्र के लिए सारे दुःख-दर्द कैसे भूल जाते हैं? खुशी के प्रसंगों पर रोगी रोगों को क्यों भूल जाते हैं? सभी भौतिक सुख-सुविधाओं को त्यागने वाले आत्मबली, अध्यात्म योगी, सन्त, मुनिजन इतने तनावमुक्त, प्रसन्नचित्त, शान्त, निर्भय, सुखी, सन्तोषी कैसे रहते हैं?

उचित प्राथमिकताओं का चयन आवश्यक

हमारे चिन्तन का केन्द्रबिन्दु है- भावना का परिष्कार। आज की सबसे बड़ी समस्या है भावनाओं का असंतुलन या आवेग। इसी कारण सारे मनोविकार पैदा होते हैं। मन भी तन के सृजन में सहयोगी होता है। इन्द्रिय और मस्तिष्क के कार्यों के संचालन में उसकी अहं भूमिका होती है। सारे विचारों, चिन्तन, मनन, सोच, इच्छाओं, कल्पनाओं, कामनाओं, स्मृतियों की प्रवृत्तियों के संचालन में मन का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अतः मनोविकारों से बचना स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। मन स्वच्छन्द और अनियन्त्रित होता है। परिणामस्वरूप जो मन चाहता है, जो मन को अच्छा अथवा अनुकूल लगता है, प्रायः हम अपनी जीवन चर्या में ऐसी बातों को प्राथमिकता देते हैं, भले ही वे हमारे शरीर के लिए अनुपयोगी अथवा हानिकारक ही क्यों न हों। हम स्वाद के वशीभूत हो ऐसी चीजें खाते संकोच नहीं करते जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। आंखों से ऐसे दृश्य देखते हैं जो विकार पैदा करते हैं अथवा जिन्हें नहीं देखना चाहिए। हमारी प्राथमिकताएँ, आवश्यकताओं के अनुरूप हों, न कि इच्छाओं के अनुरूप।

स्वास्थ्य का अस्तित्व जब तक शरीर में आत्मा होती है, तभी तक होता

है। आत्मा ही अपनी चैतन्य ऊर्जा द्वारा शरीर, मन और भावों का सृजन करती है। अतः स्वस्थता का मतलब है आत्मा की शुद्धता, पवित्रता। अतः उपचार आत्मा को अपवित्र बनाने वाला कदापि नहीं होना चाहिए। यही हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आत्मा की उपेक्षा अथवा उसको विकारी बनाना हमारे गलत सोच का प्रतीक होती है। आभूषण की शोभा शरीर पर कपड़े पहनने के बाद धारण करने से होती है। जिस प्रकार कपड़ों के बिना आभूषण पहनने वाला हँसी का पात्र ही होता है, ठीक उसी प्रकार आत्मा को विकारी बनाकर शारीरिक स्वस्थता को प्राथमिकता बुद्धिमत्ता कैसे हो सकती है?

सामायिक क्या है?

रागद्वेष के प्रसंगों पर मध्यस्थ रहना, माध्यस्थ भाव रखना, किसी भी प्रकार की मन, वचन और काया से प्रतिक्रिया न करना सामायिक है। प्राणिमात्र को अपने जैसा समझते हुए सब कार्य करना ही सामायिक होता है। जिस प्रवृत्ति से पापों से निवृत्ति, अशुभ कर्मों से सुरक्षा तथा समभाव की प्राप्ति हो उस साधना को सामायिक कहते हैं। सामायिक दो प्रकार की होती है-1. द्रव्य सामायिक एवं 2. भाव सामायिक।

भाव सामायिक

प्रतिकूलता एवं अनुकूलता, लाभ-हानि, संयोग-वियोग, सुख-दुःख के प्रसंगों में किसी भी प्रकार की मानसिक, वाचिक अथवा कायिक प्रतिक्रिया न करते हुए ज्ञाता द्रष्टाभाव से समभाव का आचरण करना भाव सामायिक है।

द्रव्य सामायिक

जिस साधना द्वारा भाव सामायिक की प्राप्ति हेतु कम से कम 48 मिनट तक बाह्य साधन और अंतरंग साधनों द्वारा समभाव की अनुभूति, अभ्यास और आचरण किया जाता है, उस साधना को द्रव्य सामायिक कहते हैं। जिस प्रकार घड़ी में एक बार चाबी भरने के पश्चात् लम्बे समय तक वह कार्य करती है, उसी प्रकार प्रतिदिन सामायिक करने से साधक बाकी पूरे समय जीवन व्यवहार में समभाव रख सके, यही द्रव्य सामायिक करने का उद्देश्य होता है। जो द्रव्य

सामायिक हमें भाव सामायिक तक न पहुँचा सके, वह मिथ्या सामायिक ही होती है।

श्रावक के 12 व्रत होते हैं- 5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत और 4 शिक्षा व्रत। जो नियम अणुव्रतों के पालन में सहायक होते हैं उन्हें गुणव्रत कहते हैं। शिक्षा का मतलब, शिक्षण अर्थात् अभ्यास होता है। जिनके द्वारा धर्म की शिक्षा ली जाए, धर्म का अभ्यास किया जाए, ऐसे नियम शिक्षाव्रत कहलाते हैं। सामायिक श्रावक का नौवां व्रत एवं प्रथम गुणव्रत है। जैन साधक एवं श्रावक के लिए प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व एवं सायंकाल सूर्यास्त के तुरन्त पश्चात् प्रतिक्रमण द्वारा अपने दोषों की शुद्धि करना आवश्यक होता है। 'सामायिक' प्रतिक्रमण का प्रथम आवश्यक है।

सामायिक के पहले आठ व्रत साधक की सांसारिक वासनाओं के क्षेत्र को सीमित बनाने के लिए एवं सामायिक करने की योग्यता पैदा करने के लिए हैं। अतएव जो साधक सामायिक से पहले के अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि आठ व्रतों को भली-भाँति स्वीकार करते हैं, उनकी सांसारिक वासनाएँ सीमित हो जाती हैं और हृदय में आध्यात्मिक शान्ति के सुगन्धित पुष्प खिलने लगते हैं। यही नहीं, उनके अन्तर्जगत् में यथावसर कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का सुमधुर विवेक भी जागृत होने लगता है। जो मनुष्य चूल्हे पर चढ़ी हुई कढ़ाई में उफनते दूध को शान्त रखना चाहता है, उसके लिए यह आवश्यक होता है कि वह कढ़ाई के नीचे से जलती हुई आग को अलग कर दे। आग को तो अलग न करना, केवल ऊपर से दूध में पानी के छींटे दे-देकर उसे शांत करना, किसी भी दशा में सफल नहीं होता। क्रोध, मान, माया, लोभ, छल, कपट, अभिमान, अत्याचार आदि कषायों के दुर्गुणों की आग जब तक साधक के मन में जलती रहेगी, तब तक सामायिक के छींटे कभी भी उसके अन्तर्हृदय में स्थायी शान्ति नहीं ला सकेंगे।

द्रव्य सामायिक की महत्ता

काम करने का महत्त्व उतना नहीं होता है, जितना कि काम को ठीक ढंग से करने का होता है। जीवित साधना ही साधना होती है, मृत-साधना का कोई मूल्य नहीं होता है। अतः सामायिक हेतु द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव शुद्धि

आवश्यक होती है। शांत एवं एकान्त स्थान में शुद्ध आसन बिछाकर, अल्प हिंसा से बना सादा वस्त्र धारण कर, कम से कम 48 मिनट के लिए सभी पाप प्रवृत्तियों के त्याग का संकल्प लेकर, सांसारिक प्रपंचों से अलग हो, अपनी योग्यतानुसार मौन, ध्यान, स्वाध्याय, प्रार्थना, जप, ज्ञानाराधना करते हुए समभाव आदि का अभ्यास करना द्रव्य सामायिक है। सामायिक की अवधि में सब जीवों पर समभाव रखना, पाँच इन्द्रियों का संयम करना, अन्तर्हृदय में शुभ-भावना का चिंतन, शुभ संकल्प करना, आर्त्त-रौद्र दुर्ध्यानों को त्याग कर धर्मध्यान आदि करना ही सच्ची सामायिक व्रत की साधना होती है।

सामायिक में प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान आदि 18 पापों के त्याग से मानसिक तनाव, भय, नकारात्मक सोच, आवेग, कषाय शांत होते हैं और हमारा चिन्तन सकारात्मक तथा गुणग्राही होने लगता है। ये ही वे कारण होते हैं जो परोक्ष रूप से व्यक्ति को रोगी बनाते हैं, जबकि सामायिक करने से रोग पैदा करने वाले उपर्युक्त सारे कारण स्वतः दूर हो जाते हैं। बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। अतः रोगी रोगमुक्त होने लगता है। शरीर, मन एवं वाणी की अनावश्यक प्रवृत्तियां बंद होने से उसे विश्राम मिलता है। मानसिक संतुलन विकसित होता है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियां शरीर के लिए आवश्यक स्राव बनाने लगती हैं। परिणामस्वरूप शरीर स्वस्थ होने लगता है और यदि शरीर में रोग हों तो वे दूर होने लगते हैं। सामायिक से न केवल शरीर, अपितु मन एवं आत्मा के विकार दूर होते हैं। द्रव्य सामायिक का अभ्यास करते-करते जितना-जितना समभाव बढ़ता है उतनी-उतनी सहनशक्ति बढ़ने लगती है, शरीर के प्रति आसक्ति कम होती है, मृत्यु का भय नहीं लगता, रोग के प्रति ध्यान नहीं जाता। फलतः रोग की चिंता तथा शरीर में दर्द, पीड़ा की अनुभूति कम होने लगने लगती है। रोग परेशान नहीं कर पाता। इस प्रकार शुद्ध सामायिक स्वास्थ्य प्राप्ति का मूलाधार एवं उपचार का सशक्त माध्यम है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621554, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website: www. chordiahealthzone.com

बाल-स्तम्भ

सम्यक्त्व का प्रभाव

आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जून 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

भगवान अजितनाथ विभिन्न क्षेत्रों और प्रदेशों में शाश्वत सत्य धर्म के उपदेश द्वारा प्राणियों को मोक्षमार्ग पर आरूढ़ करते हुए कौशाम्बी नगरी के बाहर उत्तर दिशा में स्थित उद्यान में पधारे। देवों ने समवसरण की रचना की। अशोक वृक्ष के नीचे विशाल सिंहासन पर विराजमान हो प्रभु ने देशना आरम्भ की। उसी समय एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ समवसरण में उपस्थित हुआ और प्रभु की प्रदक्षिणा तथा वन्दन-नमन के पश्चात् उनके चरणों के समीप बैठ गया। देशना के अनन्तर उस ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर प्रभु से पूछा- "प्रभु यह इस प्रकार क्यों है?" प्रभु ने उत्तर दिया-"यह सम्यक्त्व का प्रभाव है।" ब्राह्मण ने आगे पूछा- "किस प्रकार प्रभो?"

प्रभु ने समझाया-सम्यक्त्व का प्रभाव बहुत बड़ा है। इसके प्रभाव से वैर शांत हो जाते हैं, व्याधियां नष्ट हो जाती हैं, अशुभ कर्म विलीन हो जाते हैं, अभीप्सित कार्य सिद्ध हो जाते हैं, देव आयु का बन्ध होता है, देव-देवीगण सहायतार्थ सदा समुद्यत रहते हैं। यह सब तो सम्यक्त्व के साधारण फल हैं। सम्यक्त्व की उत्कृष्ट उपासना से प्राणी समस्त कर्म-समूह को भस्म कर तीर्थंकर पद तक को प्राप्त कर शुद्ध, बुद्ध और मुक्त हो

सकता है। प्रभु के मुख से यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा-"भगवन् ऐसा ही है, इसमें किंचिन्मात्र भी अन्यथा नहीं है।" इतना कहकर वह ब्राह्मण सन्तुष्ट मुद्रा में अपने स्थान पर बैठ गया।

देशना में उपस्थित श्रोताओं को इस रहस्य से अवगत कराने के लिए प्रभु के मुख्य गणधर ने पूछा- "भगवन्! ब्राह्मण के प्रश्न और आपके उत्तर का रहस्य क्या है?" इस पर भगवान अजितनाथ ने कहा- "यहाँ से थोड़ी दूरी पर शालिग्राम नामक एक गाँव है। उस गाँव में दामोदर नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी का नाम सीमा था। उनके पुत्र का नाम शुद्धभट्ट था। शुद्धभट्ट का विवाह समय आने पर सिद्धभट्ट की बेटी सुलक्षणा से किया गया। शुद्धभट्ट और सुलक्षणा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे कि दोनों के माता-पिता स्वर्ग सिधारे और उनका सारा धन-वैभव भी नष्ट हो गया। स्थिति यहाँ तक बिगड़ी कि दोनों समय का भोजन प्राप्त करना भी उनके लिए दूभर हो गया। इस दरिद्रता से शुद्धभट्ट इतना दुःखी हुआ कि एक दिन चुपचाप अपनी पत्नी को बिना बताए परदेश चला गया। सुलक्षणा को इस बात से बड़ा आघात पहुँचा। शोक सागर में डूबी हुई सबसे दूर एकाकिनी सुलक्षणा वैरागिन की तरह जीवन बिताने लगी।

उन्हीं दिनों विपुला नामक एक प्रवर्तिनी दो अन्य साध्वियों के साथ वर्षावास हेतु उस गाँव में आई और सुलक्षणा के घर में स्थान माँग कर रहने लगी। सुलक्षणा प्रतिदिन उस प्रवर्तिनी के उपदेशों को सुनती, जिससे उसके मन में धर्म के प्रति रुचि जागृत हुई। उसकी मिथ्यात्व की परतें दूर हुईं तो उसके अन्तस्तल में सम्यक्त्व प्रकट हुआ और उसने संसार सागर से पार उतारने वाले जैन धर्म को स्वीकार कर लिया। इससे उसके कषायों का उपशमन हुआ और विषयवासनाओं के प्रति अरुचि और विरक्ति उत्पन्न हुई। सम्पूर्ण चातुर्मास में उसने अनवरत निष्ठा के साथ साध्वियों की सेवा-शुश्रूषा की। वर्षावास बीत जाने पर साध्वियों ने सुलक्षणा को बारह अणुव्रतों का नियम ग्रहण करवा कर श्राविका बनाया और वहाँ से अन्यत्र विहार किया।

साध्वियों के विहार करने के पश्चात् सुलक्षणा का पति विदेश से विपुल धनराशि उपार्जित करके लौटा। पति के आने से सुलक्षणा बहुत ही

प्रसन्न हुई। जब शुद्धभट्ट ने उससे पूछा कि मेरे जाने पर तुमने अपना समय कैसे बिताया तो सुलक्षणा ने कहा मैं आपके वियोग से दुःखी थी कि प्रवर्तिनी जी यहाँ पधार गईं और चार मास तक हमारे घर में ही विराजकर इसे पवित्र किया। उनके दर्शन से आपके विरह का दुःख शांत हुआ और मैंने उनसे सम्यक्त्व रत्न प्राप्त कर अपना जन्म सफल किया।

शुद्धभट्ट ने जिज्ञासा प्रकट की कि सम्यक्त्व किसे कहते हैं और वह कैसे होता है? सुलक्षणा ने वीतराग जिनेन्द्र द्वारा प्ररूपित शाश्वत धर्म का स्वरूप अपने पति को समझाते हुए कहा- ''रागद्वेषादि समस्त दोषों को नष्ट कर वीतराग बने अरिहंत प्रभु द्वारा प्ररूपित जैन धर्म को स्वीकार कर सुदेव, सुगुरु और शुद्ध धर्म के प्रति अटल श्रद्धा रखना ही सम्यक्त्व है। सम्यक्त्व का ही दूसरा नाम सम्यग्दर्शन है। सम्यक्त्व के पाँच लक्षण हैं- शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य। स्वधर्मी बंधुओं को सम्यक्त्व में स्थिर रखना, प्रभावना, भक्ति, जिनशासन में कुशलता और चतुर्विध तीर्थ सेवा, इसके पाँच भूषण हैं।'' सम्यग्दर्शन और जैन धर्म के सही स्वरूप को अपनी पत्नी से अच्छी तरह समझकर शुद्धभट्ट बड़ा ही प्रसन्न हुआ। उसने भी सम्यक्त्व प्राप्त किया और पति-पत्नी दोनों सम्क्त्वधारी बनकर जैन धर्म के अनुयायी बन गये। गाँव के अन्य ब्राह्मण उन दोनों को श्रावकधर्म का पालन करते देख उनकी निन्दा करने लगे कि वे अपने परम्परागत धर्म को छोड़कर श्रावक बन गए हैं।

कालान्तर में सुलक्षणा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। सर्दी के दिन थे। एक दिन प्रातःकाल शुद्धभट्ट अपने पुत्र को साथ लिए 'धर्म-अग्निष्टिका' के पास गया, जहाँ अनेक ब्राह्मण अग्नि ताप रहे थे। शुद्धभट्ट को अपने पास आया देखकर वे लोग आग के चारों ओर इस तरह बैठ गए कि किसी और के बैठने के लिए स्थान न रहे, साथ ही बोले कि तुम श्रावक हो अतः तुम्हारे लिए हमारे बीच कोई स्थान नहीं है, और अट्टहास कर उन लोगों ने शुद्धभट्ट का उपहास किया। ब्राह्मणों के इस तिरस्कारपूर्ण व्यवहार से दुःखी और क्रुद्ध होकर शुद्धभट्ट ने कहा- ''यदि जैन धर्म संसार सागर से पार उतारने वाला न हो, यदि अर्हत् तीर्थंकर सर्वज्ञ नहीं हो, यदि सम्यग्ज्ञान-दर्शन और चारित्र मोक्ष का मार्ग नहीं हो अथवा सम्यक्त्व नाम की कोई

वस्तु संसार में नहीं हो तो मेरा यह पुत्र अग्नि में भस्म हो जाये और यदि ये सब है तो इसका बाल भी बाँका न हो, इसे तनिक भी आँच न आवे।" ऐसा कहते हुए शुद्धभट्ट ने अपने पुत्र को अंगारों से भरी उस विशाल अग्नि-वेदी में फेंक दिया।

यह देखकर वहाँ बैठे हुए लोग आक्रोशपूर्ण उच्चस्वर में चिल्ला उठे- हाय-हाय, इस अनार्य ने अपने पुत्र को जला दिया, पर ज्योंही आग की ओर दृष्टि डाली तो देखा कि वहाँ आग का नाम तक नहीं है, उसके स्थान पर एक विशाल पूर्ण विकसित कमल पुष्प वहाँ सुशोभित है और उस पर बालक खिलखिलाता हुआ अपने खेल में मस्त है। लोग चकित हो उस चमत्कार को देखते रहे।

वास्तव में हुआ यों कि जिस समय शुद्धभट्ट ने अपने पुत्र को आग में फेंका, उस समय सम्यक्त्व के प्रभाव को प्रकट करने में तत्पर और लीन रहने वाली व्यन्तर जाति की देवी ने, जो संयोगवश वहीं कहीं थी, बड़ी तत्परता से अग्नि को तिरोहित कर उसकी जगह कमल का विशाल पुष्प प्रकट कर बालक की रक्षा की। वह देवी पूर्वजन्म में एक साध्वी थी और श्रमणधर्म की विराधना के कारण मरने पर व्यन्तरी हुई थी। जब उसने एक केवली प्रभु से अपने व्यन्तरी रूप में जन्म लेने का कारण पूछा तो उन्होंने उस पर यह बात स्पष्ट की और सुझाव दिया कि तुम्हें सदा सम्यक्त्व के प्रभाव और विकास को बढ़ावा देने के लिए तत्पर रहना चाहिए। तब से वह व्यन्तरी सम्यक्त्व के प्रभाव को प्रकट करने में उद्यत रहती है।

शुद्धभट्ट अपने पुत्र को लिए घर लौटा। उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई तो उसने कहा कि आपने अच्छा नहीं किया। यदि हमारा पुत्र जल जाता तो क्या सम्यक्त्व, जिनेन्द्र द्वारा प्ररूपित धर्म तथा अर्हत् प्रभु का अस्तित्व निरस्त हो जाता? पर इनका अस्तित्व तो त्रिकाल सिद्ध है।

इसके बाद ब्राह्मणी सुलक्षणा गाँव के उन सब लोगों को तथा अपने पति को सम्यक्त्व में स्थिर करने के लिए अपने साथ लेकर यहाँ आई है। ब्राह्मण ने यहाँ आकर मुझसे उसी के बारे में पूछा है और मैंने भी उसे सम्यक्त्व का ही प्रभाव बताया है।

भगवान अजितनाथ के मुख से यह वर्णन सुनकर ब्राह्मण दम्पति के साथ आए हुए शालिग्राम के निवासियों की आस्था दृढ़ हुई। समवसरण में उपस्थित लोगों ने भी सम्यक्त्व ग्रहण किया। शुद्धभट्ट और सुलक्षणा ने उसी समय श्रमणधर्म की दीक्षा ग्रहण की और अनेक वर्षों तक विशुद्ध श्रमणाचार का पालन कर समस्त कर्मसमूह को नष्ट किया और अन्त में मोक्ष प्राप्त किया। (जैन इतिहास के प्रसंग, भाग–2 से गृहीत)

प्रश्नः–

1. भगवान अजितनाथ कौनसे तीर्थंकर हुए?
2. सम्यक्त्व के साधारण फल बताइए?
3. शुद्धभट्ट परदेश क्यों चला गया?
4. कहानी के आधार पर जैन धर्म की पाँच विशेषताएँ लिखिए।
5. सन्धिविच्छेद कीजिएः– अभीप्सित, सन्तुष्ट, श्रावकाचार, परम्परागत।
6. सम्यक्त्व के पाँच लक्षण कौनसे हैं? उनका अर्थ लिखिए।
7. इस कहानी के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए।

बाल–स्तम्भ [मार्च–2011] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'पश्चात्ताप के आंसू' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	पारूल खिंवसरा-जोधपुर	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	रत्नेश बोहरा-जोधपुर	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	ऋषभ जैन-हिण्डौनसिटी	19
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	अमन जैन-खेरली	19
	रूपेश सिसोदिया-भदेसर	19
	ऋषभ वैद-भीनासर	19
	नम्रता जैन-भुसावल	19
	हिमांशी कांकरिया-नागौर	19

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (14)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह दूसरी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जून 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2

(पृष्ठ 31 से 90 तक से प्रश्न)

इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (अन्त्याक्षरी)

1. तीन निषद्याओं से गणधरों ने 14 पूर्वों की.........की।
2. केवलिभुक्ति..........उपलब्ध ग्रंथ में केवली द्वारा कवलाहार किया जाना मान्य है।
3. लज्जा को जीतने में असमर्थ है तो.......धारण करना कल्पता है।
4. ब्राह्मण......वेद-वेदांग के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान थे।
5. आपने मुझे सही दिशा और चरम.....का बोध करा दिया है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अंकों में दीजिए-

6. ....वर्ष की वय में इन्द्रभूति गौतम ने भगवान महावीर के पास श्रमण दीक्षा ग्रहण की।

7. आर्य सुधर्मा के शरीर की ऊँचाई......हाथ थी।

8. आचारांग सूत्र में ये.........अध्ययन इसी क्रम से दिये हुए है।

9. भावना नामक चूलिका में......गाथाएँ हैं और शेष सब गद्य पाठ है।

10. आचार्य भद्रबाहु ने आचारांगादि.......सूत्रों पर निर्युक्तियों की रचना की।

तीन शब्द यहाँ पर हैं, चौथा शब्द लिखिए–

11. ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी-

12. उग्रतप, दीप्ततप, तप्ततप-

13. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान-

14. उठना-बैठना, सोना, चलना-

15. आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक-

'हाँ' या 'ना' में उत्तर दीजिए–

16. प्रायः गौतम को सम्बोधित करके ही भगवान् ने अधिकांश निरूपण किये हैं।

17. मोहरहित होकर तीन प्रकार के अनशनों में से यथाशक्ति अनशन स्वीकार करें।

18. आज जितने भी श्रमण-श्रमणियाँ विद्यमान हैं, वे सब आर्य सुधर्मा की शिष्य परम्परा के हैं।

19. आर्य सुधर्मा को भगवान महावीर के द्वितीय पट्टधर के रूप में नियुक्त किया गया।

20. प्रत्येक जीव अपने ही समान चेतना वाले नहीं हैं।

जोड़ी मिला कर उत्तर दीजिए–

21. वैराग्य	त्रिपृष्ट वासुदेव
22. त्रैलोक्य	लोहार्य
23. अन्तस्तल	आर्जव
24. सुधर्मा	प्रभाकर
25. भगवान महावीर	अज्ञानान्धकार

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता का वार्षिक परिणाम

गत वर्ष आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत जनवरी से नवम्बर 2010 एवं मार्च 2011 तक आयोजित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता में कुल 834 प्रतियोगियों ने भाग लिया एवं इनमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी इस प्रकार रहे-

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती उपमा मोहित जी चौधरी-अजमेर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती अरुणा संजीवकुमार जी जैन-होशियारपुर (पंजाब)
श्री बाबूलाल जी जैन-जयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार- श्रीमती विद्या सिंघवी-बदनावर (मध्यप्रदेश)
श्रीमती कुसुम पारसमल जी पुनमिया-इंचलकंरजी (महा.)

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (12) का परिणाम

जिनवाणी मार्च, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 271 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती प्रमीला सज्जनराज जी मेहता-बैंगलोर (कर्नाटक)

द्वितीय पुरस्कार- सुश्री पिंकी जैन-जयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार- सुश्री संगीता बैद-चेन्नई (तमिलनाडु)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती विमलाबाई जी खिंवसरा-धुले (महा.)
2. श्रीमती रुचिका लुणावत-जोधपुर (राज.)
3. श्रीमती प्रतिभा प्रदीप जी गाँधी-पुणे (महा.)
4. श्री मिलाप पारसमल लुणावत-अहमदाबाद (महा.)
5. श्रीमती रतन कर्नावट-जयपुर (राज.)

सादगी के फायदे

श्री अभयकुमार जैन

1. सादगी से जीवन जीने वालों को अनैतिक कार्य नहीं करने पड़ते।
2. सादगी से जीवन शांतिमय व्यतीत होता है तथा बेचैनियाँ नहीं होती।
3. सादगी से जीने वाले भौतिकता व विलासिता से कोसों दूर रहते हैं।
4. सादगी युक्त जीने वाले किसी भी व्यसन के शिकार हो ही नहीं सकते हैं।

अतः विनम्रता व सादगी अपनायें। विनम्रता व सादगी आदमी को तनाव रहित बनाती है।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

JAIN LEGEND (Volume 1 to 4 abridged)- Acharya Shri Hastimal Ji, ***Editors-*** Shugan C. Jain and P.S. Surana, ***Publisher-*** Samyag jñāna Pracaraka Mandala, above shop no. 182-183, Bapu Bazar, Jaipur-302003, ***Phone-*** 0141-2575997, Fax- 0141-2570753, ***Pages*** 368+342+236+241, ***Price-*** Rs. 150 each volume ***Edition-*** Year- 2011, January.

JAIN LEGEND in four volumes is an abridged English edition of Jain Dharma ka Maulika Itihāsa (4 volumes) authored by Acharya Shri Hastimal Ji in Hindi. The first volume relates to the life sketch of 24 Tīrthankaras. The Second volume mentions the history of Kevalis and pūrvadharas from vīr nīrvāna samvat 1 to 1000. The Third volume belongs to the sāmānya Pūrvadharas from vīranirvān era 1001 to 1475 and the Fourth volume describes the incidents between v.s. 1476 to 2000 of other Jaina Acāryas, The all four volumes are having religious history alongwith the detail of political and social situation of that time. Description has been made on the basis of authentic records found in various old manuscripts and valuable works. Shri Gajsingh Rathore and Shri Premraj Bogavat helped a lot in presentation of the original Hindi volumes. Shri Ramgopal mishra and Shri Dileep kumar Vaya 'amit' and Shri Jayant bhai P.Shah have prepared abridged editions in Hindi and the translation in English of those has been done as below:

Volume I : Dr. (Mrs.) Uma Maheshwari
Volume II : Mrs. Prasanna Kumari
Volume III : Dr. Shugan C. Jain

Editing work of all four English volumes has been performed by Dr. Shugan C. Jain and Shri P.S. Surana, President of Samyagjñān Pracāraka Mandal is the hero, who took all pains in bringing out these volumes in such an interesting way.

These English volumes will be useful for the general readers of religious history and as well as for the scholars of Jaina History. These will be Welcomed in the various parts of India and also in the abroad.

A set of These four attractive and authentic abridged Editions is the achievement of the birth centuary of Acharya Hastimalji in January 2011 on a very low cost.

जैन इतिहास के प्रसंग (1 से 40 भाग)- ***सम्पादक***- डॉ. दिलीप धींग, ***प्रकाशक*** - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापूबाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, ***पृष्ठ*** - एक भाग पृष्ठ 48, 56 या 64, ***मूल्य*** - 5 रुपये प्रत्येक भाग, ***सम्पूर्ण सेट***- मात्र 200 रुपये, ***प्रथम संस्करण*** - 2011

आचार्य हस्तीमल जी महाराज द्वारा प्रणीत 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चार बृहद् भागों का अध्ययन हर एक व्यक्ति नहीं कर सकता। उनमें इतिहास के ऐसे अनेक रोचक, प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक प्रसंग हैं जो जैन इतिहास की विभिन्न महत्त्वपूर्ण घटनाओं से परिचित कराते हैं तथा साथ ही आचार, विचार, समाज, जीवन, परम्परा आदि के सम्बन्ध में यथेष्ट निर्देश करते हैं। ज्ञानवर्द्धन, संस्कार जागरण और जीवन-निर्माण हेतु अल्प मूल्य की इन लघु पुस्तिकाओं की उपयोगिता असंदिग्ध है। साहित्यकार एवं कवि डॉ. दिलीप धींग ने 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चार संक्षिप्त भागों का सम्पादन करने के साथ इतिहास प्रसंगों को व्यापकता प्रदान करने की दृष्टि से जो चालीस लघु पुस्तिकाओं के रूप में इन्हें मूर्तरूप दिया है वह निश्चित ही अभिनन्दनीय है तथा जन-जन में जैन इतिहास की रुचि एवं बोध को जागृत करने में सहायक है। इन 40 भागों की विषयवस्तु का अनुमान इनके निम्नांकित शीर्षकों से लगाया जा सकता है- 1. भगवान ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत, 2. भगवान अजितनाथ, शान्तिनाथ आदि, 3. भगवान मल्लिनाथ आदि, 4. भगवान अरिष्टनेमि, वासुदेव कृष्ण आदि, 5. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती, 6. भगवान पार्श्वनाथ, 7. भगवान महावीर (साधनाकाल तक), 8. भगवान महावीर (कैवल्य से निर्वाण तक),9. इन्द्रभूति गौतम स्वामी, 10. सुधर्मा स्वामी, 11. जम्बूस्वामी, 12. प्रभवस्वामी, 13. आचार्य शय्यम्भव, भद्रबाहु (प्रथम) आदि, 14. आचार्य स्थूलभद्र, 15. आचार्य सुहस्ती, मौर्य राजवंश आदि, 16. कालकाचार्य (द्वितीय), सिद्धसेन दिवाकर आदि, 17. विक्रमादित्य,

वज्रस्वामी आदि 18. आर्यरक्षित, दुर्बलिका, पुष्यमित्र आदि, 19. देवर्द्धि क्षमाश्रमण, कुछ साध्वियाँ आदि, 20. श्रमणाचार और चैत्यवास, 21. भट्टारक और यापनीय परम्परा, 22. कुछ जैन राजवंश, भद्रबाहु (द्वितीय) आदि, 23. जैनों पर संकट, आचार्य हरिभद्र आदि, 24. शीलगुणसूरि, वनराज चावड़ा आदि, 25. आचार्य बप्पभट्टी और कुछ राजा, 26. कुछ प्रभावक आचार्य और राजा, 27.सिद्धर्षि, कवि धनपाल आदि, 28. राजगच्छ, सूराचार्य आदि, 29. क्रियोद्धारक आचार्य, 30. आचार्य अभयदेव और जिनवल्लभसूरि, 31. राजनैतिक हलचल व जैनों पर फिर संकट, 32. जिनदत्तसूरि और वादिदेवसूरि, 33. कुछ प्रभावक आचार्य, 34. आचार्य हेमचन्द्रसूरि, 35. सिद्धराज जयसिंह और कुमारपाल, 36. खरतरगच्छ, उपकेशगच्छ आदि, 37. अंचलगच्छ व आगमिकगच्छ, 38. तपागच्छ, दानवीर जगडूशाह आदि, 39. धर्मवीर लोकाशाह, 40. तीर्थंकरत्व, संघ व्यवस्था आदि।

आचार्य श्री हस्ती की जन्मशताब्दी के अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा के सत्यप्रयासों एवं औदार्य का यह सुपरिणाम है कि डॉ. धींग के माध्यम से मौलिक इतिहास की सुगन्ध आम पाठक तक पहुँच सकेगी एवं उसे इतिहास की घटनाएँ कुछ बोध एवं प्रेरणा दे सकेंगी।

अहोभाव के आँसू (आचार्य हस्ती गुण-प्रशस्ति)- श्री सम्पतराज चौधरी, ***प्रकाशक***-इण्डियन मैप सर्विस, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राज.), दूरभाष- 0291-2612874, ***प्राप्तिस्थान***- (1) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001, दूरभाष- 0291-2636763, (2) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर, दूरभाष-0141-2575997, ***पृष्ठ***- 112+16, ***मूल्य***-सदुपयोग, ***संस्करण***-जनवरी, 2011

'मुक्ति का राही' के लेखक श्री सम्पतराज चौधरी पेशे से चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट होते हुए भी अच्छे साहित्यकार हैं। आचार्य हस्ती के शिष्य मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी द्वारा समय-समय पर कृत गुणानुवादों में उनके प्रति प्रकट अहोभावों को आधार बनाकर श्री चौधरी जी ने उन्हें संवादात्मक शैली में उकेरा है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जनवरी से नवम्बर 2010 तक के अंकों में प्रकाशित इन आलेखों की उपयोगिता को देखते हुए पुस्तकाकार दिया गया है। अन्त के कुछ पृष्ठों में आचार्यप्रवर की स्तुति में कतिपय काव्यात्मक भजन भी

संगृहीत हैं। पथिक एवं मुनिवर के मध्य हुए काल्पनिक संवादों में आचार्य हस्ती के गुणों का प्रभावी प्रकटन हुआ है।

जीवन का संध्याकाल : आँखों देखा हाल- श्री गौतममुनि , ***प्रकाशक***- (1) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (2) श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पीपाड़, प्राप्ति स्थान- (1) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001, दूरभाष- 0291-2636763, (2) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर, दूरभाष-0141-2575997, ***पृष्ठ***- 10+62, ***मूल्य***- सदुपयोग, ***संस्करण***-जनवरी 2011

जिनवाणी के आचार्य हस्ती श्रद्धाञ्जली विशेषांक (सन् 1991) में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी द्वारा लिखित एवं श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना द्वारा संकलित 'जीवन का संध्याकाल : आँखों देखा हाल' प्रकाशित हुआ था, उसी का पुनः सम्पादन श्री सम्पतराज चौधरी द्वारा किया गया है तथा उसे आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी की पूर्णाहुति पर प्रकाशित कर आचार्य हस्ती को श्रद्धाञ्जली व्यक्त की गई है। पुस्तक में भाव एवं भाषा का ऐसा सङ्गम है कि जो पाठक की अन्तर्दृष्टि को बांधे रखकर उसे पावन बनाता है। निमाज में गृहीत तेले एवं दस दिवसीय संथारे का निरूपण संथारे के शुद्ध प्रयोगात्मक स्वरूप को अपनाने की प्रेरणा करता है।

संशोधन

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा वर्ष 2011 के प्रकाशित वार्षिक कलैण्डर में निम्नांकित अशुद्धियाँ रह गईं, जिसके लिए अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् क्षमाप्रार्थी है। निवेदन है कि कृपया निम्नांकित अशुद्धियों को शुद्ध करके पढ़ें-

पर्व	दिनांक	गलत अंकित	सही
पक्खी	01.06.2011	ज्येष्ठ सुदि 30	ज्येष्ठ बदि 30
पक्खी	15.06.2011	ज्येष्ठ वदी 15	ज्येष्ठ शुदि 15
पर्युषण प्रारम्भ	25.08.2011	26.08.2011	25.08.2011
संवत्सरी महापर्व	01.09.2011	02.09.2011	01.09.2011
पक्खी	11.09.2011	भाद्रपद वदी 14	भाद्रपद शुदि 14

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 मई, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	: 22 अप्रेल 2011 को रातानाडा, जोधपुर में प्रवेश हुआ तथा घोड़ों का चौक फरसते हुए सरस्वती नगर पधारे हैं।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	: निमाज से विहार कर 26 अप्रेल को लक्ष्मीनगर रांका स्थानक पधारे। यहाँ से पावटा क्षेत्र फरसते हुए घोड़ों का चौक स्थानक पधारे हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	: घोड़ों का चौक, जोधपुर से विहार कर सरस्वती नगर पधारे हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: सुखसाता पूर्वक ब्यावर विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: इटारसी से विहार कर पीलीकरार, बोरी होते हुए देलावाड़ी पधारे हैं।
तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: घोड़ों का चौक से विहार कर सरस्वती नगर, जोधपुर पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: जैतारण से विहार कर कापरडा होते हुए सरस्वती नगर, जोधपुर पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	: मेड़ता सिटी से विहार कर मार्गवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए तिलोरा पधारे हैं, जयपुर की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: करमावास से विहार कर बिलाड़ा, कापरडा होते हुए सरस्वती नगर, जोधपुर पधारे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	करमावास से विहार कर बिलाड़ा, पालासनी होते हुए फिटकासनी पधारे हैं। सरस्वती नगर पधारने की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	:	करमावास से विहार कर ब्यावर, केकड़ी, देवली होते हुए सिरोई पधारे हैं। सवाईमाधोपुर की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	बीजवाडिया से बिलाड़ा, डांगियावास होते हुए सरस्वती नगर, जोधपुर पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	:	साहुकार पेठ, चेन्नई से विहार कर कुण्डीतोप, मरलेचा वाटिका होते हुए आवड़ी पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा	:	मायावरम से विहार कर सिरकाली, चिदम्बरम होते हुए विलीपुरम पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	:	बदनावर से विहार कर बख्तगढ़ होते हुए कोच पधारे हैं। इन्दौर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	रामनगर, सोढाला, जयपुर से विहार कर मण्डाना पधारे हैं। दौसा की ओर विहार सम्भावित है।
महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	निमाज से विहार कर कुशालपुरा, पीपाड़ होते हुए गोटन पधारे हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	सागर भवन, जलगांव से विहार कर जलका गांव पधारे हैं। विटनेर पधारने की सम्भावना है।

विक्रम संवत् 2068 के अब तक घोषित चातुर्मास

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने चैत्र कृष्णा प्रतिपदा, रविवार, दिनाँक 20 मार्च, 2011 को निमाज, जिला-पाली में तथा ग्राम खारीखुर्द (जिला-जोधपुर) में 17 अप्रेल, 2011 को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ विक्रम् संवत्-2068 के लिये निम्नांकित चातुर्मास घोषित किये हैंः-

जोधपुर - परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा

नागौर - परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा

जोधपुर -साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा।

मसूदा (जिला-अजमेर) - सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

भोपाल (म.प्र.) - व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

पाली (मारवाड़) - विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

मालवीय नगर, जयपुर - विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा

भोपालगढ़ -व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

बजरिया, सवाईमाधोपुर - व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा आदि ठाणा

वेपेरी-चेन्नई - व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा

जानकी नगर, इन्दौर - व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा

गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर-व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा आदि ठाणा

नागौर- - व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

माण्डल (जिला-जलगाँव)-सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

वैशाली नगर-अजमेर - क्षेत्र महासती वृन्द के चातुर्मास से वंचित नहीं रहेगा।

पीपाड़ शहर - क्षेत्र महासती वृन्द के चातुर्मास से वंचित नहीं रहेगा।

आचार्यश्री-उपाध्यायश्री एवं मुनिपुंगवों का सूर्यनगरी में मंगल प्रवेश

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6, परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 तथा सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का 12 मार्च 2011 के दीक्षा महोत्सव पश्चात् ब्यावर से तीन अलग-अलग संघाड़ों में जोधपुर की ओर विहार हुआ। ब्यावर से निमाज और निमाज से जहाँ आचार्यप्रवर ने करमावास-चावण्डिया-पाटवा जैसे मध्यान्तर के क्षेत्रों में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करते बिलाड़ा में प्रवेश किया वहीं उपाध्यायप्रवर जैतारण-गरनिया-खारिया आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए बिलाड़ा पधारे। सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 निमाज से कुशालपुरा-करमावास-पीपलियाकलां, चण्डावल, सोजतसिटी, सरदारसमन्द, भटिण्डा, काकेलाव आदि ग्राम -नगरों में ज्ञान गंगा प्रवाहित कर जोधपुर के कुड़ी भगतासनी पधारे।

आचार्यप्रवर ने पिचियाक, भावी, बाला, खारीखुर्द, पालासनी, रुडकली, काकेलाव, फिटकासनी क्षेत्रों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए 22 अप्रेल को रातानाडा स्थित जैन भवन पधार कर सूर्यनगरी वालों को सत्संग-सेवा और संत-समागम का अवसर प्रदान किया, वहीं कुड़ी भगतासनी से सेवाभावी श्री

नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 ने विहार कर आचार्य श्री के जैन भवन पधारने के पूर्व जैन भवन में प्रवेश किया एवं आचार्य श्री की अगवानी में पधारे।

आचार्यप्रवर ने मुख्य सड़क मार्ग छोड़कर बसे ग्राम बाला- पालासनी, काकेलाव, फिटकासनी क्षेत्र जहाँ प्रायः संत-सती कम जाते हैं, उन क्षेत्रों को सिंचित करने की भावना से मुख्य सड़क मार्ग से दूरस्थ ग्राम-नगरों को लाभान्वित किया। आचार्य प्रवर दीर्घ द्रष्टा हैं। सड़क मार्ग से दूर के क्षेत्रों के भक्तों की भावना बनाए रखने के प्रयोजन से आचार्यप्रवर ने दुरूह रास्ते का चयन किया।

सूर्यनगरी -जोधपुर श्री संघ के आबाल-वृद्ध सभी सदस्य अपने आराध्य गुरुवर्य के चातुर्मासार्थ गत वर्ष उत्सुक थे, किन्तु आचार्यप्रवर ने गत वर्ष अपना चातुर्मास पाली किया, आचार्यप्रवर के निर्णय से भक्तों में जहाँ कुछ निराशा होना स्वाभाविक था, लेकिन हार नहीं मानने वाले श्री संघ ने दुगुने उत्साह से चातुर्मास की विनति की।

भूखा भोजन करने पर सन्तुष्ट होता है, ठीक वैसे ही जोधपुरवासी चातुर्मास की घोषणा के लिए उत्सुकता-आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। उपाध्याय प्रवर के चातुर्मास के लिए विजयनगर, कंवलियास की विनति थी, लेकिन जोधपुर में दीक्षा महोत्सव एवं जोधपुर क्षेत्र सिंचित करने की भावना से ब्यावर में उपाध्यायप्रवर ने स्पष्ट कर दिया था कि अभी मैं जोधपुर की ओर विहार का मानस बनाए हुए हूँ, जोधपुर से विजयनगर कंवलियास पहुँचना संभव नहीं है इसलिए आप खुले हैं। उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास हेतु नागौर एवं मेड़तासिटी वाले निरन्तर प्रयासरत रहे। आचार्यप्रवर ने एक छोटे से ग्राम खारीखुर्द में 17 अप्रेल को अपना चातुर्मास जोधपुर एवं श्रद्धेय उपाध्याय श्री का चातुर्मास नागौर खोल दिया। चातुर्मास की घोषणा एक दूसरे को एक दूसरे के माध्यम से विद्युत वेग की तरह विदित हो गई। जोधपुर और नागौर में हर्ष-उल्लास छा जाना स्वाभाविक था, सूर्यनगरी के सुज्ञजन हर्षित, प्रमुदित भाव से विहार-सेवा में दुगुने उत्साह से भाग लेकर गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने में ऐसे तल्लीन हो गये कि नहीं चलने वालों के पांवों में जान आ गई। जोधपुर के आबाल-वृद्ध श्रावक-श्राविकाओं ने करीब 7-8 किलोमीटर गुरु-सेवा में फिटकासनी से जैन भवन रातनाडा तक पाद-विहार करके जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए सैकड़ों भक्तों ने भक्ति की शक्ति से विहार-सेवा का लाभ तो लिया ही, शासन प्रभावना में भी अपनी

भागीदारी प्रदर्शित की। जैन भवन रातानाडा में एक दिन विराजकर आचार्यप्रवर 23 अप्रेल को घोड़ों के चौक स्थानक पधारे, जहाँ न केवल प्रवचन सभा में अपितु हर क्षण-हर पल भक्तों का दर्शन-वन्दन हेतु आवागमन का सुन्दर रूप अपने-आपमें अनूठा रहा।

आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर सुनते सबकी हैं, लेकिन करते वही हैं जो उन्हें उचित लगता है। घोड़ों के चौक में प्रवचन सभा में विशाल जनमेदिनी का सामायिक साधना में बैठकर प्रवचन श्रवण करने एवं व्रत-प्रत्याख्यान में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने से भक्तों को लग रहा था कि पूज्य गुरुदेव दो-चार दिन और विराजेंगे। सरस्वती नगर में दीक्षा एवं अक्षय तृतीया की घोषणा पहले की जा चुकी थी, अतः बीच-बीच के उपनगरों -कॉलोनियों वालों को लगने लगा कि जन-जन को जागृत करने वाले गुरुवर्य सरस्वती नगर जाते समय हमारे यहाँ थोड़े-ही क्यों न रुकें, रुकेंगे जरूर, किन्तु दिनाँक 25 अप्रेल 2011 को प्रवचन सभा में मंगल पाठ सुनाने के पूर्व आचार्यप्रवर ने बिना किसी भूमिका के घोषणा कर दी कि कल का व्याख्यान सरस्वती नगर स्वाध्याय भवन में करने की भावना है। आचार्यप्रवर की घोषणा सुनकर हर भक्त एक तरह से मायूस-सा हो गया। आचार्यप्रवर की घोषणा का फलितार्थ जन-जन को समझ में आ गया कि कल घोड़ों का चौक से सुबह विहार होगा।

इधर आचार्यप्रवर का सरस्वती नगर की ओर विहार हुआ। उधर उपाध्यायप्रवर का लोढ़ा प्याऊ से लक्ष्मीनगर क्षेत्र के समीपस्थ जालमसिंह जी के हत्थे स्थित रांका स्वाध्याय भवन पदार्पण हुआ। प्रवचन कांकरिया पौषधशाला में रखा गया। लक्ष्मीनगर-शक्तिनगर और आसपास के अन्य दर्जनों उपनगरों के भक्त उपाध्यायप्रवर की चरण सन्निधि का सुयोग पाकर अत्यन्त हर्षित हुए। प्रवचन सभा में कई बहिनों को ऊपर वाली मंजिल पर बैठकर सामायिक से ही संतोष करना पड़ा।

उपाध्यायप्रवर लक्ष्मीनगर पधारे उस समय महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., नवदीक्षित श्री आशीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 2 महामंदिर निवासी वीरपिता श्री पारसमल जी लोढ़ा को मांगलिक देकर उपाध्यायप्रवर की अगवानी हेतु पधारे।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि मुनिपुंगवों और महासती मण्डलों की प्रेरणा से आचार्य भगवन्त की पुण्य-तिथि वैशाख शुक्ला अष्टमी तदनुसार 11 मई

2011 को एक हजार उपवास-संवर या दया-पौषध की मानो अभी से तैयारी प्रारम्भ हो गई है, भक्ति में शक्ति होती है यह कहावत जोधपुर में कई बार चरितार्थ हो चुकी है। इस बार 4 मई को विरक्ता बहिन व वीर परिवार का अभिनन्दन, 5 मई को दीक्षा एवं 6 मई को अक्षय तृतीया महोत्सव के साथ आचार्य भगवन्त का स्मृति-दिवस, बड़ी दीक्षा, उपाध्यायप्रवर का दीक्षा-दिवस जैसे कई विशिष्ट प्रसंगों के प्ररिप्रेक्ष्य में त्याग-तप की भावना अभी से परिलक्षित हो रही है।

आचार्यप्रवर ने घोड़ों के चौक स्थानक में प्रवचन सभा में प्रेरणा रूप सन्देश प्रदान करते हुए फरमाया कि चातुर्मास जोधपुर घोषित किया जा चुका है। जोधपुर कभी जोधाणे की ढ़ाणी के रूप में बोला जाता था फिर जोधपुर 'नगर' के रूप में और अब 'महानगर' के रूप में विस्तृत हो गया है। अनेक उपनगर हैं, कॉलोनियाँ हैं, क्षेत्र हैं सभी चाहते हैं कि हमें सत्संग-सेवा और संत-समागम का सुयोग मिले। दीक्षा-प्रसंग से जल्दी आना हो गया है, इसलिये सौभाग्यशाली जोधपुर को चार के बजाय लगभग सात माह का सुयोग प्राप्त हो रहा है। गत वर्ष चातुर्मास नहीं मिलने का शायद जोधपुरवासियों को अब मलाल नहीं रहेगा। आप सबको साथ लेकर शासन-प्रभावना में अपनी भूमिका व भागीदारी प्रदर्शित करें। सेवा व स्वाध्याय में हर व्यक्ति अपनी क्षमता उजागर करे। ज्ञान-ध्यान में त्याग-तप में, साधना-आराधना में, व्रत-नियम में किसी की मनुहार की नहीं, अपनी भावना जगाने की जरूरत है। आचार्यप्रवर के प्रेरक एवं प्रभावी प्रवचनामृत का पानकर जन-जन के मन को गुरु-भक्ति, संघ-निष्ठा और सेवा-धर्म की साधना में कुछ करने का सम्बल प्राप्त हुआ है। आचार्यप्रवर की सेवा में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्री योगेश मुनि जी म.सा. प्रभावी प्रवचन दे रहे हैं वहीं मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., श्रद्धेय लोकचन्द्र जी म.सा. के प्रेरणादायी प्रवचन-श्रवण का आकर्षण बना हुआ है।

सूर्यनगरी में दीक्षा के प्रसंग से आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति सभी मुनिपुंगवों का सान्निध्य मिल रहा है वहीं साध्वी प्रमुखा-शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा की सेवा का अवसर पाकर सूर्यनगरी के सकल जैन समाज के साथ जैनेतर जन-समुदाय एवं समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के सुज्ञजन दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग सेवा का भावनापूर्वक लाभ ले रहे हैं।

आचार्यप्रवर एवं साध्वी प्रमुखा सरस्वती नगर विराज रहे हैं, इसलिये ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र के सभी लोग घर आई गंगा से लाभ उठा रहे हैं। दीक्षा एवं अक्षय तृतीया महोत्सव की सफलता में सरस्वती नगर के आबाल-वृद्ध सभी उमंग-उल्लास से कार्यक्रमों की सफल क्रियान्विति हेतु सक्रिय हैं। स्वागत समिति के साथ आवास, भोजन एवं अन्यान्य समितियों की सक्रियता प्रेरणादायी है। 4 अप्रेल को अभिनन्दन-समारोह में राजस्थान उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति डॉ. विनीत जी कोठारी का मुख्य अतिथि के रूप में तथा माननीय श्री आर.के. जैन संभागीय आयुक्त, माननीय श्री भूपेन्द्रकुमार जी दक, पुलिस कमिश्नर एवं माननीय श्री बी.एल.खमेसरा, प्रबन्ध निदेशक, डिस्कॉम के विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारने से भी जन समुदाय के उत्साह में अभिवृद्धि देखी जा रही है। बड़ी दीक्षा के लिए अलग-अलग क्षेत्रों की विनति चल रही है।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

पोरवाल एवं महाराष्ट्र क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

पोरवाल क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 02 से 05 अप्रेल 2011 तक पोरवाल क्षेत्र के सवाईमाधोपुर, महावीर नगर सवाईमाधोपुर, आलनपुर, आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, बजरिया, श्योरपुरकला, कुश्तला, पचाला, चोरू, चौथ का बरवाडा, उनियारा, अलीगढ़, बाबई, इन्द्रगढ़, सुमेरगंज मण्डी, जरखोदा, देई, नैनवा, दूनी, देवली, रामपुरा-कोटा, महावीर नगर-कोटा, केशवपुरा-कोटा, विज्ञाननगर-कोटा आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी समिति के पूर्व महासचिव श्री जगदीशमल जी कुम्भट-जोधपुर, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, स्वाध्याय संघ शाखा पोरवाल के परामर्शदाता श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय संघ शाखा पोरवाल के संयोजक श्री हरकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, पोरवाल शाखा के प्रचारक श्री मुरारीलाल जी जैन-हिण्डौनसिटी की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने,

धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा हेतु 111 आवेदन पत्र भरवाये गये, 93 नये स्वाध्यायी बनाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई एवं बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। संस्कार केन्द्र के अन्तर्गत चलने वाली आध्यात्मिक पाठशालाओं की समीक्षा की गयी तथा नई पाठशालाएं भी प्रारम्भ की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु प्रेरणा की गयी। जिनवाणी के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में आकर सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा करने के साथ ही अधिकांश स्थानों पर इस हेतु प्रत्याख्यान भी करवाए गए।

महाराष्ट्र क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ-जोधपुर, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ-जलगांव तथा अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड-जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 25 से 29 अप्रेल 2011 तक दो ग्रुपों में महाराष्ट्र के धरणगांव, लासुर, चिंचाला, होलनांथा, शिरपुर, नरडाणा, बेटावद, मांडल, अमलनेर, पारोला, मुकटी, फागणा, शिरूड, धुलिया, मालेगांव, सटाणा, सौंदाणा, चांदवड़, नागद, कजगांव, भड़गांव, वरणगांव, इच्छापुर, मुक्ताईनगर, बोदवड़, मोताला, मलकापुर, नांदुरा, खामगांव, अकोला, बडनेरा, चांदुर बाजार, अमरावती, चांदुर रेलवे, धामणगांव रेलवे, नेर, कारंजा, मेहकर, चिखली, बुलढाणा, फत्तेपुर, वाकड़ी आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयोजक श्री नवरतन जी डागा, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री मनोज जी संचेती-जलगांव एवं महावीर जैन पाठशाला जलगाँव के प्रचारक श्री हीरालाल जी मण्डलेचा की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, बच्चों हेतु पाठशालाएं प्रारम्भ करने, बहू मण्डल तथा भाऊ मण्डल प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से

अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान 25 नये स्वाध्यायी बनाए गए। पर्युषण हेतु 7 मांगें भी प्राप्त हुईं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्र खोले गये, पुराने केन्द्रों को पुनः प्रारम्भ किया गया तथा आगामी परीक्षा हेतु 151 आवेदन पत्र भरवाए गए। शिक्षण बोर्ड की आगामी पंचवर्षीय पाठ्यक्रम की भी जानकारी दी गई। जिनवाणी एवं स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका के सदस्य भी बनाए गए। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना, सामायिक एवं स्वाध्याय, शाकाहार तथा सदाचारी जीवन जीने की प्रभावी प्रेरणा से सब प्रमुदित थे। प्रचार कार्यक्रम के दौरान विभिन्न स्थानों पर अन्य सम्प्रदाय के सन्त-सती-मण्डलों के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण का लाभ भी प्राप्त हुआ।

नवरतन डागा, संयोजक

बनाड़ में तीन दम्पतियों द्वारा शीलव्रत के खन्द

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए दिनांक 24 अप्रेल 2011 को चन्दन वाटिका-बनाड़ पधारे। इस अवसर पर भोपालगढ़ विधानसभा क्षेत्र के विधायक माननीया श्रीमती कमसाजी मेघवाल उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनार्थ उपस्थित हुई। जनसमुदाय ने उपाध्यायप्रवर के अमृतमय प्रवचनों का लाभ लिया। इसी अवसर पर उपाध्यायप्रवर की पावन प्रेरणा से एवं सुश्रावक श्री अजीतराजजी ओस्तवाल, चेन्नई (मूल निवासी भोपालगढ़) के सद्प्रयासों से बनाड़ के सरपंच श्रीमान नैनारामजी एवं उनके साथी श्री तुलसीरामजी एवं श्री गोपारामजी ने सपत्नीक उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया। संघ की ओर से संघ के वरिष्ठ श्रावक श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने तीनों दम्पतियों का शॉल, माला, साफा द्वारा सम्मान किया।

'मुक्ति का राही' पुस्तक पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर शाखा की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर 'मुक्ति का राही' काव्यकृति पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह पुस्तक आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन पर काव्यमय प्रस्तुति है। इस पर आधारित प्रश्न-पुस्तिका में लगभग 300 प्रश्न हैं। इस प्रतियोगिता में

प्रथम पुरस्कार 21,000/-, **द्वितीय पुरस्कार** 15,000/-, **तृतीय पुरस्कार** 11,000/- तथा दस पुरस्कार 1000-1000/-रुपये के देय हैं, इसके अतिरिक्त 85 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले प्रत्येक प्रतियोगी को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। प्रश्न पुस्तिका का मूल्य 20/- रुपये, डाक द्वारा मंगाने पर 30/- रुपये तथा 'मुक्ति का राही' पुस्तक का मूल्य 50/- रुपये एवं डाक द्वारा मंगाने पर 70/- रुपये होगा। प्रश्न पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 26.10.2011 है। सम्पर्क सूत्र- **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ**, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन- 0291-2636763, **श्रीमती सुनीता मेहता**-अध्यक्ष, फोन : 95714-86966, **श्रीमती सुशीला गुलेच्छा**-मंत्री, फोन : 98282-72377

जलगांव में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 19 से 24 अप्रेल तक छह दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर नवजीवन मंगल कार्यलय, जलगांव में आयोजित किया गया। इस शिविर में फत्तेपुर, भुसावल, धरणगांव, वरणगांव, नरडाणा, धूलिया, नागद, पाचोरा, वडला, चालीसगांव, खेड़ा, नासिक, वणी, शिरपुर, जलगांव के 205 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को उनकी योग्यतानुसार चार कक्षाओं में विभाजित कर सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल,67 बोल, कर्मप्रकृति, समिति-गुप्ति, नवतत्त्व, गुणस्थान स्वरूप, तत्त्वार्थ सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र आदि का अध्ययन कराया गया। प्रशिक्षकों में श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री दिनेश जी नाहटा-नगरी, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर, सौ. मंगलाबाई चोरडिया, श्री मनोज जी संचेती, श्री हीरालाल जी मंडलेचा, सौ. निर्मला जी बाँठिया, छाया जी भण्डारी, मधुबाला जी, सुश्री नेहा जी चोरडिया आदि का विशेष सहयोग रहा। जलगांव में विराजित महासती श्री विमलेशप्रभा जी, श्री यशप्रभा जी, श्री पद्मप्रभा जी, श्री ज्योतिप्रभा जी का भी शिविर में प्रेरक उद्बोधन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अनेक भाई-बहिनों ने रात्रि भोजन त्याग, जमीकन्द त्याग, पाक्षिक प्रतिक्रमण करने आदि के नियम भी ग्रहण किये।

24 अप्रेल को प्रातः 7 से 8 बजे सामूहिक सामायिक में उप-प्रवर्तक श्रद्धेय श्री गुलाब मुनि जी म.सा. का भी प्रेरक उद्बोधन सभी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। शिविर समापन समारोह 24 अप्रेल को आयोजित किया गया। इस समारोह

में जलगांव श्री संघ के अध्यक्ष आदरणीय श्री दलीचन्द जी चोरडिया, रत्नसंघीय शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री नवरतन जी डागा, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी आदि अनेक महानुभावों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

शिविर में सीखे गये ज्ञान का मूल्यांकन करने हेतु लिखित परीक्षा आयोजित की गई। प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वालों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ, जलगांव के निम्न तीन विशिष्ट स्वाध्यायियों का सम्मान किया गया- 1. सौ. सायरबाई सुराणा-शिरपुर, 2. सौ. ललिता बाई कटारिया-जलगांव, 3. सुश्री पूजा तालेरा-फत्तेपुर। इन्हें 1100/- रुपये नकद तथा शॉल व माला द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर का कुशलता पूर्वक संचालन श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव द्वारा किया गया। शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना परिवार द्वारा की गई।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर में उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम-अवसर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में अध्ययन करने वाले छात्रों का जीवन सुसंस्कारित, सुखद एवं संघ-समाज की सेवा हेतु यशस्वी बने, इस हेतु विगत 36 वर्षों से यह संस्थान सेवारत है। इस संस्थान से पढ़े हुए विद्यार्थी वर्तमान में संघ-समाज की सेवा के साथ-साथ विभिन्न सरकारी उच्च पदों पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

इस वर्ष भी माध्यमिक/उच्च माध्यमिक परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने वाले सम्पूर्ण भारतवर्ष के छात्रों को विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय में अध्ययन हेतु प्रवेश दिया जा रहा है। साथ ही प्रोफेशनल कोर्सेज में बेचलर एवं मास्टर डिग्री हेतु अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को भी इस वर्ष से संस्थान में प्रवेश का सुअवसर प्रदान किया जा रहा है।

इस संस्थान का उद्देश्य संस्कारशील उच्च स्तरीय जैन विद्वान् तैयार करने के साथ अच्छे स्वाध्यायी एवं संघ-समाज की सेवा में अग्रसर रहने वाले संस्कारित व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इसके लिए छात्रों को उच्च स्तरीय संस्कृत, प्राकृत, जैन-दर्शन आदि विषयों का अध्ययन कराया जाता है, जिससे छात्र हायर सैकेण्डरी, बी.ए., एम.ए., आर.ए.एस., आई.ए.एस. आदि परीक्षाओं में

वरीयता सूची में स्थान पाते हैं, तथा छात्रों को आत्म-निर्भर होने के लिए पूर्ण सहयोग दिया जाता है। संस्थान में परिश्रमी, सेवाभावी, अनुशासनप्रिय, प्रतिभा सम्पन्न छात्रों को ही प्रवेश दिया जाता है। संस्थान में छात्रों को भोजन, आवास आदि की व्यवस्था निःशुल्क है।

संस्थान में प्रवेश हेतु छात्र अपना (1) नाम, (2) पिता का नाम, (3) गोत्र, (4) जन्मतिथि, (5) निवास स्थान का पता, (6) धार्मिक योग्यता एवं दो वर्षों में विद्यालयीय/महाविद्यालयीय परीक्षाओं में प्राप्ताङ्क (अंक-तालिका की प्रति अलग से संलग्न करे) आदि का विवरण देते हुए निम्नांकित पते पर 10 जून, 2011 तक आवेदन-पत्र भेजें, जिससे उन्हें अनुमति-पत्र एवं प्रवेश हेतु सूचना समय पर भेजी जा सके। **सम्पर्क–** विनयचन्द डागा, संयोजक-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, द्वारा : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान), फोन : 0141 2575997, 2571163 (फैक्स) 0141-2570753, 9314506509 ईमेल-sgpmandal@yahoo.in

श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगांव में प्रवेश प्रारम्भ

देश के कोने-कोने में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए कर्तव्यनिष्ठ, चरित्रवान् सुयोग्य प्रचारक तैयार करने के उद्देश्य से संचालित यह विद्यापीठ बच्चों में धर्म के संस्कार डालने के लिए स्थान-स्थान पर धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना करवाकर सुयोग्य अध्यापक एवं स्वाध्यायी तैयार कर भेजता है। इसमें प्रवेश लेकर विद्यार्थी का भविष्य सुरक्षित हो जाता है।

धार्मिक अध्यापक तैयार करने हेतु न्यूनतम योग्यता- 12 वीं पास, उम्र 17 से 21 वर्ष होनी चाहिए। तीन वर्ष तक विद्यापीठ में रहकर धार्मिक अध्ययन करना होगा। अध्ययन काल में भोजन, आवास तथा धार्मिक शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था के साथ प्रथम वर्ष में रुपये 600/-, द्वितीय वर्ष में रुपये 750/- तथा तृतीय वर्ष में रुपये 900/- माह छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर समाज सेवा में रुपये 5000/- प्रति माह एवं दक्षिण भारत में 7000/- रुपये माह तक सर्विस मिलेगी। 10 वर्ष तक समाज सेवा में निरन्तर सर्विस करने पर विशेष सम्मान पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। साथ में प्राईवेट परीक्षा की छूट रहेगी।

स्वाध्यायी तैयार करने हेतु न्यूनतम योग्यता 10 वीं कक्षा उत्तीर्ण रखी गई है। अध्ययन काल में भोजन, आवास व धार्मिक शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। कॉलेज शिक्षण क़ी छूट एवं धार्मिक शिक्षण पाठ्याक्रमानुसार करना होगा।

प्रवेश जून माह से प्रारम्भ है। पाठ्यक्रम तथा नियमावली के लिए सम्पर्क करें:- **श्री प्रकाशचन्द जैन**, प्राचार्य, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर, जलगांव-424001 (महा.)

प्रीतिभोज में मात्र 15 व्यंजनों का संकल्प

जोधपुर ओसवाल समाज की अग्रणी संस्था श्री ओसवाल सिंह सभा, जोधपुर ने एक विशेष बैठक आयोजित कर वैवाहिक समारोह के दौरान प्रीतिभोज मात्र 15 व्यंजनों तक सीमित करने का प्रस्ताव पारित किया। बैठक में जोधपुर की विभिन्न संस्थाओं, भाईपा के पदाधिकारियों तथा समाज के लोगों ने संकल्प-पत्र भरकर इस अभियान की शुरुआत की।

संक्षिप्त-समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में भगवान आदिनाथ जन्म-कल्याणक एवं परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 73वाँ जन्म-दिवस मरलेचा गार्डन, वेपेरी में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि के सान्निध्य में दो दिन तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। प्रथम दिवस 26 मार्च को तीन-तीन सामायिक के साथ करीब 300 भाई-बहिनों ने एकासन व्रत की आराधना की। महासती श्री संगीता जी म.सा. ने गुरु हीरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। वैरागिन बहिन शिल्पा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु की शरण में जाने मात्र से ही हमारे सारे दोष स्वतः समाप्त हो जाते हैं। लगभग 1000 नर-नारियों की उपस्थिति में महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य हीरा ने विषम परिस्थितियों में भी आचार निष्ठा को अक्षुण्ण रखा। द्वितीय दिवस 27 मार्च 'गुरु-समर्पण दिवस्' के रूप में मनाया गया। प्रातः 8 से 9 बजे तक प्रति रविवारीय कार्यक्रम ''एक कदम धर्म की ओर'' में महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि जो आदरणीय होता है उसे आदर अपने आप मिल जाता है। इसके विपरीत जो आदर और सम्मान की इच्छा रखता है, उससे आदर दूर चला जाता है। आपने बताया कि कोई हमें महत्त्व नहीं दे तब भी समभाव में रहना चाहिए। धर्म सभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने विभिन्न प्रकार के 73 दिवसीय व्रत नियम एवं संकल्प ग्रहण किये। कार्यक्रम का संचालन मंत्री उगमचन्द कांकरिया ने किया।

कुम्बकोणम- रत्नसंघीया महासती श्री चारित्रलता जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में दिनाँक 26 मार्च,2011 को भगवान ऋषभदेव का जन्म-कल्याणक एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 73 वां जन्म-दिवस एकासना व सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। इस पावन दिवस में 75 एकासना एवं लगभग 250 सामायिके हुईं। इस अवसर पर तिरुवन्नामल्लै, तिरूकोईलूर, उलन्दरपेट, विरुदाचलम, तिरुच्ची, जयगोन्डम, कादमन्नारकोईल, चेन्नई, बैंगलोर, मायावरम, कोलीड़म, सीरगाली, चिदम्बरम से करीब 450 भक्तगण दर्शन-प्रवचन व क्षेत्रों की विनति हेतु पधारे।

सांगानेर, जयपुर- 16 अप्रेल 2011 को महावीर जयन्ती के पुनीत अवसर पर श्री श्वेताम्बर जैन संस्था, सांगानेर, जयपुर के अधीन गठित 'श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन ट्रस्ट' द्वारा निर्मित किये जाने वाले 'श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन' का भूमि पूजन व शिलान्यास वरिष्ठ सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी गोखरू (दूनी वाले) के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री विनोद जी लोढ़ा व विशिष्ट अतिथि श्री प्रकाशचन्द जी हीरावत एवं श्री विनयचंद जी डागा जयपुर थे। समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने की। संस्था के संरक्षक श्री शांतिलाल जी बाफना ने उपस्थित सभी अतिथियों का हार्दिक आभार व धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन संस्था के मंत्री श्री सुशील कुमार जी जैन ने किया। संस्था को आवंटित 500 मीटर के इस भूखण्ड पर शीघ्र ही निर्माण कार्य प्रारम्भ करने की योजना है।

अमरौली सूरत- महावीर जयन्ती के पावन प्रसंग पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सूरत एवं श्री जैन संघ अमरौली के संयुक्त तत्त्वावधान में महावीर भवन, अमरौली में सामूहिक रूप से सामायिक-स्वाध्याय का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग 500 सामायिकें हुईं। साथ ही रक्तदान शिविर भी आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 50 व्यक्तियों ने रक्त देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम में युवारत्न श्री संजीव जी नाहर ने भगवान् महावीर के 27 भवों का सुन्दर वर्णन किया। कार्यक्रम के संचालन में रत्नसंघ सूरत के अध्यक्ष श्री लाभचन्द जी नाहर, श्री प्रकाश जी गांधी, युवक परिषद् के श्री राजीव जी नाहर, अमरौली श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी मेहता एवं मंत्री श्री भंवरलाल जी कोठारी ने अपना

सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम के अन्त में श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रोगी एवं अपंग व्यक्तियों के सहायतार्थ अनाज का वितरण किया गया।

उदयपुर- अहिंसा विचार मंच के अध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग के प्रयासों से महावीर जयन्ती के अवसर पर उदयपुर नगर परिक्षेत्र में अगता का पूर्ण पालन हुआ। दो-तीन दुकानदारों ने नियम की अवहेलना करने की कोशिश की तो नगर परिषद् ने उनको दण्डित किया। महावीर जयनती से पूर्व ही डॉ. धींग ने अगता का पालन सुनिश्चित करवाने के लिये नगर परिषद्, उदयपुर को पत्र लिखा और अखबारों में समाचार प्रकाशित करवाए थे।

लासलगांव- श्री महावीर जैन विद्यालय के वसतीगृह में नये वर्ष के लिये 15 जून 2011 से प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। संस्था से प्रवेश फार्म मंगवाकर दिनाँक 9 जून, 2011 तक भरकर भेजें। **सम्पर्क सूत्र-** ऑनररी सेक्रेटरी, श्री महावीर जैन विद्यालय, लासलगांव-422306, ता. निफाड, जिला-नाशिक (महा.), फोनः 02550-266358

नई दिल्ली- ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा जैन बच्चों के लिये सैकण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। सहायता के लिये अपना आवेदन पूरे विवरण से निम्न पते पर भेजें- GP. CAPT. V.K. Jain (Retd.) Gyanoday Charitable Society, 572, Asiad Village, New Delhi-110049, Ph. 011-26493538/26492386

बीकानेर- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर में नवनिर्मित केन्द्रिय कार्यालय 'समता भवन' का भव्य उद्घाटन समारोह 12 अप्रेल को सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद- यहाँ आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से 28 अप्रैल को चार भागवती दीक्षाएँ सम्पन्न हो रही हैं।

बधाई/चुनाव

जयपुर- प्रो. संजीव भानावत, अध्यक्ष-जन संचार केन्द्र, राजस्थान

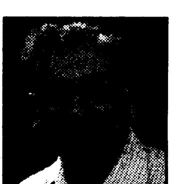

विश्वविद्यालय, जयपुर ने पब्लिक रिलेशन्स कौंसिल ऑफ इण्डिया द्वारा 17-18 मार्च 2011 को चण्डीगढ में आयोजित पाँचवें ग्लोबल कोनक्लेव समारोह में मीडिया त्रैमासिकी पत्रिका 'कम्यूनिकेशन टुडे' के सम्पादक के रूप में गोल्ड

अवार्ड ग्रहण किया। यह पुरस्कार 'कम्यूनिकेशन टुडे' पत्रिका को मीडिया, जनसम्पर्क तथा विज्ञापन पर गुणवत्तापूर्ण शोधपरक सामग्री के प्रकाशन के लिए दिया गया।

कोटा- श्री टीकमचन्द जैन, अध्यापक,केन्द्रीय विद्यालय न.1 को संगठन

मुख्यालय, नई दिल्ली के आयुक्त श्री अविनाश दीक्षित के कर कमलों से इंसेन्टिव अवार्ड प्रदान किया गया। सम्मान के रूप में प्रशस्ति पत्र, शॉल, स्मारिका और पाँच हजार रुपये की राशि भेंट की गई। श्री जैन को इससे पूर्व दो अवार्ड मिल चुके हैं। यह पुरस्कार उन्हें नवीन शिक्षण विधियों की शोध के लिए प्रदान किया गया।

जयपुर- प्रज्वल जैन सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद-मंजुला जैन, जयपुर (जरखोदा वाले) ने के.ए.पी.वी. गवर्नमेण्ट मेडिकल कॉलेज, तिरुचिरापल्ली से MBBS (Final) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की।

श्रद्धाञ्जलि

जलगांव- सुश्राविका श्रीमती हुलासदेवी जी बाफना धर्मपत्नी श्रावकरत्न श्री रिखबचन्द जी बाफना का 18 अप्रेल 2011 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ श्राविका जी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। सन्त-सतीवृन्द की सेवा में वे अग्रणी रहती थीं। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना के साथ सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सहयोग के लिए वे सन्नद्ध रहती थीं। उन्होंने 30 से 40 अट्ठाई तप की आराधना की। 10,11,15 मासखमण तक की तपस्याएँ भी कीं। अपने जीवन में उन्होंने रात्रि-भोजन त्याग, द्रव्यों की मर्यादा, पर्व तिथियों पर हरी सब्जी एवं जमीकन्द का त्याग आदि प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे तत्पर रहती थीं। बाफना परिवार संघ-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आचार्यप्रवर के जलगाँव चातुर्मास में भी सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्म-ध्यान का उन्होंने पूरा लाभ लिया था।

नसीराबाद- धर्मनिष्ठ श्री निर्मल कुमार जी मुणोत सुपुत्र सुश्रावक श्री महेन्द्रसिंह जी

मुणोत का 18 अप्रेल 2011 को आकस्मिक निधन हो गया।

कोलकाता- सरलमना, उदारमना सुश्रावक श्री रतनलाल जी बापना सुपुत्र स्व. श्री

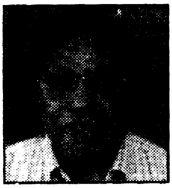

श्री चुन्नीलाल जी बापना का आकस्मिक देहावसान 21 मार्च, 2011 को हो गया। आपका जीवन कर्त्तव्यपरायण, कर्मठ, मृदुभाषी, हँसमुख, व्यवहार में सरलता, सहिष्णुता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप जोधपुर एसोशिएशन एवं विभिन्न संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी सहित पुत्र राजीव जी एवं संजीव जी का संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

इन्दौर- धर्म एवं समाज सेवा से जुड़े सुश्रावक श्री प्रेमराज जी बेताला का स्वर्गारोहण

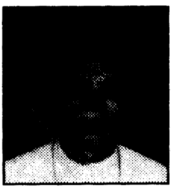

18 मार्च 2011 को हो गया। श्री बेताला जी अपने जीवनकाल में अनेक धार्मिक, सामाजिक, पारमार्थिक कार्यों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे। आप दृढ़धर्मी एवं प्रिय-धर्मी श्रमणोपासक थे। आपका जीवन प्रेरणामय था। आपका व्यवहार सदैव सकारात्मक एवं समन्वयात्मक रहा। सामायिक एवं स्वाध्याय का मंत्र आपके जीवन का अंग बन गया था। दैनिक प्रतिक्रमण के द्वारा आप अपनी आत्मा को कषायों एवं आरम्भ-परिग्रह से न्यून एवं श्रावक व्रतों में लगने वाले अतिचारों से मुक्त करने में तत्पर रहे। गो-सेवा एवं मानव-सेवा के विभिन्न कार्यों में आपने मुक्त हस्त से दान किया है। साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति के गुण के साथ प्रत्येक मंगलवार को मौन व्रत आपकी आत्मशक्ति को बढ़ाने में सहायक रहा। आपने लगभग दो वर्ष पूर्व ही सभी प्रकार के आरम्भ परिग्रह का त्यागकर जीवन उपयोगी सीमित वस्तुओं का आगार रखते हए संसार की सभी वस्तुओं को वोसरा दिया था। मरणोपरान्त नेत्रदान करके आपने हृदय की उदारता का परिचय दिया।

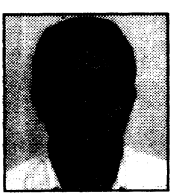

जोधपुर- श्री अशोकनाथ जी मोदी सुपुत्र श्री सुमेरनाथ जी मोदी का 51 वर्ष की वय में 30 मार्च को देवलोक गमन हो गया। आप नित्य सामायिक करते थे। आपके छोटे भ्राता श्री राकेशनाथ मोदी युवक परिषद् से जुड़े हुए हैं।

उमरगाँव- सुश्रावक श्री मदनलाल जी बोकड़िया सुपुत्र स्व. श्री जेठमल जी (ब्यावर निवासी) का 66 वर्ष की उम्र में दिनाँक 2 मार्च,2011 को स्वर्गवास हो गया। आपके जीवन में सरलता एवं सात्त्विकता थी। आप धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचिपूर्वक

भाग लेते थे एवं संत-सतियों व साधर्मिकों की सेवा का पूरा लाभ लेते थे।

बजरिया, सवाईमाधोपुर- चिन्तनशीला सुश्राविका श्रीमती गुणमाला जैन धर्मपत्नी

श्री नहनूलाल जी जैन का 72 वर्ष की वय में 6 फरवरी, 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आप सामायिक एवं प्रतिक्रमण करती थीं, साथ ही थोकड़ों की भी जानकार थी। आपकी धार्मिक प्रवृत्तियाँ अनुकरणीय हैं।

चन्द्रपुर (महा.)- स्थानकवासी जैन समाज के कुशल संघटक सुश्रावक श्री बादलचन्द जी भण्डारी का 16 मार्च 2011 को 85 वर्ष की वय में निधन हो गया। आप सरलमना, उदारमना, निरभिमानी एवं मिलनसार श्रावक थे। साधु-संतों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप लगभग 20 वर्ष श्री संघ के सचिव पद पर कार्यरत रहे तथा स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ भी दीं।

बोहेड़ा- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हीरालाल जी रांका का 7 अप्रेल 2011 को 68 वर्ष

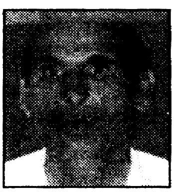

की आयु में देहावसान हो गया। आप सरलहृदयी, मिलनसार एवं शांत प्रकृति के व्यक्ति थे। रात्रि-भोजन, जमीकन्द, चाय का त्याग आदि अनेक प्रत्याख्यानों का आप कई वर्षों से पालन कर रहे थे। पिछले कुछ वर्षों से आप बियासना कर रहे थे। आपने पिछले 35 वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में पर्युषण के दौरान स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ दी हैं। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारशील परिवार छोड़कर गए हैं।

हैदराबाद- श्रीमती रजनी देवी जी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी कटारिया एवं पुत्रवधू

सुश्रावक स्व. श्री मोहनलालजी कटारिया (बिलाड़ा) का 44 वर्ष की वय में असामयिक निधन 1 अप्रेल 2011 को हो गया। आप श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (आ.प्र.) की सक्रिय कार्यकर्त्री थीं। आपका जीवन धार्मिक विचारों से ओतप्रोत था। आप सामायिक व्रत-प्रत्याख्यान नियमित करती थीं। आपके पति श्री राजेन्द्र जी कटारिया श्री जैन रत्न श्रावक संघ हैदराबाद के कोषाध्यक्ष हैं।

कोप्पल- सेवाभावी, धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री शांतिलाल जी बागरेचा मेहता सुपुत्र स्व. श्री माणकचन्द जी बागरेचा मेहता का हृदयगति रुक जाने से 5 अप्रेल 2011 को परलोकगमन हो गया। आप गत पैंतीस वर्षों से श्री वर्धमान स्थानकवासी जैनसंघ के अध्यक्ष के रूप में संपूर्ण जैन समाज की तन,मन,धन से सेवा कर रहे थे। इस उपलक्ष्य

में स्थानीय श्री सकल जैन समाज संघ द्वारा आपको 'समाज भूषण' से अलंकृत किया गया। आपके कार्यकाल में महिला मंडल, बालक मण्डल व बहू मण्डल की स्थापना हुई। महावीर जैन गौशाला का कार्य भी आप देखते थे। आपके न रहने से जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

भादसोड़ा (चित्तौड़गढ़)- तपस्वी साधिका श्रीमती उगमबाई धर्मपत्नी स्व. श्री

नाथूलाल जी चण्डालिया का 72 वर्ष की उम्र में 26 फरवरी 2011 को प्रातः त्याग प्रत्याख्यान सहित समाधिभावों में स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ सुश्राविका थीं। प्रतिदिन 4-5 सामायिक, उभयकाल प्रतिक्रमण, पर्व तिथि को पोरिसी, चतुर्दशी, पक्खी को दया पौषध आदि आपकी नियमित चर्या थी। चारित्रनिष्ठ संत सतियों पर आपकी दृढ़श्रद्धा थी। पिछले तीन चार वर्षों से आप प्रत्येक श्रावण मास में दया संवर का मासखमण कर रही थीं। आप सम्यग्दर्शन व सुधर्म प्रवचन के सह-सम्पादक श्री पारसमल जी चण्डालिया की माताजी थीं।

सवाईमाधोपुर- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री रामकरण जी जैन पुत्र श्री

श्रीनारायण जी जैन का 8 अप्रेल 2011 को समाधि भावों के साथ मरण हो गया। आपके जीवन में नीति, प्रामाणिकता एवं उदारता आदि विविध गुण विद्यमान थे। आप नित्य सामायिक आराधन करते थे। आप ग्राम में पधारने वाली चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव तन-मन-धन से समर्पित रहे। आपने प्रबल इच्छा व सहयोग से ग्राम में स्थानक भवन का निर्माण भी करवाया। आपने कई वर्षों तक स्थानीय स्वाध्यायी सेवाएँ भी प्रदान कीं। आपके दामाद श्री लल्लूलाल जी जैन स्वाध्याय संघ बजरिया के संयोजक रहे। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री देवेन्द्रकुमार, डॉ. महावीर प्रसाद एवं चार पुत्रियों का भरा पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

समदड़ी- सुश्रावक श्री मोहनलाल जी छाजेड़ का 27 फरवरी 2011 को देहावसान हो गया। आप वीर पिता थे। आपकी एक पुत्री मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ में दीक्षित है तथा भतीजी ज्ञानगच्छ में दीक्षित हो जिनशासन की प्रभावना कर रही है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

21000/- जिनवाणी आजीवन स्तम्भ सदस्यता हेतु प्रत्येक

200 Shri Rajendra mal ji Daga, I.P. Extension, Delhi
201 Shri S. R. Choudhary ji, I.P. Extension, Delhi
202 Shri Vimalj ji Choudhary, I.P. Extension, Delhi
203 Dr. Sunil ji Choudhary, I.P. Extension, Delhi
204 Shri P. S. Surana ji, Mylapore, Chennai (T.N.)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13030 Shri Seth G. M. Jain Trust, Mumbai (M.H.)
13031 श्री प्रकाशचन्द जी लोढ़ा, जैसलपार्क, भाईन्दर (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
13032 श्री सुरेन्द्र जी जैन, ठाकुर विलेज, कांदिवली (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
13033 Shri Narpat ji Jain, Cobin Road, Mumbai (M.H.)
13034 श्री लखपतराज जी गुलगुलिया, बोरीवली (वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
13035 Shri Pukhraj C.Jain, Kandiwali(W),Mumbai(M.H.)
13036 Shri Sunil ji Tukliya,Ghatkopar(E), Mumbai (M.H.)
13037 Shri Mahendra M. Chordia, Mumbai (M.H.)
13038 Smt.Shilpi ji Jain,Supriya Sankul,Baner,Pune(M.H.)
13039 श्री विशाल कुमार जी जैन, सिद्धार्थ नगर, जगतपुरा रोड, जयपुर (राज.)
13040 श्री राजेशजी जैन,36 ए,एस.बी.बी.जे.बैंक के पास,सवाईमाधोपुर (राज.)
13041 Smt. Vandana ji Jain, Kilpauk, Chennai (T.N.)
13042 श्री कमलकुमार जी जैन, कठूमर रोड, लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर (राज.)
13043 Mrs. Mrisha ji Garg, Alipore, Kolkata (W.B.)
13044 श्री रमेशचन्द जी सिंघवी, सर्वधर्म मन्दिर के पास, अजमेर (राजस्थान)
13045 श्री लालूराम जी कुमावत, भण्डारी कॉलोनी, निमाज, पाली (राजस्थान)
13046 Shri Dharmi Chand ji, Chennai (T.N.)
13047 श्री दीपक कुमार जी जैन, मेहरा पाड़ा, बजाज खाना, कोटा (राजस्थान)
13048 श्री चन्द्रकान्त जी जैन, लिंक रोड, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13049 श्री कमलकुमार जी जैन, मंडी रोड, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13050 श्री रिखबचन्द जी कांकरिया, मुकाम पो. पड़ी-वैद्यनाथ, बीड़ (महा.)

50 सदस्य अर्द्धमूल्य योजना, श्री राजेन्द्र जी कटारिया, हैदराबाद (आ.प्र.) के सौजन्य से

13051 Shri Suresh Chand ji Daga, Hyderabad(A.P.)
13052 Shri Shanti Lal ji Makhana, Secunderabad (A.P.)
13053 Shri Dinesh Kumar ji Bhandari, Hyderabad (A.P.)
13054 Shri Gopilal ji Jain, Secunderabad (A.P.)
13055 Shri Mahaveer ji Bohra, Secunderabad (A.P.)

13056 Shri Goutam Chand ji Gadiya, Hyderabad (A.P.)
13057 Shri Ashok ji Khicha, Hyderabad (A.P.)
13058 Shri Prakash Chand ji Salot, Hyderabad (A.P.)
13059 Shri Anand ji Dungarwal, Hyderabad (A.P.)
13060 Shri Pukhraj ji Katariya, Hyderabad (A.P.)
13061 Shri Nitibala ji Ramawat, Hyderabad (A.P.)
13062 Shri Babu Lal ji Gundecha, Secunderabad (A.P.)
13063 Shri Dharmi Chand ji Bhandari, Hyderabad (A.P.)
13064 Shri Goutam Chand ji Kataria, Hyderabad (A.P.)
13065 Shri Babu Lal ji Jain, Hyderabad (A.P.)
13066 Shri Parasmal ji Bhandari, Hyderabad (A.P.)
13067 Shri Shanti Lal ji Jain, Secunderabad (A.P.)
13068 Shri Bhawar Lal ji Gandhi, Secunderabad(A.P.)
13069 Shri Rajendra ji Samdariya, Secunderabad (A.P.)
13070 Shri Daichand ji Jain, Secunderabad (A.P.)
13071 Shri Jitendra ji Nahar, Hyderabad (A.P.)
13072 Shri Ritesh ji Bohra, Hyderabad(A.P.)
13073 Shri Madanraj ji Jain, Hyderabad (A.P.)
13074 Shri Pawan ji Jain, Secunderabad (A.P.)
13075 Shri Vikash ji Mehta, Hyderabad (A.P.)
13076 Shri I. Suresh Chand ji Chopra, Hyderabad (A.P.)
13077 Shri G. K. Lodha ji, Aundh, Pune (M.H.)
13078 Smt. Damyanti Devi ji Bafna, Chennai (Tamilnadu)
13079 Shri U. C. Bhandari ji, Bangaluru (Karnataka)
13080 Shri Rajendra ji Kankaria, Hyderabad (A.P.)
13081 Shri Ramesh Chand ji Singhi, Secunderabad (A.P.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11000/- श्री अशोक कुमार जी कर्णावट, मुम्बई द्वारा सप्रेम भेंट।

3100/- श्री शांतिलाल जी, मुकेशकुमार जी, हेमन्तकुमार जी, रविन्द्रकुमारजी पींचा, मूल निवासी भोपालगढ़ हाल मुकाम जोधपुर, मुमुक्षु बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा की जैन भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में उनके परिवार की तरफ से सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमान् सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी धोका, मैसूर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के निमाज में पावन दर्शन, वन्दन व आचार्य भगवन्त के निमाज पधारकर बड़ी दीक्षा श्रीमुख से प्रदान करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती इन्द्राबाई जी, श्री कन्हैयालाल जी फूलफगर (निमाज), चित्तूर सुपुत्री सौ.कां. खुशी का शुभविवाह चि. पंकज सुपुत्र श्रीमती प्रेमाबाई श्री प्रकाशचन्द कर्णावट, तिंडीवणम (जसनगर) के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री मनोहरलाल जी बम्ब (निमाज), बैंगलुरु, चि. हितैष जी का शुभविवाह

सौ.कां. मयूरी जी सुपुत्री श्रीमान् बसंत जी सुराणा, जलगाँव, के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री नेमीचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी कटारिया, हैदराबाद, स्व. श्रीमती रजनीदेवी जी कटारिया धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी कटारिया का दिनांक 1 अप्रैल 2011 को संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री संदीप जी भण्डारी, फरीदाबाद द्वारा सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जवाहरलाल जी, लालचन्द जी मूथा, अहमदनगर, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर मेड़तासिटी में आचार्य भगवन्त के सपरिवार दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्र कुमार जी, हुलासचन्द जी, दिनेश कुमार जी, गजराज जी एवं महेश जी बेताला, इन्दौर, पूज्य पिताजी श्री प्रेमराज जी बेताला का स्वर्गारोहण दिनांक 18 मार्च, 2011 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2200/- श्रीमती कमलाबाई जी, श्री निर्मलकुमार जी, मनोहरलाल जी बम्ब (निमाज), बैंगलुरु, 1100/-रुपये परम पूज्य आचार्य भगवन्त के निमाज में पावन पदार्पण तथा बड़ी दीक्षा एवं होली चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में तथा 1100/- रुपये पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 73वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुमतिचन्द जी, सुनील कुमार जी, सुरेन्द्र जी, सुधीर जी, संदीप जी डागा, जयपुर, स्व. श्री कैलाशचन्द जी डागा की तृतीय पुण्यतिथि दिनांक 26 अप्रेल, 2011 के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री पुखराज जी भागचन्द जी पारख, जलगाँव, पूज्य आचार्य भगवन्त के सूर्यनगरी जोधपुर में पदार्पण पर दर्शन लाभ की खुशी में भेंट।

1000/- श्रीमती कंचन जी बापना धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलाल जी बापना, जोधपुर, हाल मुकाम कोलकाता, श्रीमान रतनलाल जी बापना का 21 मार्च, 2011 को स्वर्गगमन होने पर पावन स्मृति में भेंट।

501/- श्री गौतमचन्द जी मेहता, कोप्पल, श्री शान्तिलाल जी मेहता की पुण्यस्मृति में उनके परिवारजन की ओर से भेंट।

501/- श्री देवेन्द्र कुमार जी, डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन, सूरवाल-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री श्री रामकरण जी जैन का दिनांक 8 अप्रैल 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

501/- श्री रामबिलास जी, राधेश्याम जी जैन (बाबई वाले), कोटा, पूजनीय मातुश्री श्रीमती गुलाबबाई जी जैन का दिनांक 12 अप्रेल, 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी चण्डालिया, ब्यावर, पूज्य माताजी स्व. श्रीमती उगमबाई जी धर्मपत्नी श्री नाथूलाल जी चण्डालिया 'भादसोड़ा निवासी' की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री तेजमल जी, सुनील कुमार जी, अनिल कुमार जी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़ चि. तरुण जी मोदी के सी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2000/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुशील कुमार जी, आयुष कुमार जी डूँगरवाल (थाँवला), बैंगलुरु, 500/- रुपये सुपौत्र चि. आयुष कुमार जी जैन के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में, 500/- रुपये श्री सुशील कुमार जी डूँगरवाल की सिंगापुर में आई.टी. में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में, 500/- रुपये सुपुत्री सौ.कां. आरती जी का शुभ विवाह चि. श्री आशीष कुमार जी तातेड़ सुपुत्र श्री माँगीलाल जी तातेड़ मेड़तासिटी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में एवं 500/- रुपये परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के निमाज में पावन दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नवरत्नमल जी, ललित कुमार जी बाफणा (पिपाड़सिटी वाले), चेन्नई, परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं समस्त सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राजेन्द्र प्रसाद जी, मंजुला जी जैन, दुर्गापुरा-जयपुर, सुपुत्र चि. प्रज्वल जी जैन द्वारा के.ए.पी.वी. गवर्नमेन्ट मेडिकल कॉलेज, त्रिचुरापल्ली से एम.बी.बी.एस. फाइनल प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने एवं एक वर्ष की इन्टर्नशिप सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री हनुमान प्रसाद जी, गौतमचन्द जी (रोशनपुरा वाले), जयपुर, चि. महावीर का शुभविवाह सौ.कां. सन्ध्या जी के संग 19 फरवरी, 2011 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नेहनूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती गुणमाला जी जैन का दिनांक 6 फरवरी, 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री राजेन्द्र जी मुणोत, नसीराबाद, श्री निर्मल कुमार जी सुपुत्र श्री महेन्द्र सिंह मुणोत का 18 अप्रेल 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, सहायतार्थ।

3100/- श्री शांतिलाल जी, मुकेशकुमार जी, हेमन्तकुमार जी, रविन्द्रकुमारजी पींचा, मुल निवासी भोपालगढ़ हाल मुकाम जोधपुर, मुमुक्षु बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा की जैन भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में उनके परिवार की तरफ से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नेमीचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी कटारिया, हैदराबाद, स्व. श्रीमती रजनीदेवी जी कटारिया धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी कटारिया का दिनांक 1 अप्रैल 2011 को संथारापूर्वक महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री ज्ञानराज अंबानी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर, सहायतार्थ।

श्री जैन रत्न श्राविका मंडल, जयपुर को प्राप्त साभार

21000/- श्री केवलमल जी लोढ़ा, जयपुर, सुपौत्र चि. अंकित (सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकान्ता जी-श्री प्रमोद जी लोढ़ा) संग नेहा का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

21000/- श्री केवलमल जी लोढ़ा, जयपुर, सुपौत्र चि. विज्ञान (सुपुत्र श्रीमती पूर्णिमा जी-श्री विनोद जी लोढ़ा) संग पूर्वी का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार

25,000/- श्री चंपालाल जी मकाणा, दौड़बालापुर (कर्नाटक), पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु सप्रेम भेंट।

21,000/- श्री मोहनलाल जी, कैलाशचन्द जी देशलहरा, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश), पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

11,000/- श्री संजीव जी नाहर, नाहर लेस इंडस्ट्रीज, सूरत, द्वारा सप्रेम भेंट।

4,000/- श्री कुशलचन्द जी बाफना, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

4,000/- श्री सुरेशचन्द जी बाफना, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

4,000/- श्री दिलीप कुमार जी बाफना, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

4,000/- श्रीमती मोहिनी देवी जी बाफना, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

4,000/- श्रीमती मंजुदेवी जी बाफना, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

500/- सुश्री सिद्धी जी बाफना, जोधपुर, सहायतार्थ हेतु भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

3,72,000/- श्री नवरतनमल जी, विजयचन्द जी, प्रकाशचन्द जी कोठारी, जयपुर (राज.)।

24,000/- श्री बस्तीमल जी चोरडिया, चेन्नई (तमिलनाडु), श्रीमती उषा जी चोरडिया का वर्षीतप एवं श्री श्रेणिक कुमार जी चोरडिया के एकवर्षीय एकासन के उपलक्ष्य में भेंट।

24,000/- श्री सुरेश जी बोहरा, शिरपुर (आं.प्र.), अपने पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी बोहरा का 13 अक्टूबर 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री प्रभुदयाल जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)।

12,000/- श्रीमती सिरेकंवर जी मेहता, जोधपुर (राज.)।

12,000/- श्री सुरेश जी भण्डारी, बैंगलोर (कर्नाटक)।

12,000/- श्री रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)।

12,000/- श्री एम.एम. भण्डारी, जोधपुर (राज.)।

12,000/- श्री किरोड़ीमल जी उमरावमल जी सुराणा ट्रस्ट, चेन्नई, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 73 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री प्रकाशमल जी दुगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 73 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री रतनराज जी चौधरी, चेन्नई, चि. विकास एवं सौ. अमृता के विवाह के शुभ अवसर पर सप्रेम भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

वैशाख शुक्ला 13	रविवार	15.05.2011	उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 49 वां दीक्षा दिवस
वैशाख शुक्ला 14	सोमवार	16.05.2011	चतुर्दशी

वैशाख शुक्ला 15	मंगलवार	17.05.2011	पक्खी
ज्येष्ठ कृष्णा 5	रविवार	22.05.2011	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 21 वां आचार्य पदारोहण दिवस
ज्येष्ठ कृष्णा 6	सोमवार	23.05.2011	पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. की 228 वीं पुण्यतिथि
ज्येष्ठ कृष्णा 8	बुधवार	25.05.2011	अष्टमी
ज्येष्ठ कृष्णा 14	मंगलवार	31.05.2011	चतुर्दशी
ज्येष्ठ कृष्णा 30	बुधवार	01.06.2011	पक्खी
ज्येष्ठ शुक्ला 8	गुरुवार	09.06.2011	अष्टमी
ज्येष्ठ शुक्ला 14	मंगलवार	14.06.2011	चतुर्दशी, पूज्य रतनचन्द्र जी म.सा. की 166 वीं पुण्य तिथि
ज्येष्ठ शुक्ला 15	बुधवार	15.06.2011	पक्खी

पत्रिका की उत्कृष्ठता हेतु लेखकों से निवेदन

जिनवाणी मासिक पत्रिका की गुणवत्ता निरन्तर अभिवृद्ध होती रहे, एतदर्थ लेखकों एवं रचनाकारों से निवेदन है कि वे अपनी रचनाएँ एवं आलेख उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर बनाकर भिजवाने का श्रम करें। जिनवाणी पत्रिका के विविध स्तम्भों में प्रकाशित श्रेष्ठ लेखों एवं रचनाओं को पुरस्कृत किया जाता है। विगत तीन वर्षों से यह क्रम चल रहा है। शोधालेख भेजते समय प्रामाणिकता हेतु सन्दर्भ युक्त पाद टिप्पणों का पूर्ण उल्लेख आवश्यक है। आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों से युक्त आलेख, कविता, कथा आदि का स्वागत है। वैज्ञानिक आलेखों को तभी प्रकाशित किया जाता है जब उनकी पुष्टि/तुलना जैन धर्म-दर्शन से की गई हो। सद्गुणों के आधान, जीवन-व्यवहार के शोधन की प्रेरणा देने वाली रचनाएँ जिनवाणी में सदैव स्थान पाती हैं। नारी-स्तम्भ एवं युवास्तम्भ के लिए हमें श्रेष्ठ रचनाओं की प्रतीक्षा रहती है। बाल-स्तम्भ हेतु प्रेरक कथाओं की भी आवश्यकता रहती है।

जिनवाणी पत्रिका का अब तक जो स्तर उन्नत हुआ है, उसमें लेखकों एवं रचनाकारों का योगदान प्रशंसनीय है। आपकी रचनाएँ कदाचित् विलम्ब से प्रकाशित हो अथवा प्रकाशित न भी हो तो भी निराश न हों, अपितु आप अपना प्रयास जारी रखें। एक बार प्राप्त रचनाएँ लौटाना सम्भव नहीं हैं, अतः उनकी एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। यदि आप कम्प्यूटर से e-mail द्वारा अपनी रचनाएं भेज सकें तो इसे प्राथमिकता दें। जिनवाणी का E-mail पता है- jinvani@yahoo.co.in यदि हाथ से लिखकर भेजें तो सुवाच्य हस्तलेख हो।

आपकी रचना श्रेष्ठता का पुरस्कार प्राप्त करे, ऐसी शुभकामना है। विभिन्न स्तम्भों में 2100 रुपये से लेकर 5100 रुपये की राशि का पुरस्कार सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल सुराणा की ओर से देय है।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 25 अगस्त से 01 सितम्बर तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2011 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम....................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...

....

4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..

....

5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन......................................

....

6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...............................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..

....

10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679 फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279, 94145-69982

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल) 25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

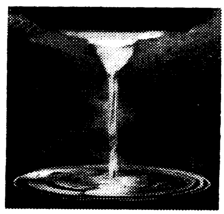

Electric Arc Furnace

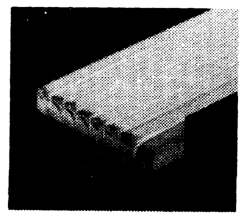

Billets

Rolling Mill

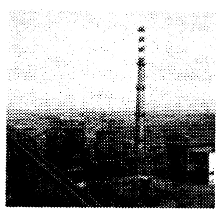

Captive Power Plant

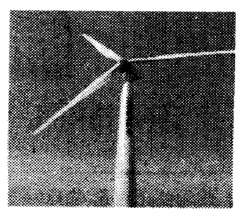

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद के तत्त्वाधान में 22 मई, 2011 से 5 जून, 2011 तक ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन बालक-बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु पोरवाल, पल्लीवाल एवं मारवाड़ सम्भाग के स्थानीय क्षेत्रों में किये जा रहे हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :- **जितेन्द्र डागा**, जयपुर (उपाध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद) मो.: 9829011589

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक / डाफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (9444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597)
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (9422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.Budhmal Bohra
No.-53, Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2011 ★ वैशाख, 2068

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।